कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा

(बम्बैक डायरी)



श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

मुंशी – मैथिलीका उच्चारण बहुत टेढ़ा है, हमारे सब कलाकार बाहर के हैं इसलिए तीस परसेंट भी अगर टोन आ जाता है तो काम निकाल लेना चाहिए ।

हरिमोहनझा– जँ शुद्ध उच्चारणे नहि होयतैक तँ काम निकल जायेगा, मगर मैथिलीका प्राणभी निकल जायेगा जो मुझे मंजूर नहीं है ।

अहाँ हमर संग 'चीट' करै छी, लिखल रहैत छैक किछु आ अहाँ पढ़ैत छी किच्छु । चारिए दिनमे अहाँ बम्बैया भऽ गेलहुँ । हम आदर्श मैथिली कन्याक चित्र उपस्थित करय चाहैत छी, अहाँ सब नट्टिन बनबऽ चाहैत छियनि ।

हम – यदि संवादमे टेम्पो नहि रहतैक तँ एहि सिक्वेंसक अर्थ की रहि जयतैक ?

हरिमोहनझा– सब टा अर्थ रहतैक । हम टेम्पो, टैक्सी किछु ने जानी, अहाँ सबकेँ काटि कऽ फेकि दियौक ।

फणिदा – फिल्म मैं बना रहा हूँ, वे नहीं । उनसे कुछ भी कम सेंटीमेंट मुझको नहीं है । वे कलाकार हैं तो मैं कलाकार को नचानेवाला हूँ ।

हरिमोहनझा– टुन टुन जी, अहाँ पटना आयल रही तँ एकटा कविता सुनौने रही– मैं जबसे आयी पटने...

टुन टुन – मेरा वजन लगा है घटने....

कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा

(बम्बैक डायरी)

आयुष्मान श्री शंकर भगवान

कें

सस्नेह

श्री अमर

१५-८-०३

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न गोष्ठी

दरभंगा

प्रकाशन वर्ष २००३

प्रति ३०० मात्र

आवरण : फिल्मक एक दृश्यमे लालकका कें गोड़ लगैत सी. सी. मिश्रा
अंतिम कवर : फिल्मक एक अन्य दृश्यमे गंभीर मुद्रामे लालकका

प्राप्ति स्थान
आदित्य सदन, मिश्रटोला
दरभंगा - ८४६००४
दूरभाष - ०६२७२-२२३४८५

प्रकाशक
नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा

सहयोग राशि - एक सय टाका मात्र

मुद्रक
प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा, दूरभाष - ०६२७२- २३५२०५

प्रथम पुण्य-तिथिक अवसर पर



(जन्म- मार्च १९२८, निधन २६.८.२००२)

फिल्ममे घटित घटना-चक्रकेँ सत्य मानि,

एकर बादे वानप्रस्थ ग्रहण कयनिहारि,

शुद्धान्तःकरण रखनिहारि एक नारी

ओ

हमर धर्मपत्नी

सौभाग्यवती हीरादेवी

केर

पुण्य-स्मृतिकेँ समर्पित

कहबाक अछि जे...

जखन हास्य सम्राट प्रो. हरिमोहनझा रचित अतिशय लोकप्रिय उपन्यास कन्यादानक कथावस्तुकें रजतपट पर उतारबाक समारम्भ भेल तँ ताहिक्रममे बम्बइक माया-छायानगरी धरि पहुँचबाक संयोग हमरो लागल। नाटकक अनेक मंचसँ सम्पृक्त रहलाक कारणें, मैथिलीक विकासमे फिल्मक योगदानसँ अधिक आशान्वित रहलाक कारणें तथा मातृभाषाहिक विकासकें जीवनक मुख्य लक्ष्य निर्धारित कऽ लेलाक कारणें उत्साहित भऽ ओहि दिस प्रवृत्त भेलहुँ।

ओहिठामक क्रिया-कलापसँ प्राप्त अनुभूतिकें किछु स्थायित्व देबाक विचारसँ दैनन्दिनक-जीवनचर्याकें संक्षेपमे लिपिबद्ध करैत रहलहुँ। हमर शिष्या डॉ० श्रीमतीकमलाचौधरी जखन १९८४मे मुजफ्फरपुरसँ 'स्वाती' नामक त्रैमासिक मैथिली पत्रिका प्रकाशित करऽ लगलीह तँ उक्त दैनन्दिनक जीवनचर्याकें धारावाही रूपें प्रकाशित करबा लै दुराग्रहपूर्वक लेलनि, किछु आरम्भिक अंश 'बम्बैक डायरी' नामे दू अंकमे छपबो कयलनि। किन्तु मैथिलीक अधिकतर पत्रिकाक जेहन जन्मकुण्डली रहलैक अछि तेहने स्वातीओक छलैक। स्वातीकें बन्द भऽ गेलाक बाद ईहो स्थगित रहि गेल।

एहि विधामे मैथिलीमे पुस्तकक अल्पते अछि, ताहू दृष्टिएँ पाठकक रुचिपर चढ़नि, से आशा कयल जा सकैछ। ओना मैथिलीमे पाठकोक अल्पता सर्वविदिते अछि। जे किछु छथिहो से ततेक कीर्ण-विकीर्ण, जनिका धरि प्रकाशित रचना पहुँचिए ने पबैत अछि। हँऽ एकटा विशिष्टता मैथिलीएमे अछि जे बिनु पढ़नहि आलोचना कयनिहारक सबसँ बेसी संख्या एही भाषामे देखबामे अबैत अछि। नीकसँ नीक कृतिक प्रसंग अपन रुचिक प्रतिकूल रहलापर अथवा पूर्वाग्रह-ग्रस्त रहलापर यदि क्यौ किछु टिप्पणीकऽ देलनि, तँ ताही आधार पर चारूकातसँ ओहिना ओकर अनघोल उठि जाइत अछि जेना बाधमे एक सियारक भुकलापर चारू भाग हुआ-हुआ सुनि पड़य लगैत अछि। प्रबुद्ध पाठक एतबे संकेतसँ बहुत किछु बूझि जयताह सेहो आशा कयल जा सकैछ।

सबसँ पहिने आशीर्वाद देबनि डॉ. आयुष्मती कमलाचौधरीकें एहि हेतु, जे ईहो एक साहित्यिक विधा भऽ सकैछ ताहिदिस ध्यान आकृष्ट कयलनि। तखन आशीर्वाद देबनि श्रीकेदारकाननकें, जे प्रकाशनार्थ तगेदा करैत रहलाह, जाहि कारणें गताल खातासँ एकरा बाहर करबाक प्रेरणा भेटल संगहि एहि हेतु डॉ. श्रीविश्वनाथजी सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह। तदुत्तर आशीर्वाद दौहित्र श्रीशंकरदेवकें देबनि जे एकरा प्रेसमे देबाक योग्य बनयबे कयलनि, संगहि कोनरूपें उपस्थापित कयल जाय ताहि लै उचित परामर्शो देलनि। अन्तमे साधुवादक संग आशीर्वाद श्रीफूलचन्द्रझा 'प्रवीण' आ श्रीविभूतिआनन्द कें देबनि जे असहनीय ताप लहरीक अछैतो प्रेसक गर्भसँ बाहर अनबामे अमूल्य सहयोग देलनि। प्रेसक कर्मचारीसँ लऽ अधिकारी धरि समयपर एकरा पुस्तकक आकार देबाक हेतु स्वतः धन्यवादक पात्र भऽ जाइत छथि। पाठक वृन्दक प्रति आभार 'बिझओ'क ताल्लुक रहतनि। पढ़ताह, प्रतिक्रिया व्यक्त करताह, आभार ग्रहण करैत जयताह। इतिशुभम्।

भाद्रपद कृष्ण तृतीया उपरान्त चतुर्थी संवत् २०६० — श्री 'अमर'
१५ अगस्त २००३ ई.

फिल्म लोकमे किछु दिन

बम्बइक ओ मधुर यात्रा नहि बिसरत । हमरा लोकनि (प्रो. श्रीहरिमोहनझा, हुनक पत्नी श्रीमतीसुभद्राझा, श्रीरत्नेशकुमारझा) १८ जुलाइक राति हाबड़ा-बम्बइ मेलसँ पटनासँ प्रस्थान कयलहुँ । एक तँ हम स्वयं हास्य-रसिक, दोसर संगमे हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू । ट्रेनक ओहि छत्तीस घंटामे विनोदक वर्षा होइत रहल से यदि संकलित कयल जाइत तँ अपूर्व हास्य-साहित्य प्रस्तुत भऽ जाइत ।

२० जुलाइकेँ दादर स्टेशन उतरि हम सब सोझे अन्धेरी स्थित प्रकाश स्टूडियो पहुँचलहुँ । कन्यादानक सेट तैयार भऽ रहल छलैक । सौराठमे लेल फोटोक आधार पर खढ़सँ छारल माँटिक घर बनाओल गेल छलैक । ओहिना आङन-ओसारा, तुलसीचौरा, ताखपर डिबिया, ढेउरल भीतपर कमलक फूल ओ दही-माँछक भार टङने भरिया, बूझि पड़ल अन्धेरी नहि, अन्धरा-ठाढ़ी हो । ओही माया-निर्मित मिथिलापुरीमे बैसि चाह पिबैत गेलहुँ ।

ओहिठाम निर्देशक श्रीफणिमजुमदार, पटकथालेखक श्रीनवेन्दुघोषकेँ देखलियनि। एक बंगमहिला पद्मादेवी जे लालकाकी बनलीह । एक गोदे माथ मुड़ौने ठाढ़ । ज्ञात भेल– ई झारखण्डीनाथ थिकाह । थोड़बे काल पहिने 'महूरत' विधि सम्पन्न भेल छलैक आ घोष साहेब मोहर्रिरक पार्ट कयने छलाह ।

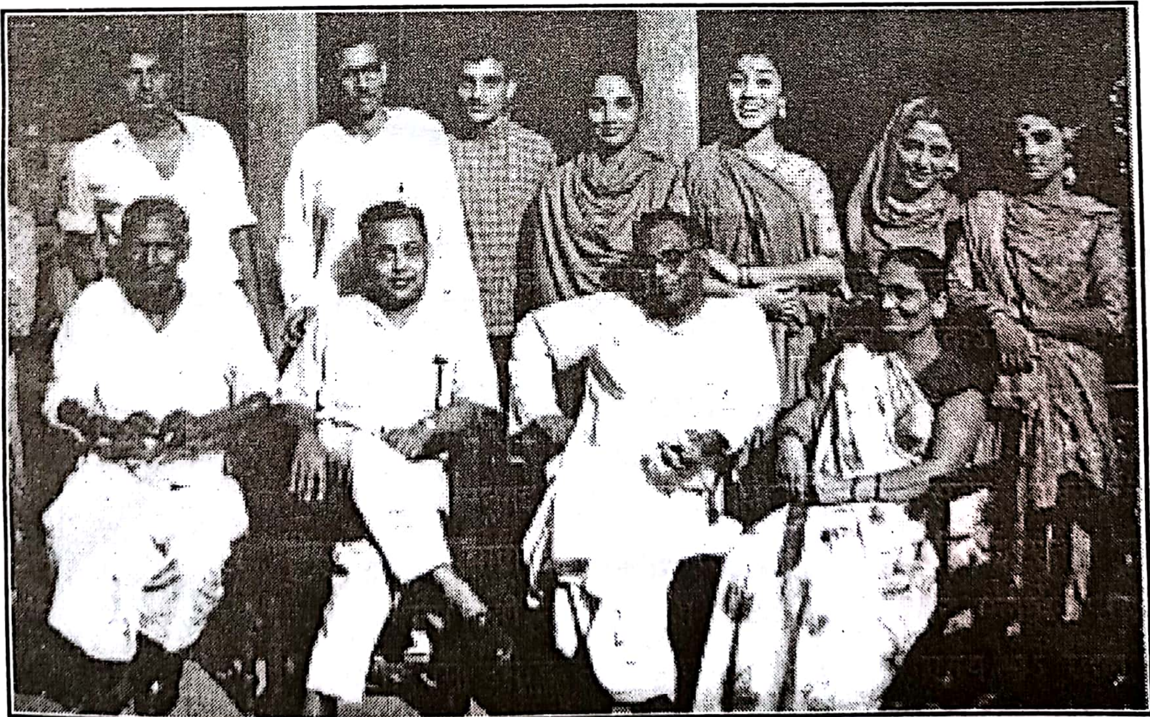
हमरा लोकनि रंगशालाक अतिथि छलहुँ । आवासक नामो छलै– 'एभरग्रीन' जतऽ सब किछु हरियरे लगैक । कलाकार लोकनिक संग रस-रंगमय वातावरणमे पते नहि लगैत छल जे कखन दिन बीतल आ राति आयल ।

दोसरदिन स्नान भोजनकऽ हम सब चित्रशाला अयलहुँ तँ शूटिंग चलि रहल छलैक । लालकाकी ओ ढुनमुनकाकी (आगराक दुलारीबाइ) सेटपर छलीह । श्रीमतीसुभद्राजी हुनका लोकनिकेँ मैथिल संस्कृतिक अनुरूप वेष-भूषा ठीक कऽ देलथिन । ओ लोकनि मेक-अप रूममे जा बाँहिवाला ब्लाउज उतारि कोंचावला साड़ी पहिरि अयलीह । तावत बड़का गामवाली (दिल्लीक चाँद उस्मानी) सेहो पहुँचि गेलीह । हम सब गोटेकेँ मैथिली संवाद सिखाबऽ लगलियनि । लगभग बीस वर्षसँ शिक्षकक काज कऽ रहल छी, एहन अपूर्व शिष्यागण जीवनमे नहि भेटल छलीह । ई लोकनि मैथिली बजबाक कोन कथा, कहियो सुननहु नहि छलीह । दुलारी पाठ रटऽ लगलीह– सैह तँ हमहूँ कहै छी । पद्मादेवी अभ्यास करऽ लगलीह अय कनेयाँ, सुनै छी ? चाँद उस्मानी कुहकऽ लगलीह– की कहै छथि ।

अन्य भाषा-भाषिणी सभक मुँहसँ मैथिली केहन प्रियगर लागि सकैत छैक तकर अभूतपूर्व अनुभव होवऽ लागल । एहन मधुर पाठशालामे के नहि गुरुअइ करय? एकतँ मैथिली स्वयं मधुर ताहूपर किन्नरी ओ गन्धर्वकन्याक कण्ठ ! सोनमे सुगन्धि! ध्वनि उच्चारण शुद्ध करयबामे भने भगीरथ प्रयत्न करऽ पड़य, परन्तु ताहूसँ जे आनन्द-गंगा बहराथि से मन-प्राणकेँ शीतल कऽ देथि ।

तेसर दिन हीरोइन (बम्बइक लता सिन्हा) सेहो मद्राससँ हवाइ जहाजसँ पहुँचलीह । लते जकाँ नमछरि, छरहरि, चंचला, स्टूडियोमे हमरा सभक बीचमे आबि बैसि गेलीह । परिचय कराओल गेलनि । प्रो. साहेब भूमिकाक मुख्य सारांश हुनका अंग्रेजीमे बुझा देलथिन जे 'इंटरवल' धरि अहाँ ग्राम्य बाला रहब, पश्चात् नगरबाला बनब । ओ खुशीसँ उछिलैत बजलीह– O.K. (बेस, बड़ बढ़ियाँ) तावत निर्देशक सोर पाड़लथिन । लता हरिणी जकाँ अपन संवाद हमरा पढ़ौला उत्तर ओ देखैत–देखैत खाँटी मैथिली कन्या बनि गेलीह– मायक डरेँ लता नहुएँ–नहुएँ आंगुरसँ आँचर खोंसैत बजलीह– भालसरीक फूल बीछऽ गेल छलिऐक । ओमहर कैमराक फ्लैश आ कट। लता दौड़लि पुन: प्रो. साहेब लग अबिते पुछलथिन– How I have done ? (हम केहन कयलहुँ ?) प्रो. साहेब वात्सल्य भावेँ पीठ ठोकैत कहलथिन– Excellent ! (अति उत्तम) ! तकरबाद बुच्ची दाइक एक सखी (पंजाबक मिसरत्ना) अयलीह ससुरबास बेटीक भूमिकामे । ऐँचैत–मैंचेत, लाजेँ सकुचैत, लालकाकीक पैर छूबि प्रणाम कयलथिन । लालकाकी पुछलथिन– की हय दाइ ! कहिया अयलीह ? ई छबिछटासँ लजाइत उत्तर देलथिन– काल्हिए सँझुका ट्रेनसँ । तदुत्तर बुच्ची दाइक बाँहि धयने चल गेलीह आ एक जौड़खट्टापर बैसि ताश खेलाय लगलीह । रत्ना पुछलथिन– कखन पत्ती फेकबैं ? 'बैं'क ध्वनि ठीक करबामे हमरा बारंबार बें–बें करऽ पड़ल, परन्तु अन्तमे पंजाबकन्या तहिना बाजऽ लगलीह जेना पंचोभ–कन्या होथि।

एहन आशातीत सफलता देखि हरिमोहनबाबू गद्‌गद भऽ गेलाह । हमरा लोकनिकेँ स्वप्नोमे विश्वास नहि छल जे ई बंबइया अभिनेत्री सब मिथिलाक मधुकुपिया सन मीठ मैथिली बाजि सकतीह । शूटिंग पश्चात् लेखक प्रबंधक ओ कलाकार लोकनिक ग्रूप फोटो भेल ।



कन्यादान फिल्मक एक बड़का आकर्षण ई जे भारतक विभिन्न भाषा मैथिलीक आङनमे एकत्र भऽ गेल अछि । हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, मगही, भोजपुरी आदिक

कलिका सब जेना मैथिलीक एक सूत्रमे गँथा कऽ माला बनि गेल हो। बम्बइक बेटी, बंगालक माय, गुजरात ओ महाराष्ट्रक बहिनपा, आगराक पितिआइनि, दिल्लीक भाउजि, आवेशरानी (मिसेजकपुर) आ पंजाबक मिस बिजली (खुरशीद) हैदराबाद युनिवर्सिटीक। प्राय: हिमाचलसँ कन्याकुमारी धरिक कलाकार। आ सबमे एहन पारस्परिक प्रेम, जेना एक्के आश्रमक, एक्के परिवारक होथि।

रंगशाला (स्टूडियो)मे मधुर हास-परिहास होइत रहैत छलैक। एक दिन टुनटुन पहुँचलीह। प्रो. साहेब कहलथिन– अहाँ पटना आयल रही तँ एकटा कविता सुनौने रही– 'मैं जबसे आई पटने' टुनटुन लप दऽ अगिलापाँती पकड़ि लेलथिन– 'मेरा वजन लगा है घटने' से गाबि-गाबि सुनाबऽ लगलथिन। पंक्ति-पंक्तिपर ठहाका पड़ऽ लागल। प्रो. साहेब कहलथिन– अहाँ पनिभरनीक पार्ट लेने छी, कनेक घैल लेने खसि पड़बैक तँ दर्शककेँ मजा आबि जयतनि। ओ नखरा करैत उत्तर देलथिन– आ हमर डाँड़ जे टूटि जायत से....... ? किछु आर दृष्टान्त–

प्रो. साहेबकेँ पटना जयबाक छलनि। बिदाक उपलक्ष्यमे एक थार गुलाबजामुन आयल। पद्मादेवी (लालकाकी) परसऽ लगलीह। प्रो. साहेबक आगाँ एक आँजुड़ उझीलि देलथिन। हम लाल काकाक भूमिकामे रही, तेँ परिहास कयलियनि– अय! अहाँकेँ पहिने हमरासँ शुरु करबाक चाही। ओहो तुरन्त उत्तर देलनि अहाँ तँ घरबैया छी, धैर्य राखू। ओमहर प्रो. साहेब भावावेशमे लता सिन्हाकेँ कहलथिन– बुच्ची दाइ! You are my creation take one sweet from me (अहाँ हमर सृष्टि थिकहुँ, एकटा मधुर हमरा हाथेँ लियऽ) लता तुरन्त हुनका हाथसँ गुलाब जामुन लऽ बजलीह– Then let us share half-half (तखन दूनू गोटे आधा-आधा बाँटि ली) ओ चट दऽ गुलाब- जामुनकेँ बीचसँ तोड़ि, आधा प्रो. साहेबक हाथमे दैत आधा अपना मुँहमे राखि लेलनि, शिशु जकाँ निश्छल, निर्मल, निर्विकार। ओहि प्रेमनगरीमे एहने माधुर्यक वृष्टि होइत छलैक। एहि प्रकारक स्नेहमय वातावरण अन्यत्र दुर्लभ।

चलबाक काल पुन: सामूहिक चित्र लेल गेल। विदा होयबाककाल प्रो. साहेब विनोदपूर्वक कहलनि– देखब अमरजी, ई बम्बइ कतहु अहाँक ठोप मेटाकऽ टोप नहि पहिरा देअय। हमहुँ हँसैत उत्तर देलियनि– यदि भगवतीक कृपा रहलनि तँ टोपे सबपर ठोपक छाप लगौने अयबनि।

आ सरिपहुँ ओहि अन्धेरीमे तेहन प्रकाश पहुँचि गेल जे प्रकाश-स्टूडियो मैथिलीमय भऽ गेल। आब ओहि छायालोकसँ अयलापर बूझि पड़ैत अछि जेना छायावादी कविताक श्यामल घटा ओ इन्द्रधनुषवला आकाशसँ पृथ्वी पर उतरि गेल होइ, जेना रोमांटिक पद्यसँ ठेठ गद्य पर आबि गेल होइ। **(मिथिलामिहिर १८ अक्टू. १९६४ ई.)**

●

मूल विषय पर अयबासँ पहिने ई संयोग कोना लागल सेहो कहि देब रुचिगरे होयत । तेँ हम ततहिसँ कहब आरम्भ करैत छी ।

हमर एक शिष्य छथि मिर्जापुर (राजनगरक) महन्थ श्रीमदनमोहनदास । यद्यपि छात्र जीवनमे हमरासँ प्रभावित नहि छलाह, प्रत्युत वर्गमे कड़ाइ रखबाक कारणेँ हमरासँ छीहे कटैत रहैत छलाह । किछु एहन संयोग भेल जे जखन ओ चेतन भऽ गेलाह तखन हमरा प्रति किछु आस्था बढ़लनि ।

ओ संयोग ई छल जे १९५७ ई.मे हम अपन एक खोपड़ी दरभंगामे ठाढ़ कयलहुँ। ओहिमे एक सम्बन्धी आर्थिक सहयोग देबाक आश्वासन देने रहथि । से अनबाक हेतु हम राजनगर स्टेशन पर उतरलहुँ । श्रीमदनमोहनदास सेहो ओही गाड़ीसँ उतरलाह । हुनका हेतु हुनकर हाथी स्टेशनपर उपस्थित छलनि । हमरासँ भेट भऽ गेला पर शिष्टाचारक बाद हमर गन्तव्य स्थान आ यात्राक उद्देश्यक जिज्ञासा कयलनि । हमरा राजनगर डाकघरसँ ओहि वचनबद्ध सम्बन्धीक पासबुकसँ टाका बाहर करबाक छल । दोसरे दिन ठाढ़ कयल खोपड़ीमे गृह-प्रवेशक दिन छल । दासजीकेँ ओही बाटेँ जयबाक छलनि । हुनक अतिशय आग्रहपर ओहि हाथीपर हमरो चढ़य पड़ल । ओ पहिने अपने स्थान पर लऽ गेलाह । यथावसर आतिथ्य कयलाक बाद ओही हाथीसँ जाय, डाकघरक काजकय भोजनोत्तर आपस जयबाक वचन हमरासँ लऽ लेलनि ।

डाकघर अयलहुँ । ओतय 'विथड्रॉल फॉर्म' परक हस्ताक्षरकेँ सन्दिग्ध कहि टाका देब अस्वीकार कऽ देलक । हम तँ आब हाथीपर सँ बुझू खसि पड़लहुँ । दासजीक स्थान पर घुरला उत्तर चित्त चिन्ताक्रान्त छल । डाकघरक घटना कहि चुकल छलियनि, तेँ पण्डितजीक प्रसिद्ध भोजन उत्तम दही, मेहीं धानक चूड़ा, मालभोग केरा, आ रंगविरंगक अँचारक सँचार छल, मुदा चिन्तेँ चंचल-चित्त रहलाक कारणेँ ओहिमे स्वाद नहि बुझना जाइत छल आ दासजी भोजन करयबामे तत्पर रहथि । भोजन कयल बलधकेल । जयनगरसँ गाड़ी शीघ्रे घुरैत छलैक । तेँ धड़फड़ कऽ बिदा भेलहुँ । चलैत काल दासजी विथड्रॉल फॉर्म पर जतबा टाका लिखल रहैक ततेक हमरा हाथमे दैत कहलनि– सुविधानुसार आपस कयल जयतैक, एहि हेतु चिन्ता नहि कयल जाइक। आब बुझूजे बिनु हाथीपर चढ़नहु हम हाथीपर चढ़ि गेलहुँ । ट्रेनमे जखन मालभोग

धानक चूड़ा आ मालभोग केराक मिश्रित ढेकार होअय तखन भोजनक स्वादक अनुभव करय लगलहुँ ।

अवधि तँ ततेक स्मरण नहि अछि, किन्तु किछुए मासक बाद हम टाका आपस करय गेलियनि तँ ओ कहलनि– अपने पहिल व्यक्ति छी जे पैंच टाका बिनु मङनहि देबऽ आयल छी । हमरातँ एहन-एहन लोकसँ भेट अछि जे मङलो उत्तर बहुतो गोटे पचाइए गेलाह । ओही क्रममे ओ कहलनि– जहिया हम स्कूलमे पढ़ैत रही तहिया अपने दऽ भगवानसँ प्रार्थना करियनि जे एहि मास्टरकेँ डिसमिस करा देथि । कारण अपनहिटाक डर होइत छल । आइ अनुभव करैत छी जे अपने ओहि स्कूलमे नहि रहितहुँ तँ जतबो जे किछु बोध भेल, सेहो नहि भेल रहैत ।

१९६४ ई.मे ओहि दासजीकेँ मैथिलीमे फिल्म बनयबाक रुचि उत्पन्न भेलनि। कोना की योजना छलनि से हमरा पता नहि छल, किन्तु एक दिन दासजी फिल्मक मुहूर्त्तक अवसर पर पटनाक हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवनमे उपस्थित होयबाक नोंत-हकार देबऽ अयलाह । जहिया ओ छात्र रहथि तहिया स्कूलक सरस्वती पूजाक अवसर पर १९४९ सँ १९५४ धरि पाँच-छओ गोट नाटकक मंचन अपना निर्देशनमे कराय चुकल छलहुँ आ अपनहु आन-आन मंचपर अभिनय कऽ चुकल छलहुँ । प्रायः दासजीकेँ एहीसँ प्रेरणा भेलनि जे मुहूर्त्तक अवसर पर हमहु उपस्थित रहियनि ।

फिल्मक शूटिंग कोना होइत छैक से बुझबाक-देखबाक उत्कण्ठा अपनहु मोनमे भेल । यातायात पर्यन्तक व्यवस्था दासजी कयलनि तेँ सहर्ष स्वीकृति दऽ देलियनि। मुहूर्त्तक अवसर पर नायक आ मुख्य आकर्षणक केन्द्र सिनेतारिका अजराद्वारा जे दू वाक्य बजाओल गेलैक ताहिमे मैथिलीक ध्वनि नहि छलैक । हम उपकरि कऽ ध्वनिकेँ शुद्ध करय कहलिऐक । तखनसँ दासजी हमरा सहयोग करबाक हेतु गछारि लेलनि । हम पूर्वमे उपकृत भेल छलहुँ । यक्ष-युधिष्ठिर संवादमे छैक– "किं चानर्घ्यं? यदवसरे दत्तम्" अवसर पर देल राशि, छोट हो वा पैघ, बहुत महत्त्वपूर्ण होइत अछि । गर्मी छुट्टी छलैक हम उच्चारण शुद्ध करबाक हेतु राजनगरमे समय देबऽ लगलियनि ।

एहीक्रममे कन्यादान फिल्म बनबाक निर्णय लेल गेलैक । आदरणीय हरिमोहन झाजी पटनासँ चिट्ठी लिखलनि । अन्यान्य बातक संग अन्तमे लिखलनि– हमरा विश्वास अछि जे अहाँ अपन अमूल्य समय अवश्य देब ।

हम उत्तर देलियनि– हम परिवारक भरण-पोषण समये बेचि कऽ करैत छी, तेँ अमूल्य समय देब संभव होयत ? हम एतय कहि देबऽ चाहैत छी जे श्रद्धेय हरिमोहन बाबूक अजस्र स्नेह हमरा भेटैत रहल आ ओहि महापुरुषक एहि असीम

कृपाक हेतु हम अपनाकेँ धन्य बुझैत रहलहुँ । कन्यादान फिल्ममे पटकथा लिखने छलाह नवेन्दु घोष जे मूलतः अङरेजीमे छल आ संवाद लिखने रहथि फणीश्वरनाथ रेणु जे विशुद्ध हिन्दीमे छल । निर्देशक छलाह श्रीफणिमजुमदार जे अधिकतर बंगला वा अङरेजीएमे बाजथि । सहायक कैमरा मैन केरलकेर ओ हिन्दीओ बाजय तँ से बुझबाक योग्य नहि हो । एही परिवेशमे हमरा मैथिली भाषा आ मिथिलाक संस्कृति विशेषज्ञक रूपमे सहयोग देबाक दायित्व देल गेल । हम १७-७-६४ कऽ स्कूलसँ छुट्टी लऽ पटना पहुँचलहुँ आ १८-७-६४ केँ बम्बैक हेतु प्रस्थान कयल ।

ओही दिनसँ आरम्भ कऽ जहिया धरि बम्बैमे रहलहुँ प्रतिदिन डायरी लिखैत गेलहुँ । आइ ओहि डायरीकेँ देखला उत्तर, जकरा ३९ वर्ष पूरि गेलैक, प्रतीत भेल जे मैथिली पाठकक समक्ष उपस्थित कयल जाय तँ मैथिली साहित्यमे नव विधा, जे अतिशय क्षीण स्थितिमे अछि, कनेक पुष्ट होयत । संगहि पाठकक हेतु मनोरंजक सेहो होयतनि ।

जेँ हेतु ई डायरी थिक तेँ एहिमे कल्पनाक कोनो आश्रय नहि लेल गेल अछि, जे सत्य घटना अछि ताहिपर कोनो आवरण नहि देल गेल अछि । कतोक प्रसंग एहन अछि जे किछु कटूक्ति सेहो लगैछ, परन्तु तकरो सबकेँ हम यथावत् उपस्थित करबाक धृष्टता कऽ रहल छी । सत्यक अपलाप नहि हो तेँ एहि उल्लेखक हेतु सुधी पाठक क्षमा करथि से निवेदन ।

१८.७.६४

हाबड़ा-बम्बै जनता अर्द्ध साप्ताहिक ट्रेनसँ बम्बैक हेतु प्रस्थान कयल । हमरा सन अल्प-वित्तक लोककेँ भारतक सबसँ पैघ श्रीसम्पन्न लक्ष्मीवानक महानगर धरि पहुँचब असम्भव नहि तँ दुर्घट अवश्य छल । ई कलाक अधिष्ठात्री भगवतीक अनुकम्पा आ श्रीहरिमोहन बाबू सदृश उदारमना साहित्यकारक स्नेहक फल थीक जे ई सुसंयोग लागल अछि । 'थ्रीटायर' मे वर्थ नं० ५७ सँ ६० धरि रिजर्व अछि । सपत्नीक श्रीहरिमोहनबाबू आ हमर शिष्य कबिलपुर निवासी श्रीरत्नेश संग छथि । व्यवस्थापक श्रीपरमानन्दजी एही गाड़ीमे कतहु अन्यत्र छथि । गाड़ीमे सहयात्री भेटलाह अछि श्रीहरिलाल पटेल, हिनक एक पुत्र रमणलाल पटेल आ पुत्री अरुणा पटेल सहित हिनक पत्नी सेहो छथिन । पटनासँ गाड़ी फुजैत अछि आ हमरा लोकनि अपन-अपन वर्थ पर जा कऽ सुति रहैत छी । मनहिमन सोचि रहल छी– 'समुद्रक दर्शन नहि भेल अछि, बम्बै समुद्रक कछेड़मे बसल अछि । श्रीसुभद्र मामाक लिखल 'प्रवास' नामक पोथीमे बम्बैक वर्णन भेल छनि' । ओकर एक अंश नवम वर्गक पाठ्य पुस्तकमे संकलित छनि, तकर स्मरण करैत निद्राभिभूत भऽ जाइत छी ।

१९.७.६४

आइ भरि दिन भरि राति एही गाड़ीमे बितयबाक अछि । प्रातः कृत्यकऽ जखन सब गोटे निवृत्त होइत छी तँ श्रीहरिमोहन बाबू कहैत छथि– आइ स्नान आ सन्ध्यावन्दन करबाक सुयोग नहि लागत । आइ पथि शूद्रवदाचरेत् तेँ जलपान हो सैह ठीक । हम श्रीदेवेन्द्र भाइक उल्लेख करैत कहैत छियनि– हमर देवेन्द्र भाइ कहैत छथिन 'जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः' तेँ जया अर्थात् चाहसँ प्रातराचमन भऽ जाय तखन जलपान होइत रहतैक । श्रीहरिमोहन बाबू देवेन्द्र भाइक परिचय जनबाक हेतु उत्सुक होइत छथि– के थिकाह ई अहाँक देवेन्द्र भाइ ? बड़ मनोरंजक व्यक्ति बुझना जाइत छथि । हम परिचय देलियनि जे रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयमे वेदक अध्यापक छथि । सामवेद आ यजुर्वेदमे स्वर्ण पदक प्राप्त कयनहि छथि संगहि राजनाथ पदक सेहो प्राप्त कयने छथि । हरिमोहनबाबू राजनाथ पदक की थिकैक से जिज्ञासा करैत छथि । हम स्पष्ट करैत छियनि जे बिहार संस्कृत एसोसिएशन सब शास्त्र मिलाय सर्वोच्च अंक प्राप्त कयनिहारकेँ म.म. रजेमिश्रक स्मृतिमे ई पदक दैत छलैक । तावत श्रीहरिलाल पटेलजी 'पॉट'मे आठ कप चाह लेऔने पहुँचि जाइत छथि आ हमरो लोकनिकेँ सम्मिलित होयबाक आग्रह करैत छथि । तखनसँ हमरा लोकनि चारि व्यक्तिक स्थान पर आठ व्यक्तिक पार्टीमे परिणत भऽ जाइत छी । पटेलजी थिकाह तँ गुजराती, मुदा मुंगेरमे हुनक तमाकूक कारवार चलैत छनि, तेँ बाजि नहि सकितो मैथिली बुझि जाइत छथिन । ताहि सँ अपेक्षा आरो बढ़ि जाइत अछि ।

किछु कालक बाद श्रीहरिमोहन बाबू अपन पत्नी आदरणीया श्रीमती सुभद्रा झाकेँ कहैत छथिन– अहाँ अपन भानुमतीक पैटारा आब खोलू ने । ओ एकटा बेंतक वास्केट बाहर करैत छथि ताहिमे रंग विरंगक निमकी, टिकरी, अँचार आदि भरल अछि। सबकेँ जलपान दैत छथिन । हँसैत, खेलाइत, गप्प करैत हमरा लोकनिक बाट कटि रहल अछि । स्टेशनक स्टेशन गाड़ी पार कयने जा रहल अछि, गाड़ीमे तेहन गति छैक जे स्टेशनक नाम पर्यन्त पढ़ल पार नहि लगैत अछि । मोन पड़ि गेल अछि अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर दुष्यन्तक उक्ति–

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत् ।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो-
र्न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्[1]।।

(जे देखबामे छोट लगैत छल सैह तुरत पैघ बुझाइत अछि, जे पहिने आधा पर कटल बुझाइत छल से पुनः जुटल लगैत अछि । स्वभावतः जे टेढ़ अछि से सोझ बुझि पड़ैत छल । रथक तीव्र गतिक कारणेँ क्षण-क्षणमे तेँ कोनो वस्तु ने आँखिसँ दूर रहैत अछि ने समीप रहि पबैत अछि ।)

रातिक ३ बजे पटेल परिवार भुसावलमे उतरैत गेलाह । उतरबाक काल हमरा लोकनिकें जगा देलनि आध घंटा पहिनहि । आइ भरि दिनुक सहयात्रामे तेहन आत्मीयता हमरा लोकनिकें भऽ गेल जे सभक आँखि सिमसिमा गेल । सद्व्यवहार दू हृदयकें ओहिना जोड़ि दैत छैक जेना काटल लहठीक मुँहकें कनेक रसौं देखाय लोक जोड़ि लैत अछि । श्रीहरिमोहन बाबूक हृदय कतेक जल्दी पिघलि जाइत छनि से सद्यः अनुभव भेल ओ बहुत कालधरि आँखिक कोर पोछैत रहलाह ।

२०.७.६४

बारह बजे दिनमे जा कऽ बम्बैक दादर स्टेशन पर उतरैत गेलहुँ । कल्याणसँ गाड़ीक गतिमे मन्दता अयलैक से अन्तमे घुसकुनिञा काटऽ लागल । जाहिकारणें डेढ़ घंटा विलम्बसँ गाड़ी पहुँचल छल । दू रातिसँ गाड़ीमे बितबैत अकर-दकर खाइत, स्नान नहि कयने चित्त आँट सन लगैत छल । बम्बै पहुँचला पर पेटमे प्राण आयल जे आब कतहु स्वस्थ चित्तें स्नान भोजन आदि करब, मुदा आहि रे वा ! पहिनेसँ स्टेशन पर प्रतीक्षा करैत कार हमरा लोकनिकें लेने सोझे अन्धेरीक प्रकाश स्टूडियोमे उतारि देलक । दादरसँ स्टूडियो अबैत-अबैत १४-१५ माइलक चक्कर पड़ैत छैक । आइ मुहूर्त्त, जकरा फिल्मिस्तानमे 'मुहूरत' कहैत छैक, थिकैक । हमरा लोकनिकें पहुँचबा सँ पहिने लग्न बीति जयबाक कारणें ओ विधि भऽ चुकल छलै । फिल्मक निर्देशक श्रीफणिमजुमदार, पटकथा लेखक श्रीनवेन्दु घोष चल गेल छलाह । स्टूडियोमे फिल्म निर्माता एच.एम. मुंशी, पद्मादेवी (लाल काकीक भूमिका कयनिहारि) गया निवासी व्रजकिशोरजी (झारखंडीनाथ) गोपाल (सी.सी. मिश्रा) आ महीधर, सहायक निर्देशक (गया निवासी श्रीकुमारझा, एम.एल.सी.क भातिज, (हिनकर विवाह भोज पड़ौल सिमरी भेल छनि) हिनके लोकनिसँ परिचय भऽ सकल ।

कतहु सुभ्यस्त होयबाक हेतु सभक मोन छटपट कऽ रहल छल । सबसँ आतुरता छल स्नान करबाक । मुंशीजी बहुत पिच्छड़ लोक बुझना जाइत अछि । सब बातमे 'अभी हो जाता है' कहनिहार, मुदा डेराक व्यवस्था कतहु नहि कयल छैक । स्टूडियो सँ सबकें पुनः कारमे बैसाय घुमबय लागल । गान्धीग्राममे समुद्रक प्रथम दर्शन भेल, भरि छावा पानिमे प्रवेशो कयल, किन्तु स्नान करबाक हेतु ७६ माइलक चक्कर कटैत हमरा लोकनिकें घुराकऽ पुनः स्टूडियोमे बैसाय देल गेल । श्रीहरिमोहन बाबू अतिशय क्रुद्ध भऽ उठलाह । यद्यपि भीतर-भीतर क्रोध हमरो कम नहि होइत छल, किन्तु तकरा व्यक्त करबाक स्थितिमे अपनाकें नहि पबैत छलहुँ । अन्ततोगत्वा श्रीहरिमोहन बाबूकें श्रीनवेन्दुघोषक डेरा पर आ हमरा आ रत्नेशकें अन्धेरीक कार्ल गेस्ट हाउसक १७ नं०क कोठलीमे राति कटबाक हेतु ७.३० मे स्थापित कयल गेल। ३.३०मे मेरिन ड्राइवमे पुरोहित होटलमे भोजन करबय लऽ गेल, किन्तु अपना लोकनिक

स्वादसँ सर्वथा भिन्न रहलाक कारणेँ एकदम अतृप्त रहि गेलहुँ । रातिमे दस बजे लगे पासक दोकानमे फ्रूट्स सलाद खाकऽ घुरैत काल 'नैहर भेल मोर सासुर' फिल्मक कैमरामैन श्रीशंकररावसँ भेट भऽ गेल । ओ बम्बैमे देखि चकित भऽ उठल । कहलक– क्या पण्डितजी ! आप बम्बई तक पहुँच गये ? फिलिममे मन रम गया क्या ? ओकरासँ अपन अयबाक कारणक प्रसंग गप्प भेल । एहिठाम ७.३० मे मुखान्धे होइत छैक जखन कि अपना सभक ओतय राति भऽ गेल रहैत छैक ।

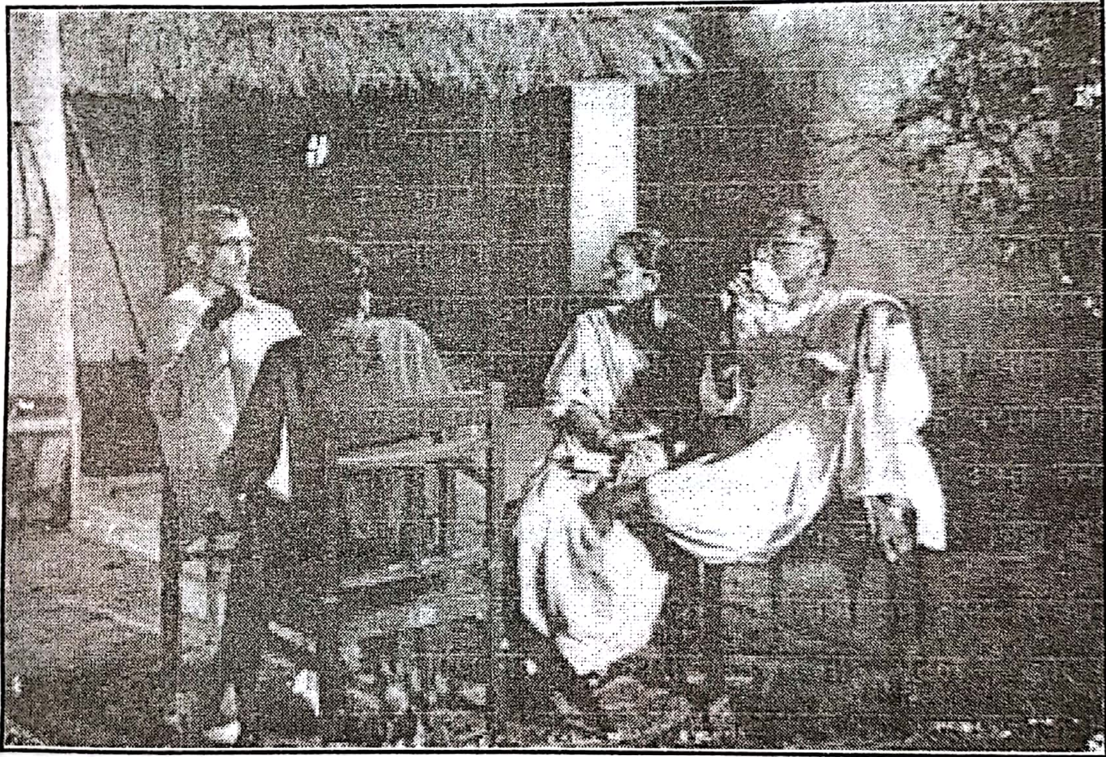
२१.७.६४

जहिना सूर्यास्त विलम्बसँ होइत छैक तहिना सूर्योदय सेहो, परन्तु हम अपन अभ्यासवश ५ बजे उठि नित्य कृत्यमे लागि गेलहुँ । एतेक सबेरे हमरा उठल देखि ओहिठामक नौकर चाकर कनेक विस्मय विमुग्ध छल । रातिएसँ मेघ रहि रहि कऽ झहरि जाइक । जेना माघमे कुहेस लगैत छैक तेना बाहर बुझना जाय । स्नानोत्तर आइ पुनः ब्राह्मणक कर्ममे यथा संभव घुरि आबय चाहैत छलहुँ । दिशाक कोनो ज्ञान नहि छल, तेँ आइ भोरे होटलक एक बूढ़ नौकरसँ पुछलिऐक– पूरब कौन है ? ओ मुँह तकैत रहल । हमरा बुझना गेल जे प्रायः ऊँचे सुनैत छैक तेँ कनेक जोरसँ कहलिऐक– पूरब किधर पड़ता है ? ओ उत्तर देलक– क्या पूरब ? फेर कहलिऐक– किरन किधर फूटती है ? पुनः जोरसँ कहलिऐक तँ खटखटा उठल– मैं बएरा नईं ऊँ, इतने जोर से क्यो बोलते अओ ? फेर कहलिऐक– किरन किधर फूटती है ? उत्तर देलक– मैं नईं समझताजी ! फेर वाक्य बदलि पुछलिऐक– अजी ! सूरज किधर निकलता है ? उत्तरमे आङुरसँ एक दिस देखबैत बाजल– शायद इस तरफ, क्यों भजन-वजन करते अओ क्या ? हम कहलिऐक– हाँ जी ! ओ पुनः कहलक– मैं यआँका रैने वाला नईं ऊँ, देहलीका रैनेवालाऊँ, मुझे ठीक ठीक पता नईं । हम पुछलिऐक– कितने दिनों से यहाँ रहते हो ? सिरफ पन्द्रै साल से । हम फेर कहलिऐक पन्द्रह सालसे रहते हो, सूरज किधर निकलता है, इसका पता नही है ? कहलक– मै पण्डत थोड़े ऊँ, मुझे क्या जुरूरत ? एवं क्रमे हम तीन व्यक्तिसँ जिज्ञासा कयलिऐक, किन्तु एको गोटे नहि कहलक । सभक उत्तर एके छलैक– मुझे क्या जरूरत ? किसी तरफ सूरज निकले। हमरा आजुक नागरिक जीवनक व्यस्तता देखि जेना माथ चनकि उठल । कोनहु मुहेँ बैसि अपन दैनिक कृत्य कऽ लेलहुँ ।

१०.४५मे मुशीजीक डलिवाह श्रीपरमानन्दजी अयलाह । श्रीहरिमोहन बाबूसँ भेट करय श्रीनवेन्दु घोषक डेरापर गेलहुँ जे एहि ठामसँ २०-२२ कीलोमीटर होयतनि। श्रीरत्नेशकेँ स्टुडियो पठा देल गेलनि । फिल्मक भाषा आ मिथिलाक विधि-व्यवहारक प्रसंग डेढ़ बजे धरि दूनू गोटेमे बहसा-बहसी होइत रहलनि । हम साक्षीक रूपमे बैसल सब सुनैत रहलहुँ ।

नवेन्दुदा (युनिटक प्रत्येक सदस्य हिनका नवेन्दु दा सैह कहैत छनि) भुट्टे खूटक लोक, पिण्डश्यामवर्ण, मृदुभाषी, सहृदय आ यथासंभव समन्वयक पक्षपाती बुझयलाह । हमर कोनो खास परिचय हिनका नहि देल गेलनि, केवल शिष्टाचारमे घरहिमे बनल किछु नमकीन आ चाह हमरो भेटल ।

श्रीहरिमोहन बाबूक हेतु खार स्टेशन लग एभरग्रीन होटलक कोठली नं० १८ लेल गेलनि अछि । ओतय जयबाक पथक्रममे उजाला होटलमे २ बजे सब गोटे भोजन करय पहुँचलहुँ, मुदा तीमने-तरकारी सभक तेहन स्वाद लगैत अछि जे ककरो रुचि पर नहि चढ़ैत अछि । अन्ततः थोड़ेक कऽ दही लेल गेल आ दही भात खाइत गेलहुँ। होटलक आड्वाल देखि चकबिदोड़ लागि गेल, किन्तु भोजन भेटलाक बाद 'ऊपरसँ फीटफाट, भीतर मोकामाघाट' कहबी मोन पड़ि गेल ।



एभरग्रीन होटलमे हमरा लोकनिकेँ कारसँ उझिलि श्रीपरमानन्दजी अपन धन्धामे चल गेलाह । (अपन-अपन काजकेँ लोक एहिठाम अधिकतर धन्धा कहैत छैक, अपना सभक ओहिठाम काज-धन्धा शब्द प्रचलित अछि ।) ओहिठाम स्थानाभावक कारणेँ विश्राम नहि कऽ सकैत छलहुँ, तेँ एकसरे अन्धेरी बिदा भेलहुँ। एहिठाम यातायातक बड़ अधिक सुविधा बुझना जाइत अछि । अपना सभक ओतय जेना रिक्शा सर्वसाधारण छैक तेना एहि ठाम टैक्सी, किन्तु जनसामान्य स्थानीय रेलसँ जे बिजलीपर चलैत छैक आ ३, ५, ९, ११, १३ मिनटपर अबैत जाइत रहैत छैक, कोनो स्टेशन पर एक मिनटसँ अधिक नहि अँटकैत छैक, यात्रा करैत अछि, कारण खूब सस्त आ द्रुतगामी सवारी थिकैक । अन्धेरी उतरि साँझ होइत-होइत एकसरे प्रकाश स्टुडियोक पुछारि करैत

ओतय पहुँचलहुँ । मुंशीजी ओतहि छलाह । काल्हि एहि महानगरमे पैर देलहुँ अछि । जतय गेलहुँ से टैक्सीसँ । कोन पूब, कोन पच्छिम तकरो ज्ञान नहि भऽ सकल अछि । तखन जँ क्यौ मार्ग दर्शक संग नहि रहत तँ कखन कतय भुतिया जायब तकर ठेकान नहि । मुंशीजीकेँ कहलियनि तँ खोंखिया उठलाह । हम अपनहुँ तड़ङाह लोक छी, झझकारि कऽ ककरो बाजब सह्य नहि होइत अछि । परिणामतः मुंशीजीसँ गरमा-गरमी भऽ गेल ।

एहिठाम दोसर कैमरा मैन, केरल निवासी श्रीबासूसँ परिचय भेल । आइ भरि दिन रहि-रहि कऽ बरखा होइत रहलैक । ई बात पटनेमे कहि देल गेल छल, तेँ बरसाती कीनि लेने छी । यदि ई नहि रहैत तँ कतय कखन भीजि जइतहुँ से बूझब कठिन ।

आइ मुंशीजी अपना संग चाँद उस्मानी (बड़का गाँववाली) सँ ९ बजे रातिमे भेट करबाबऽ लऽ गेलाह । ओकरा कहलथिन– यही आपलोगों को मैथिली डायलाग सिखाने के लिए दरभंगा से बुलाये गये हैं । नमस्कार पातक बाद तुरन्त ओतयसँ टुनटुन (झुनियाँ माय)क ओतय लऽ गेलाह । ओ डेरा पर नहि छलि । तखन लता सिन्हा (बुच्ची दाइ)क डेरा पर लऽ गेलाह । ओहो नहि छलि । अन्तमे श्रीहरिमोहन बाबूक डेरापर अबैत गेलहुँ । मुंशीजीक संग उच्चारणक प्रसंग बड़ीकाल धरि विवाद होइत रहलनि । मुंशीजी कहैत छलथिन जे– मैथिली का उच्चारण बहुत टेढ़ा है, हमारे सब कलाकार बाहर के हैं, इसलिए तीस परसेंट भी अगर टोन आ जाता है तो हमें मान लेना चाहिए और काम निकाल लेना चाहिए । श्रीहरिमोहन बाबू अड़ल रहलाह जे शुद्ध उच्चारणे नहि होयतैक तखन-काम निकल जाएगा, मगर मैथिली का प्राणभी निकल जायेगा, सो मुझे मंजूर नही है । एक दिन के बदले तीन दिन लगे, मगर उच्चारण शुद्ध होना चाहिए । हम कहलियनि- मुंशीजी तीस प्रतिशत शुद्ध कहैत छथि जे थर्ड क्लासक उत्तीर्णांक भेल, अपने शतप्रतिशत कहैत छिऐक जे सर्वथा असम्भव छैक, अतः साठि प्रतिशतमे अपनहु लोकनि प्रथम श्रेणी मानैत छिऐक, ततबा मानि लेल जाय। मुंशीजीकेँ कहलियनि– जब आपने प्रथम श्रेणीके कथाकारकी कहानी ली है तो फिल्म भी प्रथम श्रेणीका होना चाहिए । मैं अपनेतई पूरा परिश्रम करूंगा, क्योंकि इस फिल्मका अपना ऐतिहासिक महत्त्व होगा । श्रीहरिमोहन बाबू एहिपर मानि गेलाह। हमरा एहन प्रतीत होइत अछि जे गयावालकेँ बेसी प्रश्रय देल जाइत छैक । १२ बजे रातिमे घुमैत डेरा पहुँचलहुँ । आइ कतेको ठाम मुनिगा पातक मुट्ठा आ अरिकोंछक बनल लोढ़ा बिकाइत देखलिऐक ।

२२.७.६४

आइ दू बजे दिनसँ लालककाक घरवाला अंशक शूटिंग आरम्भ होयत तेँ नवेन्दुदा १०.३० मे स्टूडियो पहुँचय कहने छलाह, तेँ सबेर सकाल तैयार भऽ पहुँचि गेलहुँ । एहि

फिल्मक डाइरेक्टर श्रीफणिमजुमदारसँ एखन धरि परिचय नहि भेल अछि। दूनू गोटे दोसर सिक्वेन्स पर विचार करय लगलहुँ। सब गड़बड़ लागल। नवेन्दुदा सहमत छलाह। संवाद बड़ शिथिल छलैक। सबकेँ काटिकूटि नव ढंगेँ लिखलहुँ।

एही मध्य एक व्यक्ति कारसँ उतरि भीतर अयलाह। नवेन्दुदा हुनकासँ १५ मिनट गप्प कऽ घुरलाह आ चारूकात फोन कऽ कलाकार लोकनिकेँ अयबासँ मना कऽ देल गेलनि। ओ व्यक्ति आध घंटाक बाद पुनः अपन कार लऽ चल गेलाह। पछाति पुछारि कयला पर नवेन्दुदासँ ज्ञात भेल जे यैह एहि फिल्मक डाइरेक्टर थिकाह। ३ बजे धरि काज करैत एहि सिक्वेन्सकेँ समाप्त कयल।

डेरा आबि असोथकित भऽ पड़ल छलहुँ तावत श्री के.जी. गोस्वामी भेट देलनि। हिनकर विवाह लहेरियासरायक स्वीट होमक संचालकक ओहि ठाम छनि। बम्बै बिदा होयबासँ पहिने स्वीटहोममे चर्चा कयने छलियनि तँ ओ पाँच कीलो सुक्खा मधुर सनेस संग कऽ देलनि आ एक पोस्टकार्डमे हुनकर पता आ हमर परिचय लिखि हमरा संग कऽ देलनि। बम्बै पहुँचि हम अपन पता ठेकाना लिखि खसा देने छलियनि, ताही पतापर आइ ई भेट करय पहुँचल छलाह। ओ ततेक भद्र लोक जे एहि ठामक असुविधा देखि अपना डेरापर चलि रहबाक आग्रह करय लगलाह। हमरा संग श्रीरत्नेश सेहो छथि। एहि ठाम स्थानक संकीर्णता छैक से प्रत्यक्षदर्शीए अनुभव कऽ सकैत अछि। अतः हिनका प्रति आभार व्यक्त करैत, यदि बेसी कष्ट होयत तँ अवश्य चल आयब से कहि हिनका मनौलहुँ। मधुरमे सँ एकटा उठाकऽ लऽ लेलनि आ कहलनि जे बाल बच्चा एखन एतय नहि अछि, अपने टूर पर रहैत छी, तेँ हम मधुर लऽ जाकऽ की करब। अहाँ परदेशमे छी, एकर उपयोग अहीं करब।

गोस्वामीजीकेँ बिदाकऽ हम श्रीउदयभानुसिंहक उदेशमे वान्द्रा बिदा भऽ गेलहुँ। हुनक डेरा ९१, चिंच पोकली रोडमे छनि। वान्द्रा स्टेशन उतरि पुछारि करैत गेलहुँ। लोक कहय आगे गलीमे मुड़ जाइए। हम चारूभाग घूमि आबी किन्तु गली कतहु देखबे ने करिऐक। वस्तुतः एहिठाम जकरा गली कहैत छैक सेहो सब दरभंगाक मुख्य सड़कसँ चाकर छैक। थाकि हारि कऽ आइ घूरि अयलहुँ।

२३.७.६४

९.३०मे स्टूडिओ पहुँचि गेलहुँ। आइ श्रीहरिमोहनबाबू सेहो पहुँचलाह। १० बजेमे डाइरेक्टर श्रीफणि मजुमदार सेहो आबि गेलाह। श्रीहरिमोहनबाबू हमर परिचय करबैत कहलथिन– ओना तँ हिनका मैथिली भाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण ओ मिथिलाक विधि-व्यवहारक उचितरूपेँ उपस्थापन हो ताहि हेतु अनलियनि अछि, मुदा हमरा विश्वास अछि जे कोनो तरहक काज, जे अनकासँ नहि होयत से, ई कऽ सकैत

छथि, लेखन, वाचन, अभिनयधरि जँ चाहब तँ ई कऽ देताह । आइ हमरा श्रीफणिमजुमदारसँ परिचय भेल । ई 'फणिदा' नामसँ सम्बोधित होइत छथि ।

आइ दोसर सिक्वेंस पर विमर्श आरम्भ भेल । फणिदा, नवेन्दुदा दूनू गोटे एक पक्ष आ श्रीहरिमोहनबाबू एकदम विपक्ष । हिनक कहब जे कन्यादानमे घटित घटनाकेँ तोड़ल-मरोड़ल नहि जाय । ओ दूनू गोटे 'टेम्पो' अनबाक हेतु 'पटकथा' लेखककेँ स्वतन्त्रता रहैत छैक । कथाकारकेँ ओहिमे हस्तक्षेप करबाक अधिकार नहि छैक । गरमागरम बहसमे सब उठि गेलाह । फणिदा हमरा साँझमे समय देबाक ड्यूटी दऽ देलनि ।

२ सँ ६ बजे धरिक समय भेटि गेल । तावत श्रीके.जी. गोस्वामी आबि गेलाह, बाटेबाट गप्प करैत ट्रेनसँ वान्द्रा स्टेशन गेलहुँ । ओहिठामसँ दू फर्लांग चिंचपोकली रोड ९१ पहुँचि गेलहुँ । श्रीउदयभानुसिंह बम्बैमे हमरा देखि चकित रहि गेलाह जे ई कोना एहि ठाम ? ध्यातव्यजे 'ममता गाबय गीत'मे जमीन्दारक भूमिकामे यैह छथि, तेँ राजनगरमे हिनकासँ परिचय भेल छल । अपन अयबाक उद्देश्य कहलियनि । मैथिलीमे दोसरो फिल्म बनब आरम्भ भऽ गेल से जानि थोड़ेक सन्तोष आ थोड़ेक चिन्ताभाव दूनू देखि पड़ल, किन्तु एहि प्रसंग कोनो खोध-वेध नहि कयलियनि । मनहिमन अनुमान कयल जे सन्तोष एहि हेतु भेल होयतनि जे हमरा लोकनि फिल्म निर्माणक दिशामे अग्रसर भेलहुँ तँ आनो-आनो लोक एहिसँ प्रोत्साहित भेल अछि आ चिन्ता एहि द्वारेँ भेल होयतनि जे मैथिलीक प्रथम फिल्म बनयबाक जे ऐतिहासिक महत्त्व छैक ताहिमे कदाचित पछुआ ने जाइ । अस्तु, हमरा ६ बजे पुनः स्टूडियो पहुँचि जयबाक छल तेँ शीघ्रतामे जलपान चाह कऽ बिदा भऽ गेलहुँ ।

साँझमे फणिदा आ नवेन्दुदाक संग तेसर सिक्वेंस पर काज करय लगलहुँ से ११ बाजि गेल । अन्धेरीमे भोजन नहि भेटल तँ खार गेलहुँ । दोकान सब बन्द भऽ गेल छलैक । बनारसी स्वीटमार्ट बन्द भऽ रहल छलैक । हमरा देखि ओ पुनः व्यवस्था कयलक । ई बनारसक थीक, हम पड़ोसक बिहारक निवासी थिकहुँ तेँ आत्मीयता भऽ गेल छैक । एहिठाम पवित्रता बहुत बेसी रहैत छैक आ रुचिक अनुकूल भोजन भेटि जाइत अछि । कार्ल गेस्ट हाउस घुरैत घुरैत १२.१५ बाजि गेल, मुदा बम्बैक हेतु ई ततेक अबेर नहि कहल जाइत छैक ।

आइ फणिदासँ खूब गप्प भेल । ओ कहलनि– जिस माफिक प्रो. झाको खुद को बचानेकी चिन्ता है उसी माफिक मुझको अपने बचाव की चिन्ता करनी पड़ती है। फिल्म मैं बना रहा हूँ, वे नहीं । उनसे कुछ भी कम संेटीमेंट मुझको नहीं है । वे कलाकार हैं तो मैं भी कलाकारको नचानेवाला हूँ । मैं अपनी रीतिके विरुद्ध नहीं जा सकता हूँ ।

आइ रमानन्द तिवारी, पद्मा देवी, दुलारीबाइ, टुनटुन आदिक काज छलैक । टुनटुनक काज हमरा एको रत्ती पसिन्न नहि, ताहि पर ओकर नखड़ा आ छूटल मुँह देखि क्षुब्ध रहि गेलहुँ । तिवारीजी मुँह बनबिते रहि गेलाह । मैथिली बाजब अबूह बुझाइत छनि । वान्द्रासँ घुरतीमे अन्धेरी उतरि प्रकाश स्टूडियो दिस जाइत छलहुँ तँ एक बनारसीसँ भेट भऽ गेल । ओ हमर धोती-तौनी, चानन-ठोप देखिकऽ दूरेसँ सोर कयलक– ओ गुरुजी !, ओ शास्त्रीजी ! हम किएक ध्यान देबैक ? ओ दौड़िकऽ लग आयल आ बाजल प्रणाम शास्त्री जी ! हम अकचकयलहुँ, पुछलिऐक– आपका परिचय ? अरे ! मुझे लालबाबूके नाम से पूरा बम्बई जानता है । क्या तुम बनारस से आबत हौ ?

नहीं जी, मैं मिथिलासे आया हूँ । भीतरे भीतर सशंकितो भऽ उठलहुँ । ओ दोसर तेसर प्रश्न करैत रहल–

'यहाँ क्या करत हौ ?'

'एक मैथिली फिल्म में काम करने आया हूँ ।

'फिलिम में ? फिलिममे भला तुम क्या करत हौ गुरुजी ?'

'डायलॉग डाइरेक्टर का ।'

'अरे ! ये डायलॉग डाइरेक्टर का कैसा काम है ?'

एक्टरोंको अपनी भाषा, जिसमें फिल्म बन रही है, वह भाषा बोलना सिखाता हूँ ।

'तुम और फिलिम में काम ? लगत हौ पूरे शास्त्रीजी, हौ गुरु, फिर यहाँ 'फिलिम मे कइसे आय पड़ूयौ ? हियौं चन्दन-टीका लगावत हौ ?'

'क्यों, यहाँ चन्दन टीका पर प्रतिबन्ध है क्या ?'

'नाही जी, मगर ई बम्बई है, बम्बई । अच्छा हमहू के किसी फिलिम में केहू किसीमके काममें लगाय दऽ ।'

'हम तो मैथिली फिल्ममें काम करते हैं भाई ।'

'अच्छा यह तो बताबऽ कि सिरिफ एक्टर को सिखावत हौ कि एक्ट्रेस सब को भी ?'

'एक्टर, एक्ट्रेस सब हैं ।'

'एक्ट्रेस कौन कौन है ?'

हमरा अबेर भऽ रहल छल आ सशंकित सेहो छलहुँ तेँ कहलिऐक 'मैं तो अभी आया ही हूँ। सब से मेरा परिचय भी अभी नहीं हुआ है।'

'अच्छा, डाइरेक्टर तुम्हारे फिलिमके कौन हैं ?

'फणिमजुमदार।'

'बंगाली डाइरेक्टर और मैथिली फिलिम ? ओ गुम रहल, हम चलि देलहुँ।

२४.७.६४

आइ ११ बजे सेट पर जयबाक छल, किन्तु राति बेसी अबेर कऽ सुतलाक कारणेँ उठबामे विलम्ब भऽ गेल, बाथरूम भेटबामे सेहो विलम्ब भेल, तेँ जल्दी-जल्दी तैयार भेलहुँ। श्रीहरिमोहनबाबूसँ भेट करबाक हेतु खार जयबाक छल। बिदा होयब तावत मिथिला मण्डलक मंत्री श्रीगोविन्दझा आबि गेलाह। हुनकासँ शिष्टाचार समाप्त प्राय भेल, तावत श्रीसुरेश सिन्हा, भूतपूर्व छात्र श्रीमहेशजीक अनुज, जे अपराजिता नामक फिल्ममे काज करबाक हेतु पहिनेसँ बम्बैमे अछि, पहुँचि गेल। अपना लोकसँ भेट भेला उत्तर जहिना हमरा आनन्द भेल तहिना श्रीसुरेशकेँ सेहो हमरासँ भेट भेला पर प्रसन्नता भेलैक।

'अपराजिता'केँ समुचित 'फिनान्स' नहि भेटलाक कारणेँ एखन धरि कोनो प्रगतिनहि भेलैक अछि। श्रीसुरेशसँ ज्ञात भेल जे एहिठाम फिल्मिस्तानमे परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, जातिवाद, प्रान्तवाद, बसिलाक धार आदि प्रचण्डरूप धारण कयने रहैत छैक। एहन वैषम्य होयतैक तकर थोड़बो पूर्वानुमान नहि छल। ई गप्प करिते छलहुँ तावत श्री के.जी. गोस्वामी आबि गेलाह। फलतः अन्धेरीए सँ १०.३० मे बिदा भऽ सकलहुँ। गोस्वामीजी जे मधुर छोड़ि देलनि, ताहिमे सँ अपना देशक जे भेटैत छथि तनिका सबकेँ एकटा कऽ सनेसमे देल करैत छियनि ई कहि जे मिथिलाक घास खाय जे गाय दूध देने अछि ताहि दूधसँ बनल ई मधुर थीक।

फस्ट सिक्वेंस पर श्रीहरिमोहन बाबूसँ गप्प करब परमावश्यक छल। श्रीगोविन्द बाबू सेहो संग छलाह। खार पहुँचलहुँ। श्रीहरिमोहन बाबूकेँ आइ कोनो मैथिली संस्थासँ फोन आयल छलनि, मुदा ओ बहुत उद्विग्न छलाह। विचार विमर्श आरम्भ भेल तँ आरो गरमा गेलाह। हिनकर एहनो रूप भऽ सकैत छनि तकर कोनो अन्दाज नहि छल। एकदम उखड़ि गेलाह। कहलनि– अहाँ हमरा संग 'चीट' करैत छी। लिखल रहैत अछि किच्छु आ अहाँ हमरा सोझाँमे पढ़ैत छी किच्छु। चारिए दिनमे अहाँ बम्बैया भऽ गेलहुँ। बुच्चीदाइकेँ अहाँ लोकनि मिलिकऽ सत्यानाश करय चाहैत छियनि, हम आदर्श मैथिल-कन्याक चित्र उपस्थित करय चाहैत छी आ अहाँ लोकनि नट्टिन बनबऽ चाहैत छियनि ! हम कहलियनि– 'हम तोहर फूल बीछब खूब बुझैत

छियौक' एहि वाक्यसँ नट्टिन बनयबाक तँ कोनो सम्भावना हमरा नहि बुझना जाइत अछि। संवादमे 'टेम्पो' अनबाक हेतु एक प्रयोग भेलैक अछि। हँऽ रहितैक– 'तोहर खेलबड़पन हम खूब बुझैत छियौक' तँ सन्देहो कयल जा सकैत छल। यदि संवादमे टेम्पो नहि रहतैक तखन एहि सिक्वेंसक अर्थ की रहि जयतैक ?

श्रीहरिमोहनबाबू कहलनि– सबटा अर्थ रहतैक। हम टेम्पो आ टैक्सी किछु ने जानी, अहाँ एहि सबकेँ काटिकऽ फेकि दियौक।

'हम काटिकऽ फेकनिहार के ? ई हमरा अधिकार क्षेत्रसँ बाहरक बात थीक।' हम कहलियनि।

'हम अहाँकेँ अधिकार दैत छी।' श्रीहरिमोहनबाबूक कहब छलनि। हम कहलियनि– 'अपने ई अधिकारो देबाक अधिकारी नहि छी। ई मूल कथा नहि पट–कथा थिकैक।'

स्क्रिप्ट हमरा हाथसँ छीनि तामसेँ थर-थर कपैत लाल कलमसँ यत्र-तत्र काटि देलथिन आ कहलनि– हम अहाँकेँ आशासँ संग अनलहुँ जे अहाँ मर्यादाक रक्षा करब उनटे एकरा 'जस्टीफाइ' करैत छी। ई पहिने बुझितहुँ तँ संग नहि अनितहुँ।

कनेक काल हमरो एहि हेतु क्षोभ भेल। कहलियनि– हमरा केवल डायलॉग डाइरेक्टरक आ कलचरल एफेयर्स देखबाक भार देल गेल अछि, डायलॉग लिखबाक अथवा संशोधन करबाक भार नहि। एतबे काज हम करब, एहिसँ अतिरिक्तक भार नहि गछब। यदि अपनेकेँ पसिन्न नहि हो तँ हम तुरन्त आपस जयबाक हेतु प्रस्तुत छी।

श्रीहरिमोहनबाबू किछु काल गुम्म रहि गेलाह। श्रीगोविन्दबाबू हमरा दिस आ हम श्रीगोविन्दबाबू दिस ताकय लगलहुँ तावत श्रीहरिमोहन बाबू कहि उठलाह– अहाँ जाउ आ कहबनि जे शूटिंग शुरू होयबासँ पहिने हमरा हेतु गाड़ी पठा देताह। प्रथम ग्रासे मक्षिकापात: हम नहि सहि सकैत छी। १२:३० मे खारसँ स्टूडियो पहुँचलहुँ। वर्षा भऽ रहल छलैक। संयोगवश श्रीफणिमजुमदार तकराबाद पहुँचलाह। हम तँ डेराइत छलहुँ जे एगारहे बजे बजौने छलाह, हमरा बहुत देरी भऽ गेल, पहुँचलापर हुड़कथि ने, मुदा अपने विलम्बसँ अयलाह। अबितहि फर्स्ट सिक्वेंस आगाँ कऽ देलिऐनि। उनटा कऽ देखैत देरी पुछलनि– ऐँ ! ये लाल-लाल क्या है ? हम कहलियनि– प्रोफेसर साहेब ने काट दिया है। फणिदा गरमाइत कहलनि– पण्डितजी, यह स्टूडेंट का कापी नहीं है, जहाँ चाहो लाल लगा दो। क्यों काटा इसको ? मुंशीजी ठाढ़ रहथि।

हम कहलियनि– मैथिल कलचरके खिलाफ पड़ता है।

ओ ! प्रोफेसर हरिमोहनझा अपने को बहुत बड़ा राइटर समझते हैं ? यहाँ तो 'इन्टरनेशनल फेम' के राइटरों के नोभेल्स को काट छाँटकर मैंने फिल्म बनाया है– चाइनीजमें, जैपनीजमें, टमिल और टेलगूमें, ये क्या दिखाने चले हैं हामको मैथिल कल्चर, हाम क्या मैथिल कल्चर नहीं जानते हैं ? उनका तो मैथिल कल्चर देखते हैं कि क्वाँरी लड़की की तरह वाइफ सिर पर साड़ी तक नहीं रखती है, कैन्टीन में टेबुल पर साथ बैठकर खाती हैं और हामको मैथिल कल्चर सिखाने चले हैं ? 'औनली पण्डितजी रिप्रेजेन्ट्स दी मैथिल कल्चर', सच, पण्डितजी, आपको देखकर कोई समझ सकता है कि यह कोई मैथिल है, प्रोफेसर झा को देखने से बंगाली मालूम पड़ता है । बजैत जाइत छलाह आ जेना रोष बढ़ल जाइत छलनि, मुंशीजी दिस ताकि कऽ बजलाह– 'मुंशीजी ! पैक-अप, हामसे नहीं होगा । बुलाइए हीराबाबू को, देखने दें प्रो. हरिमोहन झाका कांट्रैक्ट' एतवा कहैत पाण्डुलिपिकेँ जुमाकऽ बाहर फेकि देलथिन, वर्षा भइए रहल छलैक । आफिस बन्द कऽ फणिदा कारसँ बिदा भऽ गेलाह। नवेन्दुदा दौड़िकऽ पाण्डुलिपि उठाबय गेलाह आ मुंशीजी कन्ट्रैक्ट लाबऽ दौड़लाह आ हम असोथकित भऽ कुर्सीपर बैसल सोचय लगलहुँ–

भाषाक विकासमे आजुक युगमे फिल्मक योगदान विशेष महत्त्व रखैत छैक । मैथिलीमे फिल्म बनबाक प्रसंग जखन जतय गप्प होइत छल तँ मोन मसोसिकऽ रहि जाय पड़ैत छल जे एहि हेतु ततेक पैघ पूजी चाही जे हमरा सभक सामर्थ्यसँ बाहरक बात थीक । ओहो दिन अयबे करतैक जहिया मैथिलीओमे फिल्म बनबे करतैक, नहि काल्हि तँ परसू । अपराजिताक मुहूर्त्तक समाचार पढ़लहुँ, छाती सूप सन भऽ गेल आ विश्वास तहिना मोटा गेल जेना नवविवाहित अधिकतर वर सासुरमे छोहाड़ा मिसरीक संग गाइक दूध पीबिकऽ मोटाइत अछि । परन्तु फेर सुन्न-मसान ! 'नैहर भेल मोर सासुर'क शूटिंग शुरू भेल तँ होअय लागल जे आब बनबे करतैक, मुदा अनेक विघ्न-बाधा चारूकातसँ ताहि रूपेँ घेड़ि लेने छैक जे तावत स्थगिते छैक । 'कन्यादान' फिल्मक प्रति पूर्ण रूपेँ विश्वास भऽ गेल जे ई सिद्धहस्त डाइरेक्टर, साधन-सम्पन्न फिनांसर आ अनुभवी प्रोड्यूसरक हाथमे छैक, ई तँ आब बनले अछि । कतेक दिनसँ मोनमे सेहन्ता पोसने छलहुँ जे आब अपना आँखिसँ मैथिलीमे जल्दीए फिल्म देखबाक सुयोग प्राप्त होयत । जखन पटनासँ श्रीहरिमोहनबाबूक संग बम्बै बिदा भेलहुँ तखनजे हर्ष ओ आनन्द भेल छल से अनिर्वचनीय अछि । बम्बै पहुँचला पर एकर कार्यारम्भ होइत देखि सन्देहक कनेको स्थान नहि रहि गेल छल, मुदा आजुक ई दुर्घटना चित्तकेँ उद्विग्न कऽ देलक अछि, सम्पूर्ण आशा पर पानि पड़ल सन अनुभव कऽ रहल छी । लगैत अछि 'मैथिली' अभागल शब्दक पर्यायवाची थीक । जहिना जानकीकेँ जीवनभरि विपत्ति भोगैत अन्तमे धरतीमे समा जाय पड़लनि तहिना मैथिलीओ काहि कटैत कोनो भाषाक पेटमे ने समा जाय ! अन्यथा एहन सुन्दर संयोग, सब किछु

समतूल तखन पकला जौ मे ई पाथर किएक पड़ैत ?''

सौंसे स्टूडियोमे फणिदाकेँ चल गेला पर हड़कम्प मचि गेल छल, मुदा श्रीहीराबाबू पटनासँ आबि गेलाह, मुंशीजी दौड़-बड़हा करैत कोनहुना फेर फणिदाकेँ शान्त कयलनि । हमहू धीरे-धीरे सुढ़िअबैत किछु अंशकेँ ओमिट कराओल, श्रीनवेन्दुदा सहयोग कयलनि आ फेर शूटिंग शुरू भेल । आइ साढ़े दस बजे राति धरि काज चलैत रहल आ मेघ सेहो रहि रहि कऽ झहरैत रहल । फणिदा अपना गाड़ीसँ पहुँचा देलनि। संयोगसँ दिनमे राजनगरक परिचित सिकन्दर भेटि गेल । ओहो एतय देखि चकित रहि गेल ।

२५.७.६४

आइ दसे बजे स्टूडियो पहुँचबाक छल, समयपर पहुँचि तँ गेलहुँ, मुदा लालककाक रौल करबाक हेतु तिवारीजी १२ बजे पहुँचलाह ताहीकारणेँ सौर्ट अँटकल रहल । मेक-अप कराय तिवारीजी सेटपर पहुँचलाह तखन रिहर्सल आरम्भ भेल । वाक्य छलैक– की भेल ? एना किएक चिकरैत छी ? दू बजे धरि कोना ई वाक्य बाजल जयतैक से सिखबैत रहलिऐनि, दू बेर 'टेक'क चेष्टा कयल गेल, किन्तु तिवारीजीक मूड ऑफ । आइ ई दोसर दिन छलनि । हम पुनः उच्चारण सिखबऽ लगलियनि तँ फणिदा दिस ताकि कऽ बजलाह– मुझको छोड़ दीजिए दादा, जिन्दगीमे आज तक कभी डायलॉग पाकिटमे लेकर तिवारी नही चला, मगर इस सालेको कलसे आज तक सौ बार इस पण्डितने बोल-बोलकर सिखाया और रात दो बजे तक ऐनक सामने खड़ा होकर रटता रहा, मगर यह जुबान ऐसी टेढ़ी है कि ऐन मौके पर सब गड़बड़ हो जाता है । मेरे पास भी इतना टाइम नहीं है और आप का टाइम भी खराब होगा । मुंशीजी कहलथिन– शायद आपको इन्टरेस्ट नहीं है । तिवारीजीक कहब छलनि– इन्टरेस्ट तो मुझे पूरा है, मगर ईमानन कहता हूँ अपने तई पूरी कोशिश करने पर भी नहीं बन पड़ता है ।

फणिदा कहलथिन– तिवारी, तुम बिहारके रहने वाले हो और मैथिली बिहारके ही एक भागकी भाषा है । दुलारीबाई बोल लेती है जो महाराष्ट्रकी है, पद्मादेवी बोल लेती है जो बंगालकी है, और बिहार के होते हुए भी तुम नहीं बोल पाते हो, तुम्हें शर्म नहीं आती है ?

तिवारी– इसीलिए तो कहता हूँ दादा ! मैं बिहार का हूँ, इसलिए मेरा इन्टोनेशन गड़बड़ होगा तो लोग मेरे नाम पर थूकेंगे । मैं ऐसा नहीं करना चाहता हूँ दादा ।

''तो सेट पर आकर सब चौपट्ट करना चाहते हो ? तीन दिनों से स्टूडियो का चार्ज लग रहा है, पूरा यूनिट जुट गया है और तब......

"इसीलिए तो शुरुमें ही गलती ठीक कर रहा हूँ ।"

मुंशीजी कहलथिन– नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा । अब सब बना बनाया काम बिगड़ जायगा । आप ऐक्शन दे दीजिए, मैं 'व्वायस' 'डब' करा लूंगा । फणिदा कहलथिन– बहुत लम्बा रौल है, और कैरेक्टर रौल है, इसको डब करना ठीक नहीं होगा । मुंशीजी कहलथिन– तब क्या होगा तिवारी जी ! तिवारी जी मुंशीजीक मुँह दुसैत कहलथिन– क्या होगा, क्या होगा ? जो होना है सो होगा । फणिदाकेँ कहलथिन– दादा इस पण्डित से यह रौल करा लीजिए । मुंशीजी तकलथिन हीराबाबू दिस, हीराबाबू फणिदा दिस आ फणिदा हमरा दिस ताकि पुनः तिवारीजी दिस । तिवारी बजलाह– हाँ दादा मैं ठीक कह रहा हूँ । जब यह पण्डित मुझको डायलॉग बोलना सिखाता रहता है तो मेरा मन डायलॉग पर कम और इस पण्डितके गैश्चर और पोश्चर पर ज्यादा टिक जाता है । मुझको लगता है दादा कि यह पण्डित भी आर्टिस्ट है ।

फणिदा मुंशीजीकेँ कहलथिन– तिवारी सचमुच जी-जानसे कोशिश करता है, मगर नहीं सँभल रहा है । हमरा कहलनि– जाइये पण्डितजी, मेक-अप कराइए । हम स्तब्ध ठाढ़, अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल की की सोचि गेलहुँ– २५ जुलाइ ६४ की हमरा जीवनमे कोनो मोड़ बनिकऽ उपस्थित भेल अछि ? की ई परिवर्तन श्रेयस्कर ? किछुए मिनटमे ने जानि हृदयमे १९३४क भूकम्प, १९४२क भारत छोड़ो आन्दोलन १९४७क मिदनापुर मे आयल समुद्री तूफान एक संग आबि गेल हो । श्रद्धेय बड़का भाइ आँखिमे ठाढ़ भऽ गेलाह । जेना कहि रहल होथि– छिः छिः गुरुजीक बालक आ नचनियाँ भेल ? नहि, नहि, पर्दापर नहि उतरब । फेर होअय जे एकटा सुयोग भेटल अछि, आर्थिक विपन्नतासँ मुक्ति भेटि जायत । समस्त इष्ट-मित्र, बन्धु-परिवार आँखिक सोझाँ आबय आ बिलाइत जाय । श्रीयुत झिंगुरबाबूक अपना प्रति विश्वास, समस्त छात्र समुदायक श्रद्धा-भक्ति, परन्तु बड़का भाइक डर सबसँ बेसी विरत करैत रहल ।

हमरा स्तब्ध देखि फणिदा बजलाह– की भावचेन पण्डितजी ! आपनी जान, आमी बोलची, आपनी अनेक भाग्गवान् ।

हम कहलियनि– दादा, पर्दापर मैं नहीं जाना चाहता हूँ ?

फणिदा– 'केनो ? (किएक)'

"दादा, यह मेरी प्रतिष्ठा के त्रिरुद्ध होगा ।"

"प्रतिष्ठा के विरुद्ध ?"

"जी, मैं प्रतिष्ठित पण्डित परिवारमे पैदा हुआ हूँ । मेरे पिता मिथिलाके उन

ख्यातनामा विद्वान् लोगोंमें एक थे जिनके सैकड़ो शिष्य आज मिथिलाके मान्य विद्वान् माने जाते हैं । मैं भी पिछले सत्रह वर्षोंसे शिक्षकका काम कर रहा हूँ । मेरे भी अनेक शिष्य विद्यालयों, महाविद्यालयोंमें शिक्षकके पदपर हैं । मेरे समाजमें इस तरह के काम-को अच्छा नहीं माना जाता है ।

फणिदा फेर बमकि उठलाह– अच्छा पण्डितजी, यह काम जब बुरा है तो आप फिल्म बनाने क्यों आये ?

''इससे भाषाके विकासमें बहुत सहायता मिलती है ।''

''पण्डितजी, आपकी भाषाके विकासके लिए दूसरी भाषा बोलने वाले यह बुरा काम नहीं करेंगे । मुंशीजी, मैथिलीमे फिल्म नहीं बनेगी । मैं पटना जाकर कई लोगों के इन्टरव्यू लिए, एक भी आर्टिस्ट नहीं मिला, यह एक मिला है तो कहता है यह काम अच्छा नहीं माना जाता ।

तिवारीजी हमर हाथ पकड़ि लेलनि आ घिचैत-तिरैत मेक-अप रूम दिस लऽ जाइत कहय लगलाह– कल्याण हो जायेगा पण्डित तुम्हारा । मेरे को कल ही पता चल गया कि यह रौल साला मेरे से चलने को नहीं और मेरे को टाइम भी नहीं है । मैं कल ही दादा को पार्ट फेंक देना चाहता था, मगर क्यों नहीं फेंका जानते हो ? पुनः हमरा उत्तरक बिनु अपेक्षा कयनहि कहय लगलाह– यह फिल्मिस्तान है फिल्मिस्तान। यहाँ आयरन वाल खैंच रक्खा हे लोगों ने । दस-दस साल कप और तश्तरियां धोते गुजर जाते हैं मगर पर्देपर एक झांकी तक देना मयस्सर नहीं होता है और तुमको कैरेक्टर रौल मिला है । कल मैं पार्ट वापिस कर देता तो रातमें सोच कर यह ससुरा किसी गयावाल को घुसा देता । जिस भाषामे फिल्म बनायी जा रही है उस भाषाका बोलने वाला एक भी आर्टिस्ट नहीं मिले, क्या यह तुम्हारे लिए शर्म की बात नहीं है ? तुम जात भाई हौ, मैं भी ब्राह्मण हूँ, तुम्हारा कल्याण हो जायेगा । इसीलिए मैं मौके की ताक में था कि ऐन मौके पर ऐसा झटका दूँ कि मुंशी चित्त हो जाय । दादा मेरा प्रपोजल जरूर मान जायेगा ऐसा विश्वास मुझे था ही । अब से कोई दूसरा प्रोड्यूसर इस जुवानमें फिल्म बनाने को सोचेगा तो सबसे पहले तुम्हारी खोज करेगा और तुम बाखूबी इसे कर भी लोगे, मैं तो तुम्हारे डायलॉग बोलनेके वख्त ही समझ गया था कि वाकई यह शख्स फिल्मिस्तानके लायक है । थैंक्स यू, एतबा कहैत अपन मेक-अप उतारि हमरा मेक-अप करबाक हेतु 'मेक-अप-मैनकें' कहि देलथिन ।

अस्तु, मेक-अप कराय सेट पर अयलहुँ । फणिदा थपड़ी बजबऽ लगलाह तँ सब थपड़ी बजौलक । एक रिहर्सल, दोसर रिहर्सल, तेसर टेक । पहिले टेक करेक्ट। पुनः दोसर सौर्ट ओही सेट पर । एक रिहर्सल दोसर टेक, बस ई हो करेक्ट । क्लैपिंग

पर क्लैपिंग, स्टूडियोमे आश्चर्यक विहाड़ि-की भालो, क्या अच्छा, दी बेस्ट, मिठाई खिलाइए, अच्छी मिठाई। एही बीचमे श्रीहरिमोहनबाबू पहुँचि गेलाह, हमरा मेक-अपमे देखि भरि पाँज कऽ पकड़ि लेलनि, हर्षाश्रु छलकि अयलनि, बजलाह आब निश्चिन्त भऽकऽ हम बम्बै सँ जाइत छी, हमरा पूर्ण सन्तोष भऽ गेल। नवेन्दुदा अयलाह आ हमरा देखि बजलाह– धन्नोवाद, आमी बुझिते छिलाम, निश्चिन्त हइया बात कोरबो।

श्रीहीराबाबू मधुर मङबौलनि। मुंशीजी तँ चुट्ट लोक अछि। अपन बगयवानी तेहन बनोने रहैत अछि जेना दरिद्र छिम्मड़ि रहय। पाइकेँ बकुटि कऽ पकड़निहार ई पाइ कतय सँ बाहर करैत, मुदा श्रीहीराबाबू उदारता देखौलनि। सब भरि इच्छा मधुर खाइत गेलाह। फणिदा सेहो बेस प्रसन्न छलाह। फोटोग्राफी सेहो भेलैक।



आइ श्रीहरिमोहन बाबू पटनाक हेतु बिदा भऽ गेलाह आ हम श्रीरत्नेशक संग अन्धेरीसँ खार एभरग्रीन होटलमे डेरा लऽकऽ चल अयलहुँ।

२६.७.६४

आइ नाइट शूटिंग थीक। आइ सबेरे श्रीधनपति (श्रीभैरवबाबू, लालबागक, दोसर बालक) भेट कयलनि। हिनक बहिनोइ एतहि रहैत छथिन, हुनके संग किछु दिनसँ एही ठाम छथि। अपना लोकसँ भेट भेलापर परदेशमे आत्मीयताक भाव कोना हृदयमे उमड़ि उठैत छैक तकर अनुभव एतय भऽ रहल अछि। श्रीअमृतराव राठौरक संग श्रीसुरेश सेहो पहुँचल, बस ड्राइवर शर्मा सेहो छलथिन। काल्हुक स्टूडियोक घटना चारूदिस पसरल छैक जे एक एहन व्यक्ति जकरा कैमराक सोझाँ ठाढ़ होयबाक

कहियो कोनो अवसर नहि भेटल छलैक तकर पहिले 'टेक' करेक्ट भऽ गेलैक । हिनको लोकनिक जिज्ञासा जे आब पुन: शिक्षकक पद पर घूरि कऽ जायब अथवा फिल्मिस्तानेमे जीविकाक हेतु प्रयत्नशील रहब ?

आजुक दिनुका भोजन श्रीउदयभानुसिंहक डेरा पर छल, श्रीरत्नेश सेहो संग छलाह । आब हम केवल डायलॉग डाइरिक्टरे नहि, कैरेक्टर रौलमे उतरि गेलहुँ अछि से जानि श्रीभानुजी प्रसन्न भेलाह आ किछु चकित-विस्मित सेहो ।

नवेन्दुदा २ बजे सँ स्टूडियोमे फोर्थ सिक्वेंसपर बैसबाक हेतु समय लेने छलाह, किन्तु पेटमे दर्द होइत रहलाक कारणेँ नहि जा सकलहुँ । आइ आठ-नओ दिनसँ विजयाक दर्शन मात्र नहि भेल अछि तेँ उचित समय धरि निद्रा नहि भऽ पबैत अछि आ पेट सेहो गबड़बड़ रहैत अछि ६ बजे स्टूडियो गेलहुँ, पौने पाँच बजे भोर धरि शूटिंग चलैत रहलै फणिदा अपना कारसँ डेरा पहुँचा देलनि । नित्य कृत्यमे लागि गेलहुँ ।

२७.७.६४

राति विश्रामक समय नहिएँ भेटल । नित्यकृत्य कऽ श्रीगोविन्दजीक डेरापर चल गेलहुँ । मध्याह्नमे भोजन कऽ जे विश्राम करऽ लगलहुँ से सोझे ४ बाजि गेल । ३ बजे नवेन्दुदा सिक्वेंस पर काज करबाक हेतु स्टूडियो आबय कहने छलाह, तेँ सूति उठिकऽ सोझे स्टूडियो गेलहुँ । मुंशीजीसँ पारिश्रमिकक प्रसंग पुछलिऐनि तँ मात्र ५०१/- रु० देबाक विचार व्यक्त कयलनि । ६.३० मे श्रीहीराबाबू अपनहुँ पहुँचलाह। हुनका जखन कहलियनि तँ बजलाह एखन पारिश्रमिक नहि दऽ रहल छी । हमहुँ मातृभाषाक सेवा बुद्धिएँ एहिमे हाथ बढ़ौलहुँ अछि । तिवारीजी एहि हेतु पाइ नहि मङने छलाह । ओहो बिहारेक थिकाह तेँ सहायतेक बुद्धिएँ समय देब स्वीकार कयने छलाह । अहाँ लोकनिक सहयोगसँ यदि फिल्म नीक भऽ सकत आ एहिमे नफा होयत तँ अहाँ लोकनिकेँ, जे सब सेवाक भावसँ एहिमे काज कऽ रहल छी तनिका सबकेँ, यथाशक्ति अवश्य पारिश्रमिक भेटत । एखन तँ हम टाका पानिएँमे फेकि रहल छी । एहि व्यवसायमे दोबड़ की गोबर दूनू होइत छैक । तथापि अहाँकेँ घाटा नहि लागऽ देब ।

एहिठाम ठकहरे सभक जुटान रहैत छैक । भविष्यमे की करैत जायत से के जनैत अछि । अभिनयक काज जँ आब करब नहि गछबैक तँ भऽ सकैत अछि तत्काल स्थगिते कऽ देल जाइक । श्रीहरिमोहन बाबू चल गेलाह । हुनका समक्ष एहि प्रसंग किछु गप्प भेल नहि, आब पारिश्रमिकक हेतु जँ बखेड़ा करी आ तत्काल काज स्थगित भऽ जाइक तँ निरर्थक हमरा कलंक लागि जायत जे यैह बाधा उपस्थित कयलनि । अपना भाषामे फिल्म हो तकर प्रबल आकांक्षा अछि । एहिसँ अर्थोपार्जन होयत से तँ सोचलो नहि छल । एहि फिल्मकेँ ऐतिहासिक महत्त्वतँ भेटबे करतैक । मातृभाषाक

विकासक हेतु जखन एतेक दिनसँ स्वार्थ रहित भऽ खटिते आयल छी तँ एहूमे खटब। बूझब जे बम्बै देखल आ फिल्मिस्तानक भीतरक थोड़ बहुत अनुभवे प्राप्त कयल।

९.३० रातिधरि नवेन्दुदाक संग काज करैत रहलहुँ। भोजन करबाक हेतु बनारसीक ओहिठाम गेलहुँ। मुंशीजी श्रीहीराबाबू आ श्रीदामोदरबाबू एम्.एल.सी.क संग ओतहि पहुँचलाह। १०.३०मे हुनका लोकनिसँ गप्प समाप्त कऽ सबकेँ विदा कऽ 'नैहर भेल मोर सासुर'क सिने तारिकाक डेरा ताकऽ विदा भेलहुँ। श्रीप्रशान्तजी फोन पर गप्प कऽ चुकल छलाह आ समय दऽ चुकल छलाह किन्तु पता, नम्बर सब किछु रहितो भुतिआइत छलहुँ। एक गोटे श्रीहरीश नामक व्यक्ति, जे कारसँ जाइत काल देखने छल, पुनः घुरितो काल देखलक तँ, कार रोकि जिज्ञासा कयलक आ अपना कारमे बैसबाक आग्रह कयलक। बम्बैमे आइ आठम दिन थीक। ई अनजान व्यक्ति कारमे बैसय कहैत अछि, जाइ की नहि जाइ ई तारतम्य होमय लागल। एकसरे छलहुँ, ओ अतिशय शिष्ट व्यक्ति, ठमकल देखि कहलक सिर्फ तीन मिनट का रास्ता है, मैं उधरसे ही गुजरूंगा, आप आ जाओ। हम साहसकऽ बैसि गेलहुँ, ठीक तीन मिनटक बाद अजराक डेराक लग उतारि देलक। श्रीप्रशान्तजी ठाढ़ छलाह। अजरा देखिकऽ आह्लादित भऽ उठलि। आध घंटाधरि गप्प करैत रहलि। कखनहु कोनो वाक्यकेँ मैथिलीमे बाजय कहय आ मैथिली वाक्य सुनि बाजि उठय– ''भेरी स्वीट लेंग्वेज' ड्राइवर नहि रहैक तँ नौकरकेँ पठबा टैक्सी मङबा देलक। जलपान-चाहक बड़ आग्रह कयलक, अन्तमे चारिटा कऽ सेवक खण्ड ~~हम~~ दूनू गोटे खाय आतिथ्य स्वीकार कऽ लेलिऐक। ११.३० मे खार घुरिकऽ चल अयलहुँ। श्रीप्रशान्तजीकेँ ओ कारवाला कोना पहुँचा देलक से कहलियनि तँ कहलनि जे एहन बहुतो शिष्ट लोक एहि महानगरीमे भेटत जे अहाँकेँ एहिना लिफ्ट देत, मुदा गुंडा, उचक्का सेहो सब एहि तरहेँ लिफ्ट देबाक नाम पर बहुतोकेँ धोखा दैत छैक, किन्तु हमरा लोकनिक लग कोन माल हाथ लगतैक ?

२८.७.६४

आइ सबेरे उठि गेलहुँ। श्रीप्रशान्तजी निश्चित समयपर आबि गेलाह। ई एकदम 'माइ डीयर' लोक छथि। स्वाभिमानी, अपना आनिपर मरि मेटायवाला लोक। भुट्टे खूटक लोक, पानिसँ रत-रत करैत। एहिठाम अद्भुत धन्धामे रहि जीवन-यापन कयनिहार आ स्वदेशक लोककेँ जान उपछि कऽ सहायताक हेतु ठाढ़ रहनिहार लोक। श्रीजगनारायणझा (पँजियाड़) सझुआड़क निवासी, ४९-५०मे जखन छात्रावासमे अधीक्षक छलहुँ तँ ई छात्र रहथि। हमर अनन्य भक्त आ कखनहुकऽ दू चारि पाँती भक्तिपरक पद जोड़ि लेबाक सौखीन। मैट्रिक पास कऽ एतय अयलाह। सझुआड़क बहुत लोक बम्बैमे आजीविकाक हेतु रहि रहल छथि। राज्य ट्रान्सपोर्टमे कण्डक्टर

छथि । छात्रावासक जीवनमे हमर सेवा श्रद्धापूर्वक करैत छलाह । बम्बैमे तीन-चारि मास जीविकाहीन रहलाक बाद हताश भऽ एकटा चिट्ठी लिखने रहथि जे आब निर्णय लेल अछि जे यदि एहि मासक अन्त धरि नौकरी नहि भेटत तँ तेल मालिश करबाक पेशा अपनाय लेब, किन्तु बिनु किछु कमयने-खटयने गाम घुरि कऽ नहि जायब । संयोगवश राज्य ट्रान्सपोर्टमे नौकरी भेटि गेलनि । काल्हि श्रीसुरेशसँ कतहु भेट भऽ गेलनि । ओकरेसँ हमर अयबाक सूचना भेटलनि तँ आइ भोरे पहुँचलाह । बड़ विनोद भेल, अतीतक चर्चा, स्कूलक स्थिति, श्रीयुत झिंगुरबाबूक कुशलादि, श्रीमहेशशर्माक मैथिलीक प्रति रुखि, मैथिली छात्रक संख्या आदिक चर्चा, अपन मैथिली सेवाक गति-विधि, नवीन पुस्तक सभक प्रकाशन आदिक जिज्ञासा कयलनि । एहि तीन वर्ष १९६२ सँ १९६४क अवधिमे 'मैथिली आन्दोलनः एक सर्वेक्षण', 'ऋतु प्रिया' तथा 'विदागरी' आदि पुस्तकक प्रकाशन, पटनासँ आब मिथिला-मिहिरक प्रकाशन आदि प्रगतिक समाचार सुनि बहुत आह्लादित भेलाह । किन्तु हिनका लोकनिकेँ आबि गेलाक कारणेँ श्रीगोविन्दजीसँ समय निर्धारित छल से समय पर नहि जा सकलहुँ । २ बजे सँ ६.३० धरि स्टूडियोमे नवेन्दुदाक संग 'फोर्थ सिक्वेंस' पर काज कयल ।

यद्यपि महालक्ष्मीमे श्रीगोविन्दजीकेँ भेट देबाक समय उनहि गेल छल, तथापि महालक्ष्मी बिदा भेलहुँ । ०२ अथवा ८३ नं. बस जाइत छैक । ०२ नं० बस भेटि गेल, खारसँ महालक्ष्मी पहुँचैत २५ मिनट लागल । बस स्टौपसँ पुछारि करैत मन्दिर दिस बढ़लहुँ । आजुक यात्रा बेसी आनन्ददायक रहल । बाटमे चलैत किछु दूर पर आगाँ एक व्यक्तिकेँ जाइत देखलियनि । पाछाँसँ मैथिल ब्राह्मणक वेष-भूषा बुझना गेल । रास्ता ओहि ठाम चढ़ा-उतार छैक । हम चढ़ाइ पर रही आ आगू वाला व्यक्ति तावत ढलान पर पहुँचि गेल छलाह । परिणामतः ओ हमरासँ आरो दूर बढ़ि गेलाह । ढलानपर गेलाक ब्राद हम डेग झाड़ल आ एक तरहेँ दौड़िकऽ हुनका लग पहुँचलहुँ । पाछुएसँ टोकलियनि— महाशय, कने सुनल जाय । ओ अकचकाकऽ हमरा दिस तकलनि । सोझाँसँ देखि आश्वस्त भऽ गेलहुँ जे मैथिले थिकाह । पुछलियनि— अपनेक घर कतऽ थीक ? ओ अपरिचित होइतो मैथिलीमे बजैत आ मैथिलक वेष-भूषामे देखि कने चकित आ कने आह्लादित होइत कहलनि— बरिऔल । यद्यपि ओहो हमर गामक नाम बुझबाक हेतु प्रश्न करऽ चाहैत छलाह, किन्तु जावत ओ मुँह सुरफुरौलनि तावत हम पुनः पूछि बैसलियनि— अपनेक गामक पाठशालामे एकटा पण्डितजी छथि, शास्त्रीजी, पं.श्रीकुमरझा ? हँऽ हँऽ छथि, खोजपुर घर थिकनि । अपनेकेँ हुनकासँ कोना परिचय ? हुनक उत्तरक संग संग ई प्रश्न छलनि ।

हम उत्तर देलियनि— ओ हमर अनतरंग मित्र थिकाह । गाम अबैत-जाइत अबेर-कुबेर भऽ गेला उत्तर दरभंगामे हमरे डेरापर अँटकैत छथि, हम ओ दूनू गोटे गौआँ

थिकहुँ। हमर गप्प सुनि जेना भीतरसँ उल्लसित होइत बजलाह– की अपने अमरजी थिकहुँ ?

''हँऽ हम एही उपनामसँ सम्बोधित होइत छी। ओना नामतँ चन्द्रनाथ मिश्र थीक।'' ओ महाशय आनन्द विभोर होइत कहलनि– आहाहाहा ! पण्डितजीसँ अपनेक प्रसंग अनेक चर्चा होइत रहैत अछि। सतत अपनेक गुणानुवाद करैत छथि। कहैत छथि– खोजपुर भरिमे अपनेसँ बेसी हुनक हित–चिन्तन कयनिहार दोसर नहि छथिन। अपने कोना हुनका जीविका देअयबाक हेतु किछु दिन मैथिली साहित्य परिषदक किरानीक पदपर, पुनः बाबू जानकीनन्दनसिंहकेँ कहि शिक्षाविभागमे नौकरी देऔलियनि से वृत्तान्त कहैत करुणार्द्र भऽ उठैत छथि।

हम पुछलियनि– अपनेक नाम ?

''हमर नाम– राजेन्द्र झा', अपने कोना बम्बै आबि गेलिऐक अछि ?

''हम मैथिलीमे एक फिल्म बनि रहल छैक 'कन्यादान' ताहि क्रममे उधि-आइत–भसिआइत एहि महानगरीमे पहुँचि गेल छी। श्रीराजेन्द्र बाबूसँ परिचय भेलापर एही सूत्रेँ मैथिलक एकटा खोंता भेटि गेल। कालिकापुरक श्रीउदयकान्त झा (बटुक), करमौलीक श्रीकृष्णनन्दठाकुर, बेलाक श्रीभागेश्वर, गौनौली, वनिसारा, मुरलियाचक आदि ठामक अनेक व्यक्तिसँ परिचय भेल। स्वजनसँ भेट भेलापर केहन आह्लाद होइत छैक से परदेशेमे नीक जकाँ अनुभव कयल जा सकैत अछि। तेँ नीतिकार चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च' मे सर्वप्रथम 'देशाटनम्' कहने छथिन। दोसर अपन–अपन वेष–भूषाकेँ अपनौने रहला उत्तर अपन क्षेत्रक लोक कोनो जन–समुद्रमे मिझड़ायलो रहला पर चिन्हबामे आबि जाइत छैक तथा अपन मातृभाषाक गरिमा मातृभूमिसँ जतेक अधिक दूर जाइत अछि ततेक बेसी बुझबामे अबैत छैक, मातृभाषा कतेक आत्मीयता आनि दैत छैक से अनुभव एतय कयलहुँ।

आइ कतोक दिनुक बाद विजयाराधनक सुयोग लागल अछि। श्रीरत्नेशतँ आइ मुग्ध अछि। विजयाक तरंगमे रहि रहि तरंगित भऽ उठैत अछि। एहिठाम समुद्रक तट पर, एक तरहेँ समुद्रेमे कहल जाय सकैछ, महालक्ष्मीक एक विशाल मन्दिर छनि, तेँ एहि महल्लाक नाम महालक्ष्मी पड़ल छैक। एहि मन्दिरक पृष्ठभागमे अनवरत समुद्र गर्जना करैत रहैत छैक। मन्दिरेक समीप सात-आठ धूर भूमिमे टीनक शेड दऽ कऽ बनल एकटा घर छैक जे विद्यार्थी आश्रमक नामसँ प्रसिद्ध अछि। ई विद्यार्थी आश्रम वस्तुतः मैथिल ब्राह्मणक खोंता थीक। जेना ओहिठामक लोकसब कहलनि जे एहि छोटसन स्थानमे सब मिलाकऽ ७५–८० व्यक्तिक आवास छनि। नाम तँ एकर विद्यार्थी आश्रम थिकैक जे एक मैथिले ब्राह्मण कोनहुना अर्जित कयने छथि, किन्तु

एहिठाम रहनिहारमे बेसी गोटे अनुष्ठानी आ मिल सबमे काज कयनिहार लोक छथि। दू चारि छात्रो रहि जाइत छथि ।

एतेक छोट सन स्थानमे एतेक गोटेक निर्वाह कोना होइत छनि से जिज्ञासा कयला पर ज्ञात भेल जे एक-एक चौकी पर आठ-आठ घंटाक हिसाबसँ तीन-तीन गोटे विश्राम करैत छथि । साधारणतः मिल आदिमे आठ घंटाक एक शिफ्ट होइत छैक। एक गोटे काज पर गेलाह तँ दोसर गोटे तावत ओहिपर विश्राम कयलनि, हुनका आठ घंटा पूरि गेलनि तँ तावत तेसर गोटे आबि गेलाह । तात्पर्य ई जे एक व्यक्ति आठ घंटा ड्यूटी करथु, आठ घंटा विश्राम करथु आ आठ घंटा एमहर-ओमहर घूमि-फिरिकऽ समय बिताबथु । एक चौकी पर दोसर आ ताहि पर तेसर, एहि तरहेँ जेना रेलगाड़ीमे तिनमंजिला स्लीपर होइत अछि तहिना एहू ठाम लोक निर्वाह करैत अछि । ईहो ज्ञात भेल जे बहुतो लोक एहि महानगरमे एहनो अछि जकरा आठो घंटा विश्राम करबाक हेतु कोनो स्थायी ठौर-ठेकान नहि छैक । रेलक मासिक पास बनबौने अछि । आठ घंटा ड्यूटी कयलाक बाद शेष समयक अधिकांश रेलमे बिता लैत अछि । एकटा झोरामे लूंगी आ आन किछु कपड़ा रखने रहैत अछि जे संगहि रहैत छैक । कोनो सार्वजनिक पैखानामे पैखाना गेल, सार्वजनिक नल पर स्नान कऽ लेलक, कोनो होटलमे खयलक, आवश्यकतासँ बेसी जतबा पाइ होइत छैक से बैंक आदिमे जमा कऽ लेलक । बड़का बड़का मकानक सीढ़ी सबपर जतय मोड़पर कनेक चाकर जगह छैक, ताहू सब पर दरवानकेँ मासमे दस-पन्द्रह टाका दऽ, रातिकऽ आबि घसमोड़िकऽ सूति रहनिहार लोकक सेहो कमी नहि छैक । हम ई सब वृत्तान्त सुनैत ततेक चकित आ विस्मित भऽ गेलहुँ जे कतेक समय बीति गेल तकर ध्यानो नहि रहल, ताहिपरसँ विजयाक आनन्दक योगदान सेहो रहलैक । कार्यालय आदिमे फाइल, रजिस्टर आदि रैक पर रहैत अछि आ महालक्ष्मीक एहि महानगरीमे मनुक्ख रैक पर गुजर करैत अछि ।

ओहि ठामसँ उठि पानक दोकान पर अबैत गेलहुँ । एहि ठाम पानक दोकानक व्यवस्था सेहो अद्भुते छैक, कतेक प्रकारक मसाला दैत छैक, कतेक प्रकारक जर्दा दैत छैक से गनब कठिन, सुपारी खूब पुष्ट मात्रामे, सुपारी सेहो दू प्रकारक-कच्ची आ पक्की । पान चारि तरहक महोबा, पूणे, कलकत्ता, मगही । क्यो कहैत मुझे महोबा देनाजी, क्यो मुझे कलकत्ता देना, हाँजी, पूणे दो बनाओ, हाँ पाँच मगही बाँध देना जी आ दनादन पान बनि रहल अछि, चारि गोटे अनवरत मशीनजकाँ काज कऽ रहल अछि, एक गोटे चून लगा लगा फेकने जाइत अछि, दोसर कथ सुपारी दऽ हटौने जाइत अछि, तेसर जर्दा, मसाला आदि दऽ रहल छैक आ चारिम मोड़ि मोड़ि ग्राहककेँ धरबैत जा रहल अछि । ग्राहक पंक्तिमे क्रमशः आगाँ बढ़ैत, पान खाइत पंक्तिसँ बाहर भेल जाइत अछि । पान खा, अड़िआतनिहार लोकनिकेँ बिदा कऽ झटकि कऽ चलि देलहुँ । आइ मोन हल्लुक आ आश्वस्त बुझना जाइत अछि । स्वदेशक लोकक प्रति केहन आकर्षण

होइत छैक, आत्मा कतेक बलित भऽ उठैत छैक तकर अनुभव सेहो आइ भेल । विगत आठ दिनसँ मोन औआइत छल से जेना आइ बुझाइत अछि अपना लोकक बीचमे आबि गेल होइ । रातुक ९.३० बाजि रहल छल । कुसंयोगसँ महालक्ष्मी स्टेशन पर एक मिनट लै ई ट्रेन छूटि गेल, आब आध घंटा धरि प्रतीक्षा करऽ पड़त से बुझि बस स्टौप पर अयलहुँ, किन्तु उपयुक्त बस नहि भेटलाक कारणेँ १० बजे ट्रेने पकड़ि डेरा घुरलहुँ। रातिमे ६टा चिट्ठी लिखल ।

२९.७.६४

आइ कोनो ने विशेष घटना भेल, ने कोनो नवीन व्यक्तिसँ भेट भेल ने अन्यत्र कतहु जाइए सकलहुँ । डेरासँ अन्धेरी प्रकाश स्टूडियो आ ओतयसँ डेरा करैत रहय पड़ल । पूर्वाह्नमे स्नान पूजाकऽ एक गिलास मोसम्मीक रस पीबि श्रीनवेन्दुदाक संग फिफ्थ सिक्वेंस पर काज करय बैसलहुँ १० सँ १.३० धरि समाप्त करब आवश्यक छल । काल्हि जकर शूटिंग होयतैक अर्थात् ३/३१, ३/३७, ४/२३क प्रसंग श्री फणिदाक संग बैसबाक छल । ओ ३ बजे समय देने छलाह । तेँ अन्धेरी आबि भोजनकऽ, खार आबय पड़ल, पाण्डुलिपि डेरे पर छल । पुनः २.५० मे स्टूडियो पहुँचि गेलहुँ, किन्तु श्रीफणिदा ३क बदला ५ बजेक करीब पहुँचलाह । एहि मध्य जाहिद हुसेन आबि गेल । ओकरेसँ गप्प करैत ओकर अपन यूनिटमे की सब होइत छैक से खेड़हा सुनैत रहलहुँ । श्रीफणिदाक संग काज करैत ८ बाजि गेल । डेरा घुरलापर ज्ञात भेल जे श्रीगोपाल तथा श्रीमहिपाल खार आयल छलाह । सर्वश्री श्रीदेवेन्द्रभाइ, ओझा, विनोद, बचकुन, चि. सावित्री आ चि. बाउ सबकेँ रातुक लिखलाहा चिटठ्ी सब डाकमे खसा देलियनि । रातिमे तेसर सिक्वेंसक फाइनल कापी तैयार करैत एक बाजि गेल, तखन विश्राम कयल ।

३०.७.६४

६ बजे उठलहुँ, दैनिक कृत्यसँ निवृत्त भऽ एक गिलास मोसम्मीक रस पीबि लेल । मात्र बारह आनामे सोझाँमे पेरि कऽ कनेक नोन आ कनेक भूजल जीरक बुकनी आ बर्फ दऽकऽ ई पेय एहिठाम सुविधासँ उपलब्ध छैक । तेँ जलपानमे एकरे उपयोग कयल जाय से उत्तम । ९.३०मे स्टूडियोमे बजाहटि छल । आइ रेवती आ बड़का गाँव वाली दृश्यक सौर्ट लेबाक छलैक । रेवती रमणक भूमिकामे श्रीतरुणबोस आ बड़का गाँववालीक भूमिकामे चाँद उस्मानी छथि । तरुण बोससँ आइ प्रथमे परिचय भेल । हमर एहि पण्डिताह वेश-भूषा देखि जेना दूनू गोटे झुझुआय गेल । श्रीनवेन्दुदा जखन कहलथिन जे तिवारीजीकेँ कैरेक्टर रौल लालकाकाक देल गेल छलनि से ओ छोड़िकऽ भागि गेलाह तखन पण्डितेजी ओ सम्हारलनि अछि, सेहो खूबी ई जे हिनक पहिल सौर्ट ओ.के. भेलनि । चाँद उस्मानी विस्मित सन भेल हमरा देखैत रहलि ।

आइ दिन भरि अत्यन्त श्रान्त रहलहुँ । भाषाक उच्चारण आ ध्वनिकेँ दुरुस्त करबामे ईहो दूनू गोटे माथ चाटि जाइत अछि । एकरा सबकेँ मैथिलीक ध्वनिक अनुरूप बजबामे एतेक कष्ट देखि प्रतीत होइत अछि जे मैथिलीभाषी जतेक सुगमतासँ आन-आन भाषा सीखि लैत अछि, जेना कलकत्तामे काज कयनिहार बंगला, पुलिसमे काज कयनिहार भोजपुरी आदि तेना बाजि लैत अछि जे बुझना जाइत छैक ओकर मातृभाषे होइक, किन्तु अन्यभाषाभाषीकेँ मैथिली बाजब सीखि लेब बड़ दुरूह होइत छैक । ह्रस्व इकारक उच्चारण तँ जेना ई सब जनिते ने हो । तीन घंटाक परिश्रममे मात्र डेढ़ सीनक सौर्ट लेल जा सकलैक । आइ एही स्टूडियोमे पुनः अजरासँ भेट भेल। मिथिलांचलक बाध-बोन, गाछी-विर्छी, उन्मुक्त वातावरण, खेत-खरिहान, पोखरि-झाँखरि, जेना एखनो मन-प्राणमे बसल होइक से गप्प-सप्पमे भासित भेल, किन्तु ग्राम्य क्षेत्रक गंदगी आ मैल-कुचैल लोकक स्मरणकऽ बूझि पड़ैत छल एखनहुँ मोन पचपचा जाइत होइक । नेना भुटकाकेँ बौआ कहब एकरा अतिशय प्रिय लगैत छैक ।

डेरा घुरलापर ओझाक चिट्ठी भेटल । श्रीउदयभानुजी आर्यावर्त्तक एक पुलिन्दे पठा देलनि । एहि ठामक अखबारमे तँ बिहार दिसुक कोनो समाचारो नहि रहैत छैक, बुझाइत अछि जे विदेशेमे होइ । ई चिट्ठी आ ई आर्यावर्त्त जेना गामक लोकसँ भेट करा देलक अछि । राति डेढ़ बजे धरि एकरे सोटैत रहलहुँ ।

३१.७.६४

आइ ५.३०मे निद्राभंग भेल, नित्यकृत्यसँ निवृत्त भऽ मिथिला मिहिर पढ़ैत-पढ़ैत फेर आँखि लागि गेल से एक घंटा धरि सूतल रहि गेलहुँ । स्नान पूजा कऽ बनारसीक ओहिठाम दूध पीबऽ गेलहुँ, तावत परमानन्दजी गाड़ी लऽकऽ आबि गेलाह । काल्हुक शेष अंशकेँ आइ फिल्माओल जयतैक तेँ उच्चारण दुरुस्त करबाक हेतु चाँद उस्मानीक ओहिठाम लऽ गेलाह । एकरो मैथिली फिल्ममे भाग लेबाक महिरम आब बुझाइत छैक। एकतँ फिल्ममे डायलॉग बहुत थोड़े रहैत छैक, एक्शने बेसी, तथापि श्रीफणिदा संवाद वाक्यकेँ आरो छोट करय कहैत छथि । ई अन्यभाषाभाषी मैथिलीक ध्वनि पकड़बामे एकदम पानि-पानि भऽ जाइत अछि । एक वाक्यकेँ पाँच-पाँच बेर उच्चारण करैत छिऐक आ ई खाली मुँह दिस तकैत ठोरक संचालन पर बकध्यान लगौने रहैत अछि तखन स्वयं बजबाक प्रयास करैत अछि । १२.३०मे टैक्सी मङा देलक तँ सोझे डेरा अयलहुँ । भोजन की करब, कतऽ करब एही तारतम्यमे मोसम्मीक रस एक गिलास पीबि विश्राम करऽ गेलहुँ, किन्तु अन्नक अभावमे निद्रा नहिएँ भेल । एकबेर लघुशंका भेलाक बाद फक-फक करऽ लगलहुँ तँ बनारसीक ओतऽ जाय चारिटा पूरी खयलहुँ आ ३/३७, ४/२३, १/१४ पर बैसि वाक्य सबकेँ यथाशक्ति सरल बनयबामे माथा पच्ची करैत रहलहुँ । ४.२५ मे खारमे ट्रेन पकड़लहुँ । गाड़ीमे हमर वेश-भूषा

देखि एक व्यक्ति समीप ससरि अयलाह । बम्बैक हेतु यद्यपि ई असभ्यता बूझल जाइत छैक तथापि ओ व्यक्ति हमर परिचयक जिज्ञासा कयलनि– मुझे लगता है कि आप शायद बिहार से आये हैं । हमरा हुनक वेश-भूषासँ कनेको आभास नहि भेल जे ई मैथिल थिका, तथापि हम मैथिलीएमे कहलियनि– बिहारसँ तँ अयले छी, ताहूमे मिथिलासँ । तखन हुनक उत्सुकता आरो बढ़ि गेलनि आ आत्मीयताक भाव जेना मुखमण्डलपर झलकि उठलनि, किन्तु हमर मैथिली वाक्य सुनलोपर फेर पुछलनि– मिथिलाके किस जिले से ? हम फेर कहलियनि– जँ अहाँ मिथिलाक जिला-जिलासँ परिचित छी तँ ओहिठामक भाषासँ सेहो परिचित होयब । तखन ओ कहलनि– जरूर-जरूर, इसीलिए तो आपने जो कहा है, मैं समझ गया हूँ । हम पुछलियनि– बुझिते टा छिऐक की बाजहु अबैत अछि ? तखन जेना हुनका हमर कट्टरताक किछु भान भेलनि । कहलनि– बाजहु अबैत अछि, किन्तु एहि ठाम अवसर कदाचिते भेटैत अछि तेँ जीह पर हिन्दीए सवार रहैत अछि । तखन हम अपन परिचय देलियनि आ बम्बै धरि पहुँचबाक कारण सेहो, किन्तु हुनकर मुद्रासँ बुझना गेल जे मैथिली साहित्य तथा मैथिलीक गतिविधिसँ अपरिचिते नहि, उदासीन सेहो छथि । अपन परिचय दैत हुनकर परिचय सेहो पुछलियनि तँ ज्ञात भेल जे राढ़ी गामक निवासी, श्रीयुगलकिशोर झा, वैरामजी जीजीभाई इन्स्टिच्यूशन, चर्नीरोड, बम्बै ४ मे हिन्दीक शिक्षक छथि । हिन्दीमे कहानी सेहो लिखैत छथि । अन्धेरी धरि संगहि अयलाह । एहि ठाम भोजनक परम कष्ट होइत अछि से हमरासँ ज्ञात भेला उत्तर ओ स्टेशनक सामने एक गुजराती होटल देखबैत कहलनि– हमरा लोकनिक जीह तँ एहिठामक स्वादकेँ अङेजि लेने अछि, किन्तु मिथिलासँ आयल लोकक हेतु गुजरातीक भोजन बहुत किछु सन्तुष्ट करबामे सहायक होइत छनि, तेँ आइ ओहि ठाम जा कऽ जँचिऔक । हम उतरय लगलहुँ तँ काल्हि स्कूलसँ घुरतीमे हम अहाँक डेरापर आयब से कहि ओ जोगेश्वरी चल गेलाह । हम स्टूडियो गेलहुँ । किछु काल श्रीनवेन्दुदाक संग काज कयल । आठ बजे आबि ओही होटलमे भोजनकरऽ गेलहुँ । मारवाड़ी बासाजकाँ पहिने रोटी तखन अन्तमे भात, विविध व्यंजन आ अन्तमे कटोरी सबमे पौरल दही आ ताहिसंग गूड़क छोट सन ढेप सेहो । आन ठामक अपेक्षा एहिठामक भोजन अवश्य रुचिगर लागल, किन्तु मारवाड़ी बासाक समान पवित्रतामे किछु न्यून बूझना गेल ।

आइ ३/३७, ४/२३ आ १/१४क सौर्ट लेल गेलैक । वर्षा आ उच्चारण दूनू अकच्छ कऽ देलक । ६.१५ भोर धरि शूटिंग चललैक तेँ सूर्योदय होइत होइत सात बजे डेरा घुरलहुँ।

१.८.६४

आइ तिलक जयन्ती थिकैक । एहि उपलक्षमे नगरक बहुतो मिल तथा कार्यालय बन्द रहलैक । महाराष्ट्री लोकनिमे एहि पर्वक हेतु विशेष गौरव-बोध । ओना

बालगंगाधर तिलकसँ सम्पूर्ण भारत अपनाकेँ गौरवान्वित अनुभव करैत अछि, तेँ विभिन्न संस्था द्वारा अपना-अपना स्तर पर ई जयन्ती बड़े उत्साहसँ मनाओल जाइत अछि ।

गत रातिभरि जागरण होयबाक कारणेँ भरि इच्छा स्नानकऽ श्रीगोविन्दजीक कथा संग्रह 'दहो बहो नोर' पर पाँचपाँती लिखि गान्धीनगर जयबाक हेतु सोचि रहल छलहुँ, किन्तु जप करैत काल औंधी लागि जाइत छल, तेँ विलम्ब भऽ गेल । पछाति ज्ञात भेल जे हुनकर कार्यालय फुजले छलनि । विलम्ब भऽ गेलाक कारणेँ तथा आलस्य सेहो होयबाक कारणेँ विश्रामे करबाक निश्चय कयल । तेँ बनारसीक ओतय जा दूध पीबि अयलहुँ आ किछु काल सूति रहबाक विचार कयल, किन्तु होटलक नोकर चक्रवर्त्ती घरकेँ बढ़ारय आ पोछय चल आयल । तेँ आँखि लगले छल कि निन्न टूटि गेल । ओकरा गेलाक बाद देवाशिष (बगलवाला कोठलीमे रहनिहार राजस्थानी एक दम्पतीक आठ वर्षक बालक) खेलाइत पहुँचि गेल । विश्राम करबाक मनसूबा बन्हनहि रहि गेलहुँ । ११.३० मे अन्धेरी बिदा भऽ गेलहुँ ओही गुजराती होटल जाय भोजन कयल । अनेक मैथिल वेषधारी लोकनि एहिठाम मासिक भोजन करैत छथि से आइ अयला उत्तर ज्ञात भेल । १२.३०मे भोजन कऽ घुरलहुँ । एक बजे श्रीधनू (लालबाग दरभंगाक श्रीभैरवबाबूक बालक) पहुँचि गेलाह । ओ सूचना देलनि जे 'मिथिला-मण्डल'क दिससँ आइ तिलकजयन्ती मनाओल जा रहल छैक, ताहिमे अवश्य उपस्थित होइ । हुनका बिदा करैत २ बाजि गेल, तखन सूति रहलहुँ से सोझे ५ बजे निन्न टूटल । श्रीयुगलकिशोरजी ठीक चारिबजे पहुँचि गेल छलाह, किन्तु जगौलनि नहि, प्रतीक्षामे बैसल रहलाह । उठलापर कहलियनि– अहाँ जगा किएकने देलहुँ ? ओ मुस्की भरैत कहलनि– ई बम्बै थिकैक । एहिठाम सुतबाक कोनो निश्चित समय नहि होइत छैक । तीन शिफ्ट काज चलैत छैक तेँ सूतल व्यक्तिकेँ उठायब बड़का अपराध बूझल जाइत छैक ।

६ बजे श्रीगोविन्दजीक संग तारदेव (महल्ला) श्रीशान्तिनाथ बाबूक ओतय पहुँचलहुँ । मिथिला मण्डलक दिससँ तिलक जयन्ती मनयबालै २५-३० व्यक्ति मैथिल प्रतीक्षामे छलाह । गोष्ठी बेस जमल रहलैक । श्रीउदयभानुसिंह आ श्रीगोविन्दजीक संग ओतहि रातुक भोजन कयल । ११.४०मे डेरा घुरलहुँ ।

आइ बम्बै सेन्ट्रल देखल । ई पश्चिमीय रेलवेक टर्मिनस स्टेशन थिकैक । एहिसँ आगाँ लोकल ट्रेनमात्र जाइत छैक । एहिठाम यातायातक व्यवस्था हम भारतवर्षमे जतेक ठामधरि गेलहुँ अछि, ताहिमे सबठामसँ अधिक सुविधाजनक बुझना जाइत अछि बस तथा लोकल ट्रेनसँ । बस सर्विसकेँ 'BEST' कहल जाइत छैक । विभिन्न बस स्टैण्डसँ विभिन्न भाग दिस बस चलैत रहैत छैक जे सम्पूर्ण महानगरीकेँ व्याप्त कयने

रहैत छैक । कठिनता ई छैक जे सब रूटकेर बस नम्बर नहि बूझल रहने यात्रा करब संभव नहि छैक, किन्तु ताहि हेतु मार्गदर्शिका छपल बिकाइत छैक ।

ई वस्तुतः महानगरी थीक । एहिठाम लक्ष्मी आ दरिद्रा दूनूक पलरा अपना अपना स्थान पर ततेक लऽत छनि जे एहिसँ बेसी कहल नहि जाय सकैछ । सम्पूर्ण नगरमे मध्यमध्यमे पानि भरल, सड़ल पानि, महकैत महल्ला, ताहि बीच-बीचमे अद्भुत खोभाड़ सन घर सब, जाहिमे पीलु जकाँ निवास करैत असंख्य जनसमुदाय । चारूभाग छिड़िआयल नगर । बीच-बीचमे आलीशान फ्लैट सब बनल । ३००/- (ताहि दिनुक) धरि पौनिहार नोकरिहाराक हेतु एहि फ्लैट सबमे स्थान भेटब दुर्लभ। फ्लैट सभक योजनाबद्ध निवास, सभकेँ नम्बरसँ बन्हने । यदि फ्लैट नम्बर नहि बूझल अछि तँ बौआय आउ, गन्तव्य स्थानपर पहुँचव असंभव । स्थान प्राप्त करबाक हेतु एहिठाम पगड़ी सिस्टम छैक जे न्यूनतम दू हजार । दू हजारसँ कम पगड़ीपर मनुष्यक आवास योग्य स्थान सर्वथा दुर्लभ । खोभाड़मे निवास कयनिहारक संख्या अधिक । दोसर दिस पानक दोकान कयनिहार सेहो कार रखने । अति व्यस्त जीवन, क्यो ककरोसँ एक शब्द बजनिहार नहि । एहि ठाम काशीधरिक जे लोक अछि तकरो विहारीसँ बहुत अपनत्व भाव बुझना जाइत अछि । एहि ठाम महाराष्ट्रक निवासी लोकनिमे प्रान्तीयताक कट्टरता बहुत बेसी । बिनु मराठी सिखने जीविका प्राप्त करब परम कठिन । एहि नगरमे विद्वान थोड़ नहि, किन्तु पारस्परिक सौमनस्यक अभाव, तकर एक झलक आइ भेटल । महालक्ष्मी, खार एवं जोगेश्वीमे मैथिलक अड्डा, ओना परेल, बान्द्रा बोरीवली, घाटकोपर, अन्धेरी ताहू सबमे मैथिल लोकनि छथि ।

२.८.६४

आइ शूटिंग नहि छल । रवि थिकैक । श्रीगोविन्दजीक संग किछु प्रमुख स्थान देखि अयबाक योजना बनि चुकल अछि ।

एहि ठामक जनसाधारणक जीवन-यापन अतिशय दुर्बह भऽ रहल छैक । अन्न, फल, तरकारी ततेक महग छैक जे २००/- रु० मासिक धरि कमयनिहार दालिभात तरकारी तीनू वस्तु नहि खा सकैत अछि । दालि खाइत अछि तँ तरकारी नहि आ तरकारी खाइत अछि तँ दालि नहि । घृत नामक कोनो पदार्थ एहि ठामक जनसाधारणक हेतु होइते ने छैक । मीठा तेलक व्यवहार ओ मेरिचाइक व्यवहार प्रचुर मात्रामे होइत देखैत छिऐक ।

दूधक केन्द्र महाराष्ट्र सरकारक दिससँ यद्यपि सब महल्लामे स्थापित भेल देखैत छिऐक, तथापि कतोक एहनो व्यापारी अछि जे अपन गुहाल बनाकऽ रखने अछि जाहिमे डेढ़-डेढ़, दू-दू सय महींस पोसने अछि, किन्तु विशेषता ई छैक जे सबटा दूध महाराष्ट्र सरकारेक माध्यमसँ सप्लाइ होइत छैक । खानगी रूपमे दूध बेचब अपराध

मानल जाइत छैक । महींस सबकेँ मशीनसँ दूहल जाइत छैक जे मशीनेक माध्यमसँ दुग्धोत्पादन केन्द्र पहुँचि बोतल-बन्द भऽ जाइत छैक । गोवर खादक रूपमे बिका जाइत छैक । गुजराती महींस तँ अपनो सभक ओहिठाम नामी छैक, तेँ एक-एक महींसकेँ पर्याप्त दूध होइत छैक । ट्रेन, बस, टैक्सी आदिसँ घुमैत काल एहन महींसक बथान अनेक देखबामे आयल । बथानकेँ एहि ठाम तबेला कहैत छैक । दूध सबठाम शुद्धे भेटैत छैक । गायक झुण्ड ओहिना सड़कपर बौआइत रहैत छैक आ रातिमे १५-१५, २०-२०क झुण्डमे सड़के कातमे बैसल रहैत छैक, किन्तु गाइक दूध भेटब बहुत कठिन होइत छैक ।

दही भोजनक अभिन्न अंग जेना मानल जाइत होइक । प्रत्येक होटलमे एक कनमादही छोट-छोट स्टेनलेस स्टीलक कटोरीमे पौरल जाइत छैक जे प्रायः रिफ्रेजिटरमे जमबैत छैक आ प्रत्येक पत्तलपर एकटा कऽ कटोरी देले जाइत छैक, मुदा से दही पाउडरवाला दूधक बनल बुझाइत अछि । लऽसि एक रत्ती नहि । मुख्य फल केरा आ नारिकेर थिकैक जकर उपभोग साधारणसँ साधारणो लोक करैत अछि । बालबच्चा सहित सड़कक कातमे राति बितौनिहारोक संख्या नगण्य नहि कहल जा सकैछ । नगरक मध्य-मध्य घासक उपजा मुख्य रूपसँ होइत छैक । कतहु-कतहु धानक रोपनि होइत सेहो देखबामे आयल । छोट-छोट पहाड़ सब छैक आ तकर उपत्यकामे बसल नगरक एक हिस्सा । एहिक्रमेँ सौंसे नगर छिड़िआयल छैक जकरा सबकेँ बस तथा ट्रेनसँ सम्बन्ध जोड़ल छैक । बिरारसँ चर्च गेटधरि आ दोसर भाग बोरीबन्दर, चेम्बूर आदिकेँ क्रमशः सेन्ट्रल रेलवे आ वेस्टर्न रेलवे जोड़ैत छैक । बीच-बीचमे समुद्रक खाड़ी छैक जाहिमे पानि पैसि जाइत छैक आ पानि हटलापर नोन जमि जाइत छैक, तेँ नोन उत्पादन कारखाना एहने क्षेत्रमे छैक । चेम्बूरमे सबसँ बेसी नोन बनैत छैक ।

वान्द्रा, दादर आ सेन्ट्रल बम्बै ई तीन गोट रेवले जंक्शन छैक जाहिठाम एक रेलवेक यात्री दोसर रेलवेक हेतु बदली करैत अछि । सम्पूर्ण बम्बैकेँ रेलवे दू भागमे बँटैत छैक– ईस्ट बम्बै आ वेस्ट बम्बै । उत्तरे-दक्षिणे साधारणतः रेलवे छैक । तीन भागमे समुद्र रहलाक कारणेँ एक भागमे पुरिबा तँ दोसर भागमे पछबा बसात बहैत छैक। एहि समुद्री हवाकेँ देहमे लगला उत्तर देह जेना चिप-चिप करऽ लगैत छैक। स्लैडर सेन्टर अनेक छैक । माछक सुकठी काठमाण्डू जकाँ एतहु बहुत बिकाइत देखलिऐक । सेन्ट्रल बम्बैमे पुरान ढंगक मकान आ सघनवस्ती, किन्तु चारूकात चमड़ाक गन्धसँ नाक फटैत ।

आइ ९ बजे श्रीगोविन्द जीक ओतऽ चलि देलहुँ । गान्धीनगरक सरकारी फ्लैटमे डेरा छनि । एही गान्धीनगरमे सझुआड़ निवासी श्रीजयकृष्ण ठाकुर, जे १९४८ई.मे, जखन छात्रावास अधीक्षक रही तँ अपन गौआँ श्रीजगनारायणझा, पँजियाड़नामेँ प्रसिद्ध

छात्रक संग हमरा ओतय देखने रहथि, सेहो रहैत छथि । हमरा देखि बहुत आह्लादित भऽ उठलाह । १२ बजे दिनमे दुराग्रह पूर्वक भाङ पिऔलनि, अपना डेरेपर सिंघाड़ा बना जलखै करौलनि । २ बजे श्रीगोविन्दजीक ओतय भोजन कयलहुँ । एहि ठाम वर्षाक कोनो ठेकान नहि, देखिते-देखिते कोम्हरहुसँ फुहार पड़य लागत जेना क्यो स्प्रे चला रहल हो । आइ बुन-बुन करिते रहलैक । सर्वश्रीगोविन्दजी, जयकृष्णजी आ रत्नेश चारूगोटे मुम्बा देवीक दर्शन करऽ गेलहुँ । नल बाजारमे ई स्थान छैक । मुम्बा देवी एहिठामक आदिवासी कोले जातिक देवता थिकथिन । ई जाति समुद्रमे माछ मारि, तकरे व्यापारसँ जीविकोपार्जन करैत अछि । एही देवीक नाम पर एहि स्थानक नाम मुम्बई पड़लैक । मराठीमे एखनहु बम्बैकेँ मुम्बई सैह कहैत छैक । पजियाड़क डेरा सेहो एहीठाम छनि ।

एहि ठाम एकटा पानक दोकान छैक जाहिमे दू आनासँ लऽ १००/- रु० खिल्ली धरि पान बिकाइत छैक । दिनसँ बेसी रातिकऽ एकर बिक्री अधिक होइत छैक। लाखपतीकेँ के पूछय, करोड़पती लोकनि पर्यन्तकेँ पंक्तिमे बीस-बीस पचीस-पचीस मिनट ठाढ़ रहय पड़ैत छनि तखन पान उपलब्ध भऽ पबैत छनि । ई लोकनि कहलनि जे तेहन-तेहन मूल्यवान रसायन दऽ ई पान लगबैत अछि जे स्तम्भनक काज करैत छैक । एहि दोकानक पान खयबाक दुराग्रहमे ई लोकनि आध घंटासँ अधिक समय नष्ट कयलनि । हमरातँ डाँड़ दुखाय लागल, जान अकच्छ भऽ गेल, किन्तु जनिका लोकनिकसंग छलहुँ तनिक उपेक्षा कोना कयल जाय ? पजियाड़क डेरा पर जाय सायंकालीन विजयाराधन करैत गेलहुँ आ ओहि ठामसँ चेम्बूर बिदा होइत गेलहुँ। ७.१५मे सनकोर्थ निवासी श्रीमहेश्वरबाबूक डेरापर जाइत गेलहुँ । बाटमे एक एक प्लेट फ्रूट सलाद खाइत गेल रही । श्रीमहेश्वरबाबूक ओहिठाम गतगर कऽ जलपान भेलैक । ९.३०मे कहरा, (सहरसा) निवासी श्रीतृप्तिनारायणझाक डेरापर जाइत गेलहुँ। कतबो कहला पर ओहो नहि मानलनि आ जलपान करहि पड़ल । डॉ० श्रीबदरीनारायण झाक डेरा सेहो एही महल्लामे छनि । ओ गत अप्रैलमे दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल छलाह । प्राणेबाँचि गेलनि से एक लाख । एतेक दिन बीति गेलनि तथापि एखनहु धरि कतहु आयब जायब डाक्टर मना कयने छनि । ओ गाविन्ददासझा पर शोधकार्य कयने छथि। श्रीतृप्तिनारायणझाक डेरापरसँ हमरा लोकनि हुनके डेरापर जाइत गेलहुँ। वर्षा से झिस्सीसँ फुहार आ फुहार सँ झमकौआ रूप धारण कऽ लेने अछि। श्रीमहेश्वरबाबूक डेरापर श्रीयुगलकिशोरजी सेहो भेटि गेलाह । तेँ चारिसँ पाँच गोटे भऽ गेलहुँ । बाहर होयबाक स्थिति जाधरि नहि होइत छैक ताधरि श्रीबदरी बाबूक उक्त शोधग्रन्थ देखैत रहलहुँ । ११ बजे ओहि ठामसँ चलैत गेलहुँ । मात्र दू मिनटक हेतु चेम्बूरमे ट्रेन छुटि गेल । तकर बाद पैंतालीस मिनट बैसय पड़ल । १.५ मे डेरा पहुँचलहुँ। भोजन ततेक अपेक्षित नहि छल ।

श्रीमहेश्वरबाबूसँ ज्ञात भेल जे नासिकसँ १८ मील दूरपर त्र्यम्बकेश्वर नामक स्थान छैक जे पहाड़ पर छैक । यैह पहाड़ गोदावरी नदीक उद्गम स्थल थिकैक । एहि ठाम राम, लक्ष्मण ओ सीताक प्रतिमा छनि जे बालुक थिकैक । एक बेर ओहिपर वज्रपात भेलैक जे रामक प्रतिमाक माथ पर खसलैक आ रामक मुँह बाटेँ बाहर भऽ गेलनि, किन्तु प्रतिमा अच्छिन्न रहि गेलैक । सूर्योदयक प्रथमकिरण रामक पैर पर पड़ैत छनि । एहीठाम दोसर-शिखर पर शिवमन्दिर छैक जाहिठाम जलधरी पर गोदावरीक एक क्षीण स्रोत सतत प्रवहमान रहैत छैक । सूर्यास्तक कालमे सूर्यक किरण महादेवक मस्तकपर पड़ैत छनि । ई स्थान दर्शनीय अछि ।

३.८.६४

आइ सिक्वेंसपर बैसबाक छल । काल्हिजे शूटिंग छैक तकरो तैयारी अपेक्षित अछि, सैह सब सोचि सबेरे स्नानादिसँ निवृत्त भेलहुँ । यद्यपि राति २ बजेक बादे निंद्रा भेल छल तथापि ६.१५मे निन्न टूटि गेल । अन्धेरीमे भोजन कऽ १०.१५ मे स्टूडियो पहुँचि गेलहुँ, मुदा एखन धरि क्यो ने आयल छलाह । औंघी लागि रहल छल । श्रीफणिदा ओ श्रीनवेन्दुदा ११.३० मे पहुँचलाह । मुंशीजी सेहो अयलाह, हुनकासँ खर्चक हेतु टाकालेल। राति जे वर्षा पकड़लैक से धयनहि छैक । श्रीफणिदा वर्षाक कारणेँ काज आगाँ बढ़ब असंभव बुझि पुनः ६ बजे आबय कहलनि तेँ १ बजे खार घुरि अयलहुँ। श्रीयुगलकिशोरजी काल्हि अपन लिखल चारि गोट हिन्दीक कहानी देखबाक हेतु देने छलाह, ताहिमेसँ एकटाकेँ देखलहुँ । २ बजे विश्राम करऽ लगलहुँ। वर्षा भइए रहल छलैक, किन्तु यद्यपि रातिओ भरिपोख सुतबाक समय नहिएँ भेटल छल, स्टूडियोमे आँखि फुटैत छल, तथापि बेर उनहि गेलाक कारणेँ निद्रा नहि भेल, केवल झपकी लैत रहलहुँ। ५ बजे चाह मङाकऽ पीबि स्टूडियो जयबाक हेतु प्रस्तुत भेलहुँ, तावत वर्षा झमकऽ लगलैक । तथापि ६ बजे स्टूडियो पहुँचि गेलहुँ तखन सूचना भेटल जे अहाँकेँ तँ फोन कयल गेल छल जे एहि वर्षामे जुनि आबी । हम तँ झमाझम वर्षेमे बिदा भेल छलहुँ। एहिठाम वर्षामे चललासँ बड़ आनन्द अबैत छैक । सड़क सबपर पानिक धार बहय लगैत छैक । नाला सब उमड़ि जाइत छैक । नगरक बीच-बीचमे जे पहाड़ी छोट-छोट नदीसब छैक ताहिमे बाढ़ि आबि जाइत छैक आ किछुए काल वर्षा बन्द भऽ गेलापर भुतही बलानजकाँ सुखाइतो बेसी देरी नहि लगैत छैक ।

स्टूडियोमे काज नहि रहलाक कारणेँ आइ प्रसादजीक डेरा ताकऽ चललहुँ । ई 'नैहर भेल मोर सासुर'क यूनिटमे राजनगरमे परिचित भेल छलाह । हिनक डेरा धीरजलाल भगवानजी विल्डिंग ओल्ड रास्तामे छनि । दीपक, राजू, मुन्नीसँ भेट भेल। भाभीजी चाह पियौलनि । एक घंटा प्रतीक्षा कयलाक बाद ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ । अन्धेरी स्टेशनक पूल पर श्रीप्रसादजी भेटि गेलाह । कहलियनि– अभी आपके डेरे पर

से एक घंटा इन्तजार कर लौट रहा हूँ । प्रसादजी खेद व्यक्त करैत कहलनि– मुझे खेद है कि मेरी अनुपस्थितिमे आपको बोर होना पड़ा होगा । अच्छा बताइये मेरी श्रीमतीजीने कुछ आव-भगत किया कि नहीं ? कहलियनि– बोर नहीं होना पड़ा । बच्चोंके साथ खूब खेलता रहा । भाभीजीने चाय भी पिलायी । बहुत खुश मिजाज हैं । आखिर बम्बई में रहती हैं न ? प्रसादजी मुस्कुराइत कहलनि– कुछ शक करने की गुंजाइश तो नहीं है ? हम ठट्ठा करैत कहलियनि– मुझपर या भाभीजी पर ? हुनक उत्तर छलनि– मैं तो दोनों पर कर सकता हूँ । हम कहलियनि– मेरे तो बम्बई आये अभी पन्द्रह दिनभी पूरे नहीं हुए हैं, फिर उस्ताद बनने में तो बहुत दिन लगते होंगे । एहिपर प्रसादजी ठठाकऽ हँसलाह आ पुनः गंभीर होइत बजलाह अरे भई ! यह शहर जो है सो सेठो और स्टारों के लिए या फिर नंगों और भिखभंगों के लिए । बीच-बीच का आदमी तो पिस जाता है यहाँ । किसी तरह जिन्दगी की गाड़ी को खींचे लिये जा रहा हूँ । नाश्ता-वास्ता तो कुछ हुआ ही नहीं होगा । घर तो खाली था । देखिये झोले में मार्केटिंग किये जा रहा हूँ । गनीमत है कि आपको चाय भी मिल गयी । अन्धेरीमे भोजन कऽ ९.३० मे डेरा अयलहुँ । श्रीउदयभानुजीकेँ आइ फोन कयने छलियनि, तेँ ओ २८, २९ आ ३१ जुलाइक आर्यावर्त्त पठबा देने छलाह । हपसि कऽ तकरा सबकेँ सोटऽ लगलहुँ । एहिठाम अपना प्रान्तक कोनो समाचार नहि प्राप्त होइत अछि तेँ जी उबिआइत रहैत अछि । हँऽ, आइ खार घुरैत काल चलैत ट्रेनमे चढ़बाक चेष्टा करैत दुर्घटनासँ बँचि गेलहुँ । एतऽ प्लेटफार्मेपर ट्रेन ३० माइल गति पकड़ि लैत छैक । ११.३०क बाद विश्राम कयल, किन्तु ३.३० मे निद्राभंग भऽ गेल । आइ पेट खूब ठीक नहि रहल । बनारसीक दोकानक छौंड़ा पदारथ नामक नौआसँ परिचय करा देलक । ओ कहलक जे सातबजे भोरमे आबिकऽ हम बीस मिनट मालिस कऽ देब । पैखानासँ आबि डायरी लिखि पुनः ५ बजे सुति रहलहुँ ।

४.८.६४

आइ १० बजे स्टूडियो जयबाक छल । पदारथ हजाम नहि आयल । वर्षा झहरि रहल छैक । अन्धेरीमे भोजन करैत समय पर स्टूडियो पहुँचि गेलहुँ, किन्तु श्रीफणिदा अपने विलम्बसँ अयलाह । हुनका संग बैसि फोर्थ आ फिफ्थ सिक्वेंस, जाहि दूनूमे सी.सी. मिश्रा, कुक आ झारिखंडीनाथक काज छैक, फाइनल कापीपर सबकेँ बैसि कऽ सोझरौलहुँ-ताहिमे डेढ़ बाजि गेल । बहुत थाकनि बुझना जाइत छल । ३-१५ धरि सेट तैयार नहि भेल छलैक, तेँ श्रीफणिदा सँ समय लऽ खार चलऽ लगलहुँ तँ श्रीफणिदा कहलनि– पण्डितजी, आपनार तो अनेक दरकार नाइँ । नही समझा ? आज तो प्योर हिन्दी डायलाग है, इसलिए आप अगर आराम भी करें तो कोई क्षति नहीं । हमहूँ आइ पलखतिए चाहैत छलहुँ । फेर कहलनि– आप अगर आना चाहें तो आ भी

सकते हैं। ओही वर्षामे बरिसाती जूताकेँ फचफचबैत मौर्डन आ कमाल स्टूडियो देखैत खार अयलहुँ । बाटमे सड़क पर भरि-भरि छाबा पानि बहैत छलैक । डेरा पहुँचितहि श्रीसत्यनारायणजी (सिंगिया) आ श्रीदुःखन (श्रीशिवाकान्तपाठक) केर चिट्ठी भेटल। तुरन्त उत्तर लिखि देलियनि । स्वीटहोमकेँ सेहो चिट्ठी लिखलियनि । परसू गोस्वामीजीक खोज करय बोरीवली गेल छलहुँ, मुदा भेटलाह नहि । एकटा पुर्जी लिखि तालामे खोंसि देने छलियनि, तथापि एखनधरि कोनो सम्पर्क नहि भेल अछि।

ततेक वर्षा भेलैक अछि जे डेरासँ बहरयबाक इच्छा नहि होइत छल । श्री युगलकिशोरजीक चारू कहानी देखि लेलियनि । आइ सिकन्दर आयल छलाह । हमरा बगलवाला रूमनं० १२ मे ब्रज को रसिया (ब्रजभाषाक फिल्म)क प्रोड्यूसर श्री एच्. एल्. वत्रा रहैत छथि । सिकन्दर हुनकासँ परिचय करौलनि । बहुत काल धरि गप्प होइत रहल । वत्रा साहेब कहलनि– आपको शायद मालूम नहीं होगा कि सिर्फ अशोक कुमार को ऐसा हुआ था कि सेट पर आकर आर्टिस्ट बदल गया । प्रोड्यूसर को मजबूरीमे बदले में अशोककुमार को वह रौल देना पड़ा, फिर इस शख्स को मौका मिल गया तब जो वह चमका तो आज उसकी क्या हैसियत है, दुनियाँ जानती है । आपका भी सितारा चमकेगा । इनसे ही सुना कि बिना किसी रिहर्सलका आपका फर्स्ट शौर्ट ओ. के. हो गया । मुझे पूरा यकीन है कि आपका सितारा जरूर बुलन्द होगा। ई ब्रजभाषामे दोसर फिल्म 'भक्त सूरदास' बनबऽ जा रहल छथि । हम उत्तर देलियनि–

देखिये बत्रा साहेब, मैं किसी आर्थिक लालच से या कोई महत्त्वाकांक्षा लेकर बम्बई नहीं आया हूँ, इस लाइनमे कोई अधिक दिलचस्पी भी नही रखता हूँ । मेरा तो मातृभाषाका विकास करना एक मात्र व्रत है जिसे एक शिक्षकके रूप में ज्यादा निभा सकता हूँ । शिक्षाके क्षेत्रमे आज भी बहुत कुछ अनुशासन बरकरार है, यहाँ तो अनुशासन नामकी कोई चीज ही नहीं है, जो कम से कम मुझे बहुत खटकता है । दूसरी बात हम ब्राह्मण परिवार से आये हैं जहाँ आचार का बड़ा महत्त्व है, यहाँ उन सबको छोड़-छाड़ कर ही कोई जम सकता है । वत्रा साहेब विस्फारित नेत्रसँ हमरा दिस तकैत रहलाह आ हमर वाक्य पूर्ण भेलापर कहलनि– पण्डितजी, दुनिया मे पूछ उसीकी है जिसके पास पैसे हैं । अगर आप यहाँ जम गये तो जरा सोचिए आपकी जिन्दगी कितनी खुशहाल हो जाएगी ? दान-पुन्न, तीर्थ-व्रत, यज्ञ-अनुष्ठान आदिके लिए भी तो पहले पैसे ही चाहिए और जो आर्टिस्ट है, उसके लिए लक्ष्मी का खजाना खुला ही रहता है । आप आर्टिस्ट हो, इसमें कोई शक नहीं । इसीलिए मैं कहता हूँ, कुछ दकियानूसीको छोड़कर आप अपना रास्ता जरूर बदलो और जमा लो पाँव यहाँ। टाल्सट्ायने कहा है– धीरज रखो तो बिगड़े काम बन जायेंगे, मगर धीरज न रखने पर हमेशा काम बिगड़ते ही हैं । विदुरनीति में कहा गया है– धैर्य शक्ति है और अधीरता कमजोरी है ।

उत्तर देलियनि– आपने नीतिकी बात कही । नीति कहती है– 'सन्तोष एवं पुरुषस्य परं निधानम्' अर्थात् पुरुषकी सबसे बड़ी सम्पत्ति सन्तोष है । जहाँ सन्तोष है वहाँ अधीरता का सवाल ही नहीं है । और कहा गया है– 'सन्तोषामृत तृप्तानां यत्सुखम् शान्तचेतसाम् । कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्चधावताम् ।' यानी सन्तोष रूपी अमृतसे जिसका मन तृप्त है उसे जो सुख मिलता है, धन चाहने वालों को, जिनका मन हमेशा धनके पीछे इधर-उधर दौड़ता रहता है, वह सुख कहाँ से नसीब होगा ? इसलिए मुझे लक्ष्मीका खुला खजाना नही, सरस्वतीका आशीर्वाद चाहिए । वत्रा साहेब पुनः कहलनि– तो आप यहाँ सरस्वतीका आशीर्वाद पाने आये हैं ? बम्बई सरस्वतीके आशीर्वाद पाने की नही, लक्ष्मीकी कृपा पाने की जगह है । सरस्वतीका आशीर्वाद पाने के लिए आपको वाराणसी जाना चाहिए । उत्तर देलियनि– साक्षात् सरस्वतीका अगर नहीं तो सरस्वतीके एक वरद पुत्र का आशीर्वाद मुझे यहाँ आने पर भी मिल सकता है और मिला है ।

वत्रासाहेब - कौन है वह सरस्वती का वरद पुत्र ?

हम - जिनके उपन्यास का प्लाट लेकर यह फ़िल्म बन रही है ।

वत्रा - क्या नाम है उनका ?

हम - प्रो. श्रीहरिमोहनझा ।

वत्रा - ये कहाँ और किस सबजेक्टके प्रोफेसर हैं ?

हम - पटना युनिवर्सिटी में फिलासफी के ।

वत्रा - फिलासफी ? फिर नोभेल भी लिखते हैं ?

हम - उपन्यास, कहानी, कविता, एकांकी नाटक सब कुछ लिखते हैं और हमारी भाषा के सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्यकार हैं, जिन्हें व्यंग्य सम्राट, हास्य सम्राट भी कहा जाता है और जो ऑल इण्डिया फिलासफी काफ्रेन्स में प्रजाइड भी कर चुके हैं । इतना ही नहीं, कितने लोग उनके अण्डर में पी.एच.डी. कर चुके हैं और सैकड़ो थीसिस के एक्जामिनर रह चुके हैं । साथ ही साहित्य में इनके जोड़ की कलम रखने वाला हिन्दी में भी नहीं मिलता है ।

वत्रा - अच्छा, पण्डितजी, यह तो बताओ कि जैसे ब्रजभाषा में पुराने समयमे महात्मा सूरदास हुए हैं वैसा कोई कवि आप की भाषा में हुआ है ?

हम - आपके सूरदास ने भी जिनके भावों को ग्रहण किया है वे विद्यापति हमारी ही भाषा के कवि हो चुके हैं ।

वत्रा– विद्यापति तो हिन्दीके कवि है ।

हम – तब तो सूरदास भी हिन्दी के ही कवि हैं ।

वत्रा – यह तो हिन्दीवालों की ज्यादती है कि सूरदास, तुलसीदास सबको हिन्दी का ही कवि मान बैठे हैं ।

हम – यही बात विद्यापति के साथ भी है ।

वत्रा – अच्छा, तो विद्यापति मैथिलीके कवि हैं ! पण्डितजी, ऐसे तो साहित्य वाहित्य कुछ अधिक पढ़ने का मौका हम लोगों को मिलता ही बहुत कम है, कभी–कभार कुछ उलटने–पलटने का मौका मिल गया तो मुझे भी विद्यापतिके पद पढ़ने से लगता था कि यह तो अजीव हिन्दी है । विद्यापतिकी भाषासे ज्यादा करीब तो हिन्दी से हमारी ब्रजभाषा है ।

हम कहलियनि इसीलिए आप लोगोंने हिन्दीके सामने आत्मसमर्पण कर दिया, मगर हम लोग डटे रहे और हिन्दीके पेटमें समानेसे अपनी भाषाको बचा लिया ।

वत्रा – संविधानमें तो आपकी भाषा भी नहीं है ?

हम – यही तो हमारा संकल्प है, मगर हिन्दू विश्वविद्यालय, कलकत्ता, काठमाण्डू (नेपाल) विश्वविद्यालय के अलावे बिहार के विश्वविद्यालयोंमें डी.लिट्. तक की पढ़ाई की व्यवस्था है । इस तरह हम अपनी भाषा की अलग पहचान बनाकर रख सके हैं ।

वत्रा – और फिल्म ?

हम – फिल्म तो यह पहली ही है और इसीलिए मैं यहाँ तक आ गया हूँ । पैसा कमाना मेरा उद्देश्य नहीं है ।

वत्रा – फिर भी कुछ कण्ट्रैक्ट तो हुआ होगा ही ?

हम – कोई कण्ट्रैक्ट नहीं, सिर्फ आने जाने और यहाँ जब तक रहूंगा उसकी व्यवस्था मुंशीजी कर रहे हैं ।

एहि पर सिकन्दर वत्रा साहेबकेँ कनखी मारलथिन आ वत्रा साहेब दीर्घ निःश्वास लैत कहलनि– सचमुच पण्डितजी आप इस युगके लायक आदमी नहीं हो, मगर एक बात कह देता हूँ मुंशीजीको किसी सादा कागजपर सिग्नेचर नहीं कर देना । मुंशी फिनान्सरसे तुम्हारे नाम पर वरना बहुत पैसे ऐंठ लेगा ।

एहि ठाम पुरुष ओ स्त्रीगण दूनूमे घोर प्रदर्शनक प्रवृत्ति देखना जाइछ ।

एहिठामक अनुभवी लोक कहैत छथि जे करोड़पती सभक लोक-वेदकेँ जे गहना पहिरने देखैत छिऐक से सब नकली थिकै । देखबामे लागय जे एक-एक टा गहना हीरा-मोती-जवाहारात जड़ल सब छैक ।

आइ पूरा विश्वास छल जे ओझाक चिट्ठी अवश्य भेटत, किन्तु निराशे होअय पड़ल । चि. श्रीमुन्नूजी आ चि. श्रीललनजीक हेतु आइ बड़ उत्कण्ठा भऽ गेल । मुन्नूजीक बोल स्पष्ट भेल जाइत होयतनि । ललनजी आब चलैत होयत । डेराक हेतु चित्त उद्विग्न भऽ गेल, श्रीरत्लेश, आध घंटाक हेतु चाह पान लै बहरयलहुँ तावत, डेरा बन्द कऽ कतऽ दन चल गेलाह । अनेरे थोड़ेक काल बौआइत रहय पड़ल । पता लागल जे एही बीचमे पदारथ हजाम आयल छल, काल्हिसँ आओत से समाद छोड़ि गेल । एकटा प्लास्टिकक गिलास किनलहुँ ।

एकटा बात तँ बिसरिए गेल । आइ श्रीअसित सेनसँ परिचय भेल । एहि फिल्ममे ओ कुककेर भूमिकामे उतरि रहल छथि । शारीरिक गठन आ हाव-भाव, मुखमुद्रा सब किछु हास्य अभिनेता सन स्वतः बुझाइत छनि ।

५.८.६४

आइ शूटिंग छलैक, किन्तु बनारस फ्लैटक, जाहिमे सी.सी. मिश्रा आ झारिखण्डीनाथक काज छलनि । हमरा अनुपस्थितिओमे बहुत सौर्ट लैल जा सकैत छलैक, तेँ ११.१५ मे स्टूडियो पहुँचलहुँ । झारिखण्डीनाथक काज हम आइ सर्वप्रथम देखलिऐक । बहुत नीक कऽ रहल अछि बेचारा । ई गया कलक्ट्रिएटमे नाजिर छथि। छुट्टी लऽ कऽ आयल छथि । 'भैया' मगही फिल्ममे सेहो मुंशीजी हिनका भूमिका देने छथिन । ई फिल्मिस्तानमे स्थायी रूपेँ रहबाक उद्देश्य लऽ आयल छथि । मुंशीजी अपनहु गयावाल आ ई सेहो गयाक थिकाह तेँ अधिक प्रश्रय भेटि रहल छनि । सी. सी. मिश्राक भूमिकामे श्रीगोपाल छथि, मुदा ओ पनिगर नहि बुझाइत छथि । अभिनयक क्षमता झारिखण्डीनाथमे जे छैक तकर पंचमांशो गोपालमे नहि देखल जाइत अछि, यद्यपि अपना मोने गोपाल कन्यादानमे हीरो बनि गेल अछि तेँ अपनाकेँ सुपीरियर मानैत अछि ।

आइओ प्रातः पदारथ हजामक प्रतीक्षा कयल, मुदा नहि आयल । पछाति ज्ञात भेल जे पिछड़िकऽ खसि पड़लाक कारणेँ हाथमे मचोड़ पड़ि गेलैक अछि ।

स्टूडियोसँ हमरा किछुए कालक बाद पलखति भेटि गेल । आइ श्रीगोविन्दजीक ओहिठाम जयबाक छल, तेँ सबेरगरे तैयार भऽ चुकल छलहुँ, किन्तु सुरेश आबि गेल तेँ समय नहि बाँचल तँ स्टूडियो चल गेलहुँ । ओतऽ सँ पलखति भेला पर श्रीरत्लेशक संग गान्धीनगर गेलहुँ, श्रीगोविन्दजी अनुपस्थिते छलाह । श्रीउदयभानुजीक पठाओल

अखबारक पुलिन्दा लऽ २८/२५२३ नं. मे श्रीजयकृष्ण ठाकुरक भेट कयलियनि । ओ विजयानन्दक हेतु खार ईस्ट चलय कहलनि । खार ईस्ट बम्बै, जवाहर नगरमे खोभाड़क जीवन बितौनिहार अढ़ाय-तीन सय मैथिल सब रहैत छथि । श्रीउग्रनारायणजीक सत्प्रयाससँ एहिठाम एकटा शिवलिंगक स्थापना भेल छनि । मन्दिर अढ़ायतीन हाथ ऊँच आ तीन-चारि हाथ नाम चाकर छैक । ताहिपर एस्बेस्टस दऽकऽ मिथिलामण्डल एक मण्डप जकाँ बना देने छैक । एक मात्र ई स्थान बैसबाक योग्य । मैथिल लोकनिक ई मिलन स्थलक काजक संग इन्फौर्मेशन व्यूरोक काज करैत छनि । एहन एहन छोट-छोट घरकेँ खोली कहैत छैक । एहीठाम एक खोलीमे श्रीपरमानन्दजी रहैत छथि जे 'नैहर भेल मोर सासुर'क डाइरेक्टर छथि । सम्प्रति बम्बैसँ अनुपस्थित छथि।

श्रीलक्ष्मीकान्तजी बेचारे एकटा टाका विजयानन्दकेँ देलथिन आ शिलानाथसँ भेट कराय हमरा संग कऽ देलनि ।

हम टाका देबऽ लगलिऐक तँ हमर हाथ पकड़ि लेलनि-- आहि, एहिठाम से कोना होयतैक । हम कहलियनि– लक्ष्मीकान्तक लग वस्तुतः हम धृष्टते कऽ रहल छलहुँ। विजयानन्दजी वस्तुतः आइ बड़भारी सहायता कयलनि । रातिमे खूब फोंफ काटि कऽ सुतलहुँ ।

खार ईस्ट सँ पुनः २.१५ मे स्टूडियो पहुँचलहुँ तँ सब आर्टिस्ट लंचमे छलाह। गोपाल, महिपाल, ब्रजकिशोर सभक संग खूब मनोरंजन भेल । हम तँ ओहि अखाद्यवस्तु सभमे संग देनिहार नहि, तेँ ओ सब हमरा गमार, पिछड़ल, देहाती बुझैत आ हम ओकरा सबकेँ राक्षस, भुक्खड़, असन्तोषी आदि मानैत । श्रीफणिदा आ श्रीनवेन्दुदा भोजन करय डेरा चल गेल छलाह । लक्षण एहन बुझायल जे आइ आब आगाँ काज नहि होयतैक तेँ ३.३० मे स्टूडियोसँ छुट्टी लऽ डेरे पर रहब से सूचना दैत उत्सुकतासँ डेरा अयलहुँ जे आइ गामक चिट्ठी निश्चय ओही दिन जकाँ घरमे फेकल भेटत, किन्तु पुनः निराश होअय पड़ल । चित्त उद्विग्न भऽ गेल । ओछाओन पर पड़ल-पड़ल खोलीमे जीवन बितौनिहार सभक प्रसंग सोचैत रहलहुँ– कोन प्रकारेँ गरीब लोक अपन बाल-बच्चाकेँ छोड़ि हजारकोस दूर आबि एहि खोभाड़मे काहि काटि दू पाइ अर्जन करैत अछि तकर अनुभव कोनो प्रत्यक्ष दर्शीए कऽ सकैत अछि, शब्दमे ओकरा अभिव्यक्त करब परम कठिन । विचार-तन्तु जेना बढ़िते नमरिते गेल– एहि श्रमिक वर्गक ई कष्टमय जीवन आ सुदूर अपना-अपना गाममे रहैत ओकरा सभक लोक-वेदक ठेसी आ संगहि अज्ञानान्धकारमे डूबल एहि श्रमिक वर्गक गाम गेला उत्तर शान-सपेटा। 'हमर समाङ बम्बैमे कमाइत अछि अथवा हम बम्बैमे कमाइत छी" ई अहंकार आदि सोचि हृदय द्रवित भऽ गेल ।

आइ विजयानन्दकेँ सबेर सकाल संगकऽ लेलियनि आ बान्द्रा बिदा भऽ गेलहुँ। श्रीउदयभानुसिंहसँ भेट भऽ गेल । मिथिलामिहिर भेटल । एहिठाम मिथिलामिहिर अथवा आर्यावर्त्त भेटि जाइत अछि तँ जेना हृदय उल्लसित भऽ जाइत अछि । श्रीरत्नेश आइ डेरे पर रहि गेलाह । हम ओम्हरेसँ महालक्ष्मी चल गेलहुँ । ओहिठाम श्रीभागेश्वर (बेला) ततेक आग्रह करय लागल जे रातुक भोजन ओही ठाम विद्यार्थी आश्रममे करय पड़ल । दालि भात, दूटा तरकारी, दूध छल । श्रीजयनारायणझासँ भेट भेल । भोजनोत्तर कनेक लोट-पोट करय लगलहुँ जे तावत ओहो सब खा लेथि । तावत श्रीभागेश्वरक संगी करमौलीक श्रीकालीकान्त भरि इच्छा जाँति देलनि। बम्बैमे आइ पहिल दिन थीक जे क्यो सेवा कऽ देलक । बारह बजे खार घुरि कऽ अयलहुँ । एक तँ विजयानन्दक कृपा ताहिपर श्रीकालीकान्तक सेवा, तेँ आइ निसभेर भऽ कऽ निद्रा भेल । श्रीमहेशशर्मा आ श्रीश्रीधरकेँ पत्र लिखबाक छल, किन्तु काल्हि अपनो मेक-अप पर जयबाक अछि तेँ विश्रामेमे चल गेलहुँ ।

६.८.६४

आइ ४/१९ मे अपनहुँ अभिनयमे उतरबाक छल । एमहर पाण्डुलिपिपर सेहो बैसबाक छल, तेँ स्नानपूजाकऽ बनारसीक ओतऽ दूध पीबि स्टूडियोक हेतु ९ बजे विदा भऽ गेलहुँ । बाटमे एक गिलास मोसम्मीक रस भेटि गेल । ९.३०मे स्टूडियो मे पैसलहुँ से दिन भरि खटैत रहऽ पड़ल । बीचमे १.३० मे सब लंचमे गेल तँ हम सोझे डेरा दौड़ल अयलहुँ जे चिट्ठी भेटत, किन्तु आइओ कोनो पत्र नहि भेटल । भारी मोनसँ पुनः स्टूडियो घूरि अयलहुँ । तुरन्त मेक-अपमे जाय पड़ल । तखन सँ १०.३० रातिधरि कखनहु पलखति नहि भेल । ताहिकारणेँ आइ अतिशय श्रान्तिक अनुभव करैत छी। आइ दिनमे सेहो भोजन करबाक अवसर नहि भेटल । लंचक बेरमे डेरा अबैत काल गुजराती होटलमे गेलहुँ तँ सब किछु समाप्त भऽ गेल छलैक । खारमे बनारसीक ओहिठाम किछु खइतहुँ से एहिठाम आर्डर देलाक बाद बनबऽ लगैत छैक तेँ बेसी समय लागि जाइत, तेँ फेर एक गिलास दूध पीबि लेल आ बाटमे आधा दर्जन केरा कीनल, सैह खाइत गेलहुँ । रातिओ मे श्रीरत्नेश दुराग्रह करय लगलाह जे ब्रजवासीमे चलिकऽ भोजन कयल जाय । ब्रजवासी बनारसीक दोकानसँ पहिने पड़ैत छैक । एमहर जेहने भूख लागल छल तेहने हरवाही रोटी सन भेटल । हम मात्र दूध पीबि चल अयलहुँ ।

एहिठाम प्रत्येक स्टेशन पर 'विशुद्धनीरा पीजिये' लिखल स्टॉल बनल देखैत छिऐक, किन्तु बिकाइत आइ धरि कतहु देखबामे नहि आयल अछि । एहिठाम बगलकेँ बाजू, झंझटकेँ 'लफड़ा', पैखानाकेँ 'संडास', महिसिक बथानकेँ 'तबेला' कहैत छैक । भैयाक अर्थ होइत छैक मूर्ख, गमार, पण्डितजी सेहो हीने व्यक्तित्वक

बोधक थीक, कोनो आदरक नहि । आदरक सम्बोधन थिकैक सेठ, साहेब । भैया कहला पर तँ एहनो संभावना जे अपना ओहिठाम मूर्ख सम्बोधन कयला पर क्यौ मारि कऽलऽ सकैत अछि तहिना मारि करय लागय ।

आइ एक महाराष्ट्री ज्योतिषीसँ भेट भेल । मराठीभाषाक सम्बन्धमे गप्प करैत 'कतय जाइत छी' एकर मराठी रूप कहलनि– 'कुठऽ जातऽ' ओ तँ अनेक उदाहरण देलनि, मुदा स्मरण नहि रहल । ओना किछु मैथिलसँ ज्ञात भेलजे दू – चारिमास ध्यान सँ पढ़ला उत्तर सामान्य रूपेँ मराठीमे गप्प सप्प करबाक अवगति भऽ जाइत छैक । श्रीभुवन परोक्षमे आबि एक पुर्जी छोड़ि गेलाह जे पुनः काल्हि औताह, मुदा हमतँ काल्हिओ सेट पर रहब तेँ भेट नहिएँ होयत । आइ कोनो नव लोक वा स्थान सँ परिचय नहि भेल ।

७.८.६४

काल्हुक सीनमे जे सीरियस अंश छलैक तकर सौर्ट आइ लेल जइतैक । ओहि हेतु श्रीफणिदा बहुत रिहर्सल लेलनि । बुच्चीदाइकेँ संग लऽ बनारस प्लैट पहुँचब आ सी.सी. मिश्रा द्वारा दुत्कारल गेला पर करुणासँ उमड़ैत आँखिक नोरकेँ रोकैत, अपन अधीरताकेँ सम्हारैत, सी.सी. मिश्राक अनुनय-विनय करैत बुच्चीदाइकेँ धैर्य देअयबाक हेतु ओकरा गाल पर टघरैत नोरकेँ अपना हाथेँ पोछबाक छलैक । नोर पोछबाक काल हाथ रूकि जाइत छल, थरथरा जाइत छल । एक दू तीन चारिम बेर रिहर्सल लेलाक बादो श्रीफणिदा सन्तुष्ट नहि भेलाह । तखन किछु काल काज स्थगित कऽ अपना चेम्बरमे लऽ गेलाह आ कहलनि– पण्डितजी, यह सीन आपके लिए सबसे ज्यादा इमोशनल है जो आपके एक्टिंग को क्लाइमेक्स पर ले जाएगा, मगर आप एक आर्टिस्ट होते हुए भी परफौर्मेन्समे क्यों घबड़ा जाते हैं ?

हम कहलियनि– दादा, उस लड़कीके गालपर से बहते हुए आँसूको हाथ से पोंछनेमें मेरा हाथ सहम जाता है । फणिदा पहिने जोरसँ हँसि उठलाह आ तुरन्त गंभीर होइत कहलनि– आप तो 'पोएट' (कवि) हैं पण्डितजी, आप जानते होंगे कि काव्य की आत्मा रस है और रस का साधारणीकरण जब तक नहीं होता, उसका सच्चा आनन्द प्राप्त ही नहीं हो सकता । देखिए, एक आर्टिस्ट को सेट पर पहुँचने पर मैं अमुक हूँ यह भूल जाना चाहिए । उसे अनुभव करना चाहिए कि मैं जो रौल कर रहा हूँ, वह राम का हो तो राम और रावण का हो तो रावण ही हूँ । आप जब तक समझते रहेंगे कि मैं अमरजी हूँ और यह लड़की लता है, तब तक आपका परफौर्मेन्स अपूर्ण रहेगा । मैं जानता हूँ कि वह एक जबान लड़की है और आप एक प्रौढ़ युवक हैं, मगर जभी आप यह फील करने लगेंगे कि मैं लालकाका हूँ और यह मेरी बेटी बुच्चीदाइ है तो आप देखेंगे कि किस तरह करुणा आपके अन्तर से फूट पड़ती है । पण्डितजी,

वासना भावनामे हैं, भावनाको निर्मल बना लिया जाय तो वासना आपसे आप कोसो दूर भाग जाती है । आपको एक घंटा समय देता हूँ । नवेन्दुबाबूका कमरा खाली है। आप उसमे एकान्त में बैठ जाइए । यह आपकी परीक्षा होगी । हम उठय लगलहुँ तँ पुनः कहलनि– वास्तव में यह प्रो० हरिमोहन झाका 'नोभेल' हास्य रस का है और आपका रौल करुण रस का है । शृंगार रस का स्थायिभाव अगर रति है तो आपको मालूम होगा कि वात्सल्य का भी स्थायिभाव रति ही है । आपके हृदयमें जिसके प्रति वात्सल्य है उसे अगर आप दुःख में देखते हैं तो आपके हृदयमें भी करुणा का उद्रेक उसी मात्रा में होगा, बल्कि कुछ अधिक ही होगा । जाइए, मूड बनाइए ।

हम उठिकऽ श्रीनवेन्दुदाक आफिसमे चल अयलहुँ । बुझना गेल जे श्रीफणिदा वस्तुतः निर्देशक छथि आ असाधारण कोटिक काव्य मर्मज्ञ सेहो । अभिनयक हेतु वास्तविक प्रशिक्षण आइए देलनि अछि आ प्रशिक्षणक आवश्यकता होइतो छैक । ठीक एक घंटा धरि हम एकान्तमे बैसल चिन्तनमे डूबल रहलहुँ । एक घंटाक बाद श्रीफणिदा घंटी बजौलनि । हम हुनका कार्यालयमे जाय कहलियनि जे हम प्रस्तुत छी। तखन पुनः सेट पर अबैत गेलहुँ । लता तँ अश्रुपातक हेतु ग्लेसरीनक उपयोग कयलक, किन्तु हम से नहि कयल । अभिनयक समयमे वस्तुतः ओहिना अश्रुपात होअय लागल आ जे अनुभव भेल से अनिर्वचनीय अछि । काज नीक रहल, श्रीफणिदा बहुत सन्तोष व्यक्त कयलनि । कहलनि– मैं आज आपको प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण होने का सर्टिफिकेट देता हूँ, किन्तु अपना तथापि पूर्ण सन्तोष नहि भेल । आब दर्शक जानय जे की भेल, केहन भेल ।

तकर बाद लंच भऽ गेलैक । लंचक बाद रेवतीरमण आ सी.सी. मिश्राक वार्त्तावाला १/१८ सीन छलैक जाहिमे छेहा हिन्दी, तेँ हमर रहब आवश्यक नहि छल। सौर्टक बादसँ मानसिक स्थिति ततेक करुणार्द्र भऽ गेल जे हम श्रीफणिदासँ छुट्टी लऽ डेरा चल अयलहुँ । हमर आइ सबसँ पहिने सौर्ट होयबाक छल तेँ सबेरगरे स्टूडियो बिदा भेल छलहुँ किन्तु तखने श्रीसुरेश आबि गेल छल । श्रीरत्नेश पर किछु काल क्षोभ भेल । एकतँ समय पर सेट पर नहि आयल, दोसर डेरा अयलहुँ तँ ताला बन्द। स्टूडियो फोन कयलिऐक तँ क्यौ फोन उठौनिहार नहि । किछु काल क्षुब्ध भेल एमहर ओमहर बौअयलहुँ, पुनः बनारसीक ओहिठाम जाय फोन कयलिऐक, किन्तु तखनहु घंटी घनघनाइत घनघनाइत रहि गेल । तखन क्रुद्ध भऽ पुनः स्टूडियो बिदा भेलहुँ, मुदा स्टेशन पर समुद्रे जका गर्जन करैत अपार जन समुद्र । आइओ भिनसरेसँ रहिरहि कऽ फुहार पड़िते छलैक, संगहि बसात क्रमशः उग्रसँ उग्रतर होइत गेल छलैक । एक घंटा पहिने हम ट्रेनसँ उतरल छलहुँ । ताधरि ट्रेन सब निश्चित समय पर दौड़ि रहल छलैक । अन्तिम ट्रेन बेसीसँ बेसी आध घंटा पहिने गेल होयतैक आ एही आध घंटामे स्टेशनपर

तिल धरबाक जगह नहि । लोक सब बजैत छलैक जे उग्र बसातक कारणें बिजली लाइनमे कतहु कोनो गड़बड़ी भऽ गेलैक अछि । तें ई व्यस्तता भऽ गेल छैक । दस मिनट धरि स्तब्ध ओहि जन-समुद्रमे हमहू एक बिन्दु बनल रहलहुँ, तावत अन्धेरीक धीमी गाड़ी अयलैक । एक उल्लास भरल कोलाहलक लहरि सम्पूर्ण प्लेटफार्म पर गनगना उठलैक जेना शिवरात्रिक अवसरपर बाबा वैद्यनाथक मंदिर लग बोलबम् शब्दसँ गुंजित भऽ उठैत छैक । भीतर बोरामे कसल मेरिचाइ जकाँ लोक कसल, उतर-निहारकें उतरबाक बाट दुर्लभ आ चढ़निहारकें भीतर प्रवेश करब असंभव । तथापि जेना कोठीक मुन्ना घीचि लेला पर अन्न भुभुआ जाइत छैक तहिना हमरा सोझाँ जे डब्बा ठाढ़ भेल ताहिमे सँ गोड़ पचासेक लोक उझिला गेल । बस हमहू लपकि एक टा डंटा पकड़लहुँ, भीतर कोना पहुँचि गेलहुँ से नहि बुझना गेल, किन्तु भीतरमे सेहो जेना लटकले अन्धेरी पहुँचि गेलहुँ । श्रीरत्नेश स्टूडियोक कैन्टीनमे आरामसँ भोजन करैत। चाभी लऽकऽ पुनः स्टेशन अयलहुँ तँ पुरनके दृश्य, ओहिना अपार जन-समुद्र तरंगित होइत । ज्ञात भेल जे कोनो-कोनो ट्रेन बम्बै सेण्ट्रल धरि चालू रहतैक ।

उत्तरसँ दक्षिण पैरें सड़क पर चलब नितान्त दुष्कर । बस आ ट्रेन दूनूक आगमन मे अवरोधक कारणें टैक्सीवालासब ऐंठि रहल अछि, अगराय रहल अछि । आतुर लोक एकक बदला चारि खर्च करबाक हेतु बाध्य भऽ रहल अछि । किछुए क्षणमे एहिठामक जनजीवनक ई अस्त-व्यस्तता दिस विचार करिते चित्त उद्विग्न भऽ उठल अछि । टाका पैसा तेना खोंटि-खोंटि कऽ ई मुंशीआ दैत अछि जे एहिठामक विशाल मैथिलबन्धु लोकनिजँ एहिरूपें आतिथ्य नहि करैत रहितथि तँ ने जानि की दुर्गति होइत । जेना तेना आइ डेरा घूरि अयलहुँ आ पोस्टमैनक प्रतीक्षा करय लगलहुँ। दरभंगासँ कोनो समाचार नहि भेटि रहल अछि । आइ क्रोध, क्षोभ, करुणा आ चिन्ता सब मिलि कऽ मानसिक सन्तुलनकें एकदम बिगाड़ि देलक अछि । बाहर होयबाक योग्य समय एकदम नहि छैक । श्रीभुवन सेहो काल्हि ४.३०क समय लिखिकऽ गेल छलाह, किन्तु समयक विकरालता आ यातयातक एहि असुविधाक कारणें प्रायः नहि आबि सकलाह अछि, आबिओ ने सकताह ।

स्टूडियो जयबासँ पूर्व सोचने छलहुँ जे आइ काज समाप्त कऽ अयलाक बाद मिथिला-मिहिरक कथा विशेषांक हेतु एकटा कथा लिखब, मुदा लिखबाक कोन गप्प पढ़बोक एकोरत्ती इच्छा नहि होइत छल । चेष्टा कयलहुँ जे सूति रही, किन्तु निद्रा देवी एकदम रूसि गेलीह । श्रीकिसुनजीकें आ ओझाकें चिट्ठी लिखि देलियनि । चक्रवर्त्तीकें चाह दऽ जाय कहलिऐक, किन्तु ताहूमे स्वाद नहि लागल । स्टूडियोमे आइ सर्वश्रीब्रजकिशोर (झारखंडीनाथ) गोपाल, महिपाल, पंचोली, असितसेन सब आजुक अभिनयक प्रशंसा कयलनि । श्रीब्रजकिशोरतँ कहलनि- फनीदा कहते थे कि आपने

प्रूफ कर दिया कि सचमुच आप कलाकार हैं, जब बिना ग्लेसरिनका आपकी आँखों से आँसू आने लगा तो दादा भी करुणार्द्र हो उठे, तेँ चित्त बेसी उल्लसित रहबाक चाहैत छल, किन्तु उनटे आरो उद्विग्न अछि ।

८.८.६४

आइ स्टूडियो बन्द छल । पाइ सठि गेल अछि तेँ अन्धेरी होटलमे भोजन कऽ १०.३० मे श्रीरत्नेशकेँ मुंशीजीसँ भेट करबाक हेतु स्टूडियो पठा देलियनि आ अपने फ्लोरा फाउन्टेन जयबाक विचारसँ खार अयलहुँ । बाटमे मनसारामसँ भेट भऽ गेल, ओ थोड़ेक समय लऽ लेलक, डेरा पहुँचलहुँ तँ हेडमास्टरसाहेबक तथा श्रीरमानन्दमिश्रक चिट्ठी भेटल । हेडमास्टर साहेबकेँ तुरन्त उत्तर दऽ देब अनिवार्य प्रतीत भेल, किन्तु कार्ड सठि गेल छल, तेँ खारक पोस्टऑफिसक पता लगबैत एगारहम-बारहम रास्ताक बीच गेलहुँ । कार्ड लऽ उत्तर लिखि ओही ठाम लेटर बक्समे खसा देलिऐक, मुदा तावत एक सँ ऊपर भऽ गेल । चर्नीरोडमे आब श्रीयुगलकिशोरजीसँ भेट होयबाक संभावना नहि रहि गेल, तेँ फ्लोरा फाउन्टेनक यात्रा स्थगित कयल आ डेरा पर बैसि 'फिल्मिस्तानमे मैथिली पाठशाला' शीर्षक लेख लिखलहुँ । श्रीभुवन सेहो नहि अयलाह आ श्रीरत्नेश सेहो ६.३० धरि नहि घुरलाह तऽ हारिकऽ वान्द्राक हेतु डेरासँ चलि देलहुँ । स्टेशनपर श्रीयुगलकिशोरजीसँ अकस्मात् भेट भऽ गेल । ओहो वान्द्रा धरि संग देलनि, मुदा भ्रमात् फास्ट ट्रेनमे चढ़ि गेलाक कारणेँ सोझे दादर जाय पड़ल आ ओतयसँ घुरती ट्रेनमे पुनः वान्द्रा अयलहुँ ।

एहिठाम प्रत्येक स्टेशन पर यात्रीक सुविधाक हेतु प्रत्येक प्लेटफार्म पर घड़ी जकाँ बनाकऽ अग्रिम ट्रेनक आगमनक सूचना देबाक हेतु लगा देल छैक आ ओकरे लग घड़ी लटकल रहैत छैक । एक ट्रेनकेँ चल गेलापर दोसर ट्रेनक अयबाक समय पर सुइकेँ घुसका देल जाइत छैक । एहि हेतु प्रत्येक प्लेटफार्म पर एक-एक व्यक्ति नियुक्त रहैत होयतैक । एक ट्रेनसँ दोसर ट्रेनक समयमे अन्तर क्रमशः २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५, ३०, ४५ मिनट धरिक रहैत छैक । मासिक 'पासक' व्यवस्था ततेक सस्त ओ सुलभ छैक्र जे एकटा भिखारि पर्यन्त भीख मङबाक हेतु 'पास' बनबा लेने अछि । एहिठाम मानव-जीवन यन्त्रवत् बीतैत छैक । कोनो होटलमे जाउ, जे भात देत से दालि नहि, जे दालि देत से तरकारी नहि, अर्थात् एक-एक वस्तु जेना रोटी, दालि, तरकारी, पापड़, चटनी, नेवो, नोन, दही, प्रत्येक वस्तु भिन्न-भिन्न व्यक्ति द्वारा परसबाक व्यवस्था देखबामे अबैत अछि ।

कोनो ठाम भोजन अथवा जलपान करय जायब तँ बड़ भाग्यवान होयब तखने पाँचे सात मिनट प्रतीक्षा करय पड़त, अन्यथा पन्द्रह मिनटसँ आध घंटा धरि प्रतीक्षामे रहब स्वाभाविक छैक । हँऽ जखन आसनपर बैसि जायब तखन अहाँ घड़ी देखैत रहू,

प्रति पाँच मिनट पर भिन्न-भिन्न पदार्थक बारिक अहाँक लग यन्त्रवत् अबैत रहत। जाहि वस्तुक आकांक्षा हो, सब वस्तु एकदम गरमागरम, एकदम टटका भेटैत जायत। जावत अहाँ हाथ मुँह धोयब तावत अहाँक समक्ष बिल पहुँचि जायत। पाइ चुका देलाक बाद एको मिनट ठाढ़ नहि रहि सकैत छी। ठाढ़ रहबाक ने अहाँकेँ पलखति अछि ने ओकरा स्थान छैक।

ट्रेनमे गन्दासँ गन्दा लोक अहाँक लग सटि कऽ बैसि गेल तँ अहाँ ओकरा प्रति कनेको घृणाक भाव नहि व्यक्त कऽ सकैत छिऐक। मनहिमन औंड़िमारि बैसल रहू अथवा उठि जाउ। एक कोठलीमे रहनिहार व्यक्ति ई औत्सुक्य नहि देखाओत जे अहाँक परिचय प्राप्त करय, तखन ट्रेन वा बसमे लगमे बैखल व्यक्ति किएक अहाँक परिचय चाहत? यदि अहाँ उत्सुकता देखयबैक तँ ओ सन्दिग्ध दृष्टिसँ देखय लागत- अहाँकेँ ओकर परिचयसँ प्रयोजन की?

एहिठामक लोकमे अधिकांश देखबामे बड़ दिव्य, आन्तरिक जीवन भने कतबो मलिन होउक, भगवान जनाथि, किन्तु बाह्य जीवन परमस्वच्छ। स्कूल जाइत धीया-पूताकेँ देखैत रहैत छिऐक, खूब फुलायल हजारा गेना फूल सन सन, आँखि तृप्त भऽ जाइत अछि। सबकेँ नील रंगक पेण्ट, उज्जर दपदप शर्ट आ नेकटाइ जकाँ कण्ठमे बान्हल रुमाल। किन्तु एहनो छात्र अछि जकरा पैरमे जुत्ता नहि छैक, साधारण कोटिक कपड़ा छैक तथापि स्वच्छतामे कतहु कोनो त्रुटि नहि। १६-१७ वर्ष धरिक कन्याक संग ओहने व्यवहार करैत देखैत छिऐक जेना अपना सभक ओहिठाम ४-५ वर्षक बच्चाक संग कयल जाइत छैक आ शारीरिक विकासक दृष्टिएँ अपना सभक ओतय १५-१६ वर्षक वयसमे जेहन होइत छैक तेहन मात्र १०-१२ वर्षक वयसमे भेल बुझना जाइत अछि। बुढ़िया-बुढ़िया मौगी सब अपनाकेँ मुँह बचकानी...... सियानी सन बनौने सड़क पर घुमैत रहत। अर्द्धनग्न रहब तँ एहिठामक बड़प्पन बूझल जाइत छैक। किछु स्किन कलर कपड़ा पहिरने दूरसँ पूर्ण नग्न सन लागय। किछु दिन धरि तँ अनकर ई स्वरूप देखि अपना लाज होइत रहल। अपने आँखि नीचा कयने चलैत रही, किन्तु पछाति ईहो ज्ञात भेल जे संकोचे करब पिछड़ापन, गमारू होयबाक लक्षण मानल जाइत छैक, जकरा हिन्दीमे बुद्धू सेहो कहल जाइत छैक।

बेसी लोक एक तालबद्ध भंगिमामे सतत अपन-अपन कार्यमे रत देखि पड़त। होटलमे बैरा ताल-बद्ध गतिएँ आबि पानिक गिलास वा प्लेट आदि सोझाँमे राखत। पान लगौनिहार तालबद्धे भंगिमामे पान पर चून, खैर, सुपारी आदि दैत देखि पड़त। भीख मङनिहार पर्यन्तमे ई देखबामे अबैत रहल। कदाचिते कोनो स्थान होयतैक जाहिठाम कोम्हरहु ने कोम्हरहुसँ रेडियो अथवा अन्य माध्यमसँ संगीतक ध्वनि कानमे नहि पड़ैत हो। जुत्तामे पालिश लगबैत वा काँटी ठोकैत चमारक हाथ, गर्दनिमे ओ ताल बद्धता देखि सकैत छी। अस्तु,

बान्द्रा उतरि श्रीउदयभानुजीक डेरा पर गेलहुँ । अपने उपस्थित छलाह । प्रसादजी सेहो पहुँचि गेलाह । किछु काल 'नैहर भेल मोर सासुर' फिल्म पर विचार-विमर्श भेल । श्रीयुगलकिशोरजीक संग खार आबि हुनक कहानीसब दऽ देलियनि । किछु-किछु मात्र खा लेलहुँ । श्रीरत्नेश १० बजे घुरलाह । आन दिनुक अपेक्षा आइ मोन किछु हल्लुक रहल ।

एहिठाम हरियरीक हेतु लोक गमलामे दोसरो तेसरो मंजिलपर फूल, तुलसी, दुपहरिया फूल आदि लगौने अछि । सड़क सब पर जहाँ तहाँ खोपामे लगयबाक हेतु चन्द्रकला फूलकेँ एक फूलमे दोसर फूलक डंटीवाला भागकेँ खोंसि मालाक अर्द्धाकार जकाँ बनौने बिकाइत देखैत छिऐक जकर दाम एकटाका न्यूनतम रहैत छैक। पहिने देखिऐक तँ किछु अर्थो नहि लागय जे एकर कोन उपयोग होयतैक । जखन कीनिकऽ एक गोटेकेँ बीच सड़क पर अपना संग चलैत मौगीक खोपामे लगबैत देखलिऐक तखन अर्थ लागल । गुलाबक गुच्छा आ चम्पा फूलक माला सेहो बिकाइत देखलिऐक जे लोक देवताक हेतु नहि, साकार देवी लोकनिक हेतु कीनैत अछि । कम्मे लोक भेटत जे एकसर घुमैत हो, अधिकतर लोकक संग एकटा मौगी लगले देखैत छिऐक ।

आइ फुहारक मात्रा ओ अवधि कम रहलैक । रातिमे मिथिलामिहिरक कथा विशेषांकक हेतु 'जल समाधि' कथाक पेनी छानल ।

१.८.६४

आइ रवि थिकै । शूटिंग सेहो बन्द छल । भोरे विचार कयल जे आइ किछु विशिष्ट स्थानसब देखि अयबाक चाही, किन्तु मिथिलामिहिरक हेतु पेनी छानल कथाकेँ पूर्ण कऽ ली तखन बहराइ । स्नानादिसँ निवृत्त भऽ बनारसीक ओतय दूध पीबय विदा भेलहुँ कि होटलसँ बाहर होइते मोसम्मी रसवाला गाड़ी गुड़कबैत पहुँचि गेल । समयक बचतकेँ ध्यानमे राखि मोसम्मीएक रस एक गिलास पीबि लेलहुँ, पान खाय डेरा घुरलहुँ आ कागत कलम लऽ बैसिते छी तावत श्रीधन्नू पहुँचि गेलाह, की कऽ रहल छी, आजुक की कार्यक्रम अछि आदि चर्चा करिते छथि कि श्रीगोविन्दजी आबि गेलाह । किछुए कालक बाद सर्वश्रीजयकृष्ण ठाकुर लक्ष्मीकान्त राय तथा जगति निवासी वसिष्ठनारायणझा सेहो पहुँचि जाइत गेलाह । श्रीगोविन्दजीक आग्रह जे आजुक भोजन हुनके ओहिठाम हो । तावत श्रीप्रशान्तजीक फोन आयल, हुनकासँ भेट करबाक हेतु गोरेगाँव जयबाक छल से ओ स्वयं आबि रहल छथि । श्रीभुवनकेँ श्रीयुगलाकिशोरजी द्वारा समाद पठा देने छलियनि जे भेट करबाक हेतु १० बजे धरि आबि जाथि । तकर बाद कोनो ठेकान नहि जे ककरा संग कोमहर बाहर भऽ जाइ, तेँ हुनक प्रतीक्षा करबाक छल, किन्तु जोगेश्वरीसँ क्यौ नहि आयल । एही बीच श्रीत्रिदिवकुमार,

श्रीअवधेशकुमारक संग पहुँचि गेलाह । आइ डेरा बेस जमकल अछि। मैथिलक ठहक्का आ मैथिलाम चलिए रहल छल, अगल-बगल वालालोक सब हुलकी दऽ देखि जाइत छल । वत्रा साहेब मन्त्र-मुग्ध भेल हमरा सभक ठहक्का सुनैत चकित-विस्मित होइत छलाह । तावत श्रीप्रशान्तजी अपना सेठक बेटाक संग पहुँचि गेलाह । सेठक बेटा एहिठामक गप्प-सड़क्का देखि-सुनि भिन्न विस्मय-विमुग्ध । एही सबमे १२.३० बाजि गेल आ अन्तमे निर्णय भेल जे आइ भोजनक आग्रह छोड़ल जाय। आ दू बजे विजयानन्दक ओरिआओन हो, तदुत्तर चर्चगेट दिस चलल जाय । अन्धेरी धरि सब गोटे संगहि बिदा भेलहुँ ।

रविक दिन एहि गुजराती होटल सबमे विशेष आयोजन रहैत छैक । आइ कचौड़ी, तरकारी, कढ़ी, भात, खीर, विविध व्यंजन भोजन करौलक । भोजनेक कालमे एक व्यक्तिक वेष-भूषा देखि परस्पर परिचय प्राप्त करबाक उत्कण्ठा भेल । ओ छलाह सतघराक श्रीसिद्धिनाथझाक भाय श्रीहर्षनाथझा । यद्यपि ओ हमरासबसँ पहिनहि भोजनक आसन पर बैसल जठराग्निक ज्वालामे समिधा दऽ रहल छलथिन तथापि हम आ श्रीरत्नेश खा कऽ उठि गेलहुँ आ ओ भीमेन्द्रनाथ जकाँ संहार मुद्रामे भिड़ल रहलाह । १५ मिनटक बाद पूर्णाहुति देब सम्पन्न भेलनि । तकर बाद जे ओ गप्प पसारलनि से एहन सन जे हम हुनक जन्म -जन्मान्तरक परिचित होइयनि । दूनू भाँइमे कोन कारणेँ भिन्न-भिनाउजि भेलनि, कोना बँटवारा भेलनि, कोन खेतमे कोमहरसँ ओ हिस्सा लेबऽ चाहैत छलथिन, कोन पंच कतेक हरान कयलथिन, के सब पक्षपात कऽ हिनका दबाबऽ चाहलथिन, से सब ततेक विस्तारसँ कहय लगलाह जेना हमरा हिनकर खेतपथार बीत-बीतकऽ देखल हो आ हिनका गामक बच्चा-बच्चाकेँ हम चिन्हैत होइऐक । अकच्छ कऽ देलनि । २ बजे डेरा घुरि सकलहुँ । श्रीप्रशान्तजी ८ बजे संध्याक समय दऽ गेल छथि गप्प करबाक हेतु । डेरा आबि इच्छा छल जे छानल कथाकेँ पूरा कऽ ली, मुदा सझुआड़क श्रीचिरंजीवठाकुर पहुँचि गेलाह ।

आइ अगस्त, क्रान्ति दिवसक अवसर पर कम्यूनिष्ट आ संसोपा मिलिकऽ १२ ता० सँ बम्बै बन्द हड़तालक नोटिस देलकैक अछि, तेँ होमगार्ड सबकेँ सतर्क करबाक हेतु परेड चलि रहल छैक, ओही परेडसँ घूरल छलाह । अन्तमे हुनके संग वान्द्रा बिदा भऽ गेलहुँ । गान्धीनगरमे श्रीगोविन्दजीक ओहिठाम ३.३० मे पहुँचलहुँ । ओहिठाम सीतामढ़ी प्रान्तक श्रीनरेन्द्रझा, हथौड़ी कोठीक श्रीबालकृष्णझाक बालक श्रीलक्ष्मणझा आदि अनेक व्यक्ति जुटल रहथि । बड़ विस्तारसँ विजयानन्दक तैयारी भेलैक । ई सब सम्पन्न होइत ४.३० बाजि गेल । आब बिदा होयब तावत गयावाल श्रीनन्दलाल प्रसाद, सारनकेर दुबेजी चारि गोटे पहुँचि गेलाह । प्रायः पहिनहु उल्लेख कऽ चुकल छी जे एतय बिहारकेँ के कहय उत्तर प्रदेशक पूर्वीय भागक लोकधरिकेँ

एहि भागक लोकक प्रति आत्मीयताक भाव रहैत छैक । हम बिहारक थिकहुँ आ फिल्मक प्रसंग बम्बै आयल छी तेँ हम एक विशिष्ट लोक भेलहुँ आ ताही द्वारेँ ई लोकनि दर्शनार्थ आ परिचय प्राप्त करबाक हेतु आयल रहथि । शिष्टाचारमे पुनः एक घंटा समय बीति गेल । सभक आग्रह ई जे हमर प्रवेश फिल्मिस्तानमे भऽ गेल अछि तेँ प्रयत्नमे रही जे नीकजकाँ पैर जमिजाय । एमहर हम मनहिमन सोची जे कोनहुना कन्यादानक शूटिंग समाप्त हो जे जान छोड़ाकऽ एतयसँ पड़ाइ । फिल्मिस्तानक संस्कार हमरासभक संस्कारसँ सर्वथा विपरीत छैक । कोनहुना ब्राह्मणत्वकेँ आंशिक रूपेँ बचौने जा रहल छी ।

५.३० मे बिदा होइत गेलहुँ । वान्द्रा स्टेशन पर कोइलखवासी श्रीगौरीनाथझासँ परिचय भेल । ई श्रीयुत कांचीनाथझा 'किरण' केर सार थिकथिन । गप्प सप्प होइत ६.१५ बाजि गेल । ओतयसँ चर्चगेट जाइत गेलहुँ । ओहिठामक नामी पानक दोकान पुरोहितक दोकान, ताहिमे पान खाइत गेलहुँ ।

बम्बै विश्वविद्यालय, एलिफिन्स्टन कालेज, हाईकोर्ट, म्यूजियम, सचिवालय आदि एही क्षेत्रमे पड़ैत छैक । बाहरे बाहर एहि सबकेँ देखैत 'गेट वे ऑफ इण्डिया' पहुँचलहुँ । एहिठाम घोड़ापर चढ़ल, तरुआरि खिचने छत्रपति शिवाजीक प्रस्तरमूर्त्ति बनौने छनि जे अत्यन्त दिव्य ओ विशाल तँ छैके, लगैत छैक जेना एही बाटेँ अपन शत्रुकेँ भगयबाक हेतु तरुआरि खिचने साक्षात् ठाढ़ होथि । ई मूर्त्ति देखि हृदय भरि गेल । एखन धरि एतय जे किछु देखलहुँ अछि, ताहिमे सबसँ अधिक प्रभावित एहीसँ भेलहुँ अछि । पुनः ताजमहल होटल आ चाइनीज रेस्टोरेंट देखलहुँ । एहिमे केविन सबजे बनौने अछि से एहि ठाम जंगली बाँसक फट्ठी सँ, परन्तु एकर सौन्दर्य अनुपम मनोमुग्धकारी छैक । जीवनबीमा कार्यालय, अमरीकी कम्पनीक मकान आदि देखैत चौपाटी अबैत गेलहुँ । ओ जे कहैत छैक 'गगन-चुम्बी अट्टालिका' से वस्तुतः एहि क्षेत्रक अट्टालिका सब गगन-चुम्बी छैक ।

चौपाटीक चर्चा, चर्चा की ? सोरहा बहुत छैक, कथा साहित्यमे सेहो एकर उल्लेख भेटैत अछि, से बहुत सुनने छलिऐक । बम्बै अयलहुँ आ चौपाटी नहि घुमलहुँ तँ बम्बैक यात्रा अपूर्ण रहि गेल । तेँ मोनमे उत्सुकता छल । पहुँचैत-पहुँचैत अबेर भऽ गेल छल । एहिठाम पहुँचला पर देखल जे आर तँ किछु ने, समुद्र ढाल पर छैक, ओहिठामक बालु पर बैसि सामुद्रिक हवाक आनन्द लेल जा सकैत अछि । अबेर होइतो जन-समुद्र सेहो समुद्रे जकाँ उमड़ि रहल छैक । खाली ठेलापर घुमन्ता दोकान सब माँझी, माने भाँटा, करैल, रामझिमनी, कोबी, आदिक एक प्रकारक तरुआ बूझक चाही, बेचैत रहैत छैक आ ताहिपर देहाती मधुरक दोकानपर अथवा अमौट बनयबाक समय ओहिपर जेना बिरनी बिनबिन करैत रहैत छैक, तहिना लोक बिनबिन करैत ।

मूंगफलीक तेलमे कड़कड़ा-कड़कड़ा छनने जाइत आ बिलहने जाइत दोकानदार सब, ओहिसंग मेरिचाइक दौंक तेलक गन्धसँ नाक फाटल जाइत छल । मनहिमन ओहिठाम बैसनिहार आ खयनिहारकेँ धन्यवाद दैत जल्दीजल्दी डेग झाड़लहुँ । एहिठाम एक वस्तु आरो बिकाइत रहैत छैक 'भेल' अर्थात् चूड़ा, मुरही, बदाम, खेड़ही, मसुरी आदि विभिन्न प्रकारक भूजाकेँ मिलाकऽ ओहिमे नोनतेल हरिअर मेरिचाइ, आद, नेबोक रस सानल आ दोसर एक वस्तु 'रगड़ा' । श्रीगोविन्दजी किछु-किछु खयबाक आग्रह कयलनि, मुदा हमरा मोन नहि मानलक । ग्रान्ट रोडमे आबि एक-एक गिलास लस्सी पीलहुँ । श्रीगोविन्दजी रातुक भोजनक व्यवस्था अपने ओहिठाम कयने रहथि, किन्तु श्रीप्रशान्तजी आठ बजेक बादक समय देने छलाह आ ९ बाजि रहल छल तेँ छटपटायल खार चल अयलहुँ, भोजनक बेरमे पहुँचि जायब से वचन दऽ देलियनि ।

एहिठाम बालगंगाधरतिलक आ विट्ठलभाइपटैलक बेस आकर्षक प्रस्तरमूर्ति स्थापित छनि ।

९.१५मे खार पहुँचलहुँ । श्रीप्रशान्तजी प्रायः आबि कऽ घूरिगेल होयताह, तेँ चटर्जीकेँ पुछलिऐक तँ कहलक जे क्यौ ताकय नहि आयल छलाह । हमर अपन स्वभाव अछि जे जकरा जखन समय दिऐक ताहि समय पर अवश्य उपस्थित भऽ जाइ। समयक एहि प्रतिबद्धताक दू गोट कारण भऽ सकैत अछि– छात्रजीवनमे आर्.एस्.एस्.क स्वयं सेवकत्व आ कर्मक्षेत्रमे अयला पर श्रीयुतझिंगुरबाबू सदृश समयनिष्ठ व्यक्तिक अधीन रहि नौकरी करब । यद्यपि एहि महानगरक व्यस्ततामे मिनट-मिनट एकर पालन करब कठिन छैक तथापि ई अन्तर अधिक नहि होयबाक चाही, किन्तु श्रीप्रशान्तजी १० बजे पहुँलाह । तखन गप्पाध्यायक हेतु दोसर दिनुक समय राखय कहलियनि । रातुक भोजन श्रीगोविन्दजीक ओतय छल तेँ वान्द्रा जायब अनिवार्य छल । घनघोर वर्षा होअय लगलैक, तथापि श्रीरत्नेशक संग बिदा भेलहुँ से १२.३०मे डेरा घुरलहुँ ।

हँऽ, एकटा बात तँ छुटिए गेल– गेट वे ऑफ इण्डिया लग समुद्रमे गोड़ दशेक जहाज ठाढ़ छलैक, पहिने बुझायल जे ई बीच समुद्रमे महल सब कोना बनौने छैक ? दू एकटा एहन स्थान छैको जकर चारूभाग जले छैक आ बीचमे पहाड़, ताहिपर बनल छैक मकान सब, जे दूरसँ अद्भुत लगैत छैक । ओना समुद्रक तट पर जाहीं भाग ठाढ़ होयब ताही भागसँ नगर वृत्ताकार देखबामे आओत । रास्ता दू तरहक छैक 'हाई वे' तथा 'लो वे' । पहाड़ीक कारणेँ जे उच्च भूमि छैक तकरा नगरक संग एहि प्रकारेँ मिलौने छैक जे ओहिपर चलैतकाल सामान्यतः बोध नहि होयत, किन्तु बादमे देखला उत्तर स्पष्ट भऽ जायत जे २५-३०-४० हाथधरि ऊपर अथवा नीचाँ चल अयलहुँ अछि। महालक्ष्मी, बम्बै सेण्ट्रल आदि कतिपय स्टेशन पर टिकट लऽ गाड़ी पकड़य अयलहुँ तँ बहुत सीढ़ी नीचाँ उतरय पड़ल तखन बोध भेलजे एतेक ऊपरमे छलहुँ । 'हाइवे'क

तऽर दऽ आ 'लो वे'क ऊपर दऽ रेल, बस आदि चलैत छैक । वस्तुतः बम्बै एक नगर नहि, अपितु नगरक समूह थीक, जहिना लम्बाइ अग्गह सँ बिग्गह तहिना चौड़ाइ, कतहु थाहपता लागब दुर्घट ।

१०.८.६४

आइ हमरा कोनो विशेष काज नहि छल तेँ मिथिला-मिहिरक कथा-विशेषांकक हेतु लिखल कथाकेँ साफ कऽ प्रतिलिपि कयल आ अपराह्नमे स्टूडियो गेलहुँ । ओहिठाम पत्र-पत्रिकामे प्रकाशनार्थ फोटो लेबाक छल, से भेंटि गेल ।

साधारणतः स्टूडियो कहला उत्तर जे चित्र लोकक मानस-पटल पर बनैत होयतैक तकर अनुमान अपने मानस-पटलपर बनल चित्रसँ कऽ सकैत छी । सिनेमाक पर्दापरजे चिक्कन-चुनमुन, सजल-धजल, नयनाभिराम चित्र सब अबैत छैक, पहिने होइत छल जे स्टूडियो सब ओहने चकचक करैत इन्द्रासन सदृश होइत होयतैक, किन्तु जखन स्टूडियोक हातामे भीतर गेलहुँ तखन मानसिक धारणा विवाह करबाक हेतु जाइत कोनो वरक, जे कानो अनिन्द्य सुन्दरीक मनहिमन कल्पना करैत, अनुपम स्वर्गीय सुखोपभोग कामनासँ उल्लसित होइत गेल हो आ विवाहोपरान्त नव परिणीता वधूक उनटल ठोर, फलकल नाक, धसल आँखि चोटकल गाल आ जुटल धनगर भहुँ देखि आकाशसँ खसल हो, तकरे मनः स्थिति सन भऽ गेल । भीतरमे जंगल झाड़, काठ-बाँस, लोहा लक्कड़ यत्र-तत्र ढेरिआयल, चारि-पाँच बीघाक हाता, ताहिमे कतहु कतहु छोट-छोट चारि पाँच टा बाहरसँ सामान्य देखबामे अबैत घर सब । ओहि जंगल झाड़मे विलाड़िक बच्चासँ कनेक पैघ-पैघ कारी-कारी मूस सब छरपान मारैत, बड़का-बड़का मोस सब जेट विमान जकाँ गनगनाइत, किन्तु विभिन्न दृश्यावलीक निर्माणक हेतु सब साधन, सब समचा सतत प्रस्तुत । कैमराक संचालन हेतु ट्राली, शब्दक 'ध्वन्यंकन हेतु साउण्ड ट्रक, बिजलीक्र समस्त साधन ओ मिस्त्री, मजदूर, प्रत्येक वस्तुक सुव्यवस्था । तुरन्त निर्माण होइत विशाल प्रासाद अनुपम उद्यान, झील, पहाड़, सभक दृश्य तुरन्त बनैत आ तुरन्त उजड़ैत । वस्तुतः एही सब साधनक उपलब्धिक हेतु स्टूडियोक आवश्यकता तथा उपयोगिता । घोड़ा, हाथी, महफा, पाल-की आदि-आदि दृश्य संयोजनमे जाहि वस्तुक प्रयोजन प्रोड्यूसरकेँ होइत छैक, स्टूडियोक व्यवस्थापक सब जुटयबाक प्रति उत्तरदायी रहैत अछि ।

एहिठाम अनुशासन नामक वस्तु मेघमे छिटकैत बिजुरी सँ अधिक काल टिकिए ने सकैत अछि । ओ क्षण तखन अबैत छैक जखन चित्रांकनक हेतु सेटपर अभिनेता प्रस्तुत भेल, डाइरेक्टर डपटि कऽ बाजि उठेत छैक साइलेन्स (Silence) साउण्ड ट्रक सन्नद्ध भऽ गेल, कैमरामैनक हाथ स्वीच पर चल गेलैक, बिजली बाला अस्तव्यस्त भऽ उठल, शेष सब निस्तब्ध भऽ गेल, डाइरेक्टर बाजि उठल- ओ. के.

आ कि शेष लोक फेर अनुशासन विहीन । ककर के सुनैत अछि, ककर के धाख करैत अछि ? ई वस्तु सब दिन हमरा खटकैत रहल खटकिते नहि रहल, आजिज कयने रहल ।

स्टूडियोसँ फोटो लेल आ श्रीशेखरजीकेँ एकटा पत्रक संग पठा देलियनि । डेरा अयलहुँ तँ श्रीउमेशमिश्र अभिनन्दन ग्रन्थक सूचना भेटल । साँझमे श्रीउदयभानुजी १ सँ ६ तारीख धरिक आर्यावर्त्त पठा देलनि । श्रीरत्नेशकेँ आइ रातिमे स्टूडियोमे रहबाक छनि, तेँ ओ अन्धेरीमे रातुक भोजन करैत ओम्हरे चल गेलाह आ हम डेरा आबि हट्ठासँ फूजल बड़द जेना अबिते सानीक नादिमे नाकडुबा सँहड़य लगैत अछि तहिना आर्यावर्त्तमे आँखि गड़ाय सुड़रय लगलहुँ । फुहार आइओ चलिते रहलैक । कोनो विशेष घटना नहि भेल ।

११.८.६४

आइ यद्यपि शूटिंग छलैक, मुदा पटना फ्लैटक नाइट शूटिंग । एक बेर १०.३० मे स्टूडियो गेलहुँ, मुदा सिक्वेंस पर काज भइए चुकल छलैक तेँ हमर कोनो प्रयोजन नहि रहैक । मेघ आइओ जान नहि छोड़ने छैक । घुरतीमे अन्धेरीमे भोजन करैत मिथिलामिहिर लै लिखल लेख, फोटो, चिट्ठी खसयबाक हेतु पोस्ट आफिस गेलहुँ। ओहिठाम यजुआड़क श्रीमङनू ठाकुर आ केरबाड़क श्रीदेवेन्द्रमिश्र भेट भेलाह । हुनके द्वारा श्रीभुवनकेँ पुनः समाद पठा देलियनि । डेरा आबि निश्चिन्त भऽ विश्राम करबाक जोगाड़मे छलहुँ तावत श्रीधन्नू पहुँचि गेलाह । हुनक आग्रहजे घाटकोपर चली। किछु कालक उपरान्त श्रीगोविन्दजी पहुँचि गेलाह । आइ हिनक 'दहोबहोनोर' कथा संग्रह छपि गेलनि । संग्रहक नाम हमरा बड़ दिव लागल । एहिठाम छपाइ बड़ बेसी लगैत छैक । मैथिलीक कम्पोजिटर भेटब सेहो बड़ दुर्लभ । तेँ पोथी महग पड़लनि अछि । ओना एहू नगरमे जतेक मैथिलीभाषी छथि से यदि पाँचो प्रतिशत पोथी किनबामे प्रेम राखथि तँ एक हजारक रक्खतिए की ? मुदा मैथिली-भाषी आ पोथी कीनब ई दूनू परस्पर विरोधी बात बूझल जाइत अछि । संगहि एहूठाम मिथिला-मण्डल नामक मैथिली संस्था अछि, ताहूमे आन्तरिक विभेद परिलक्षित होइत अछि । ई रोग ओमहर कलकत्ता धरि तँ व्याप्त अछिए जे एकर कीटाणु सुदूर बम्बै धरि पसरल देखैत छी तँ परस्पर विरोधिनः ई शाप वाक्य सर्वथा सत्य प्रतीत होइत अछि ।

साँझमे हिनका लोकनिक संग घाटकोपर गेलहुँ । किछु ट्रेन कैन्सिल छलैक तेँ दादरसँ कुर्ला अयलहुँ । कुर्लामे श्रीजयकृष्णजी भेटि गेलाह । कल्हुका भोजन हुनके ओहिठाम होयत से बहुत आग्रह कयलनि । कार्यासक्त छलाह तेँ घाटकोपर धरि संग देबामे असमर्थता प्रकट कयलनि ।

घाटकोपरमे पिण्डारूछक श्री गोकुलनाथजी, श्री भैरवबाबू (लालबाग)क कन्या तथा श्रीमहाकान्तक जेठ भाय कुर्सो वासी श्रीरामचन्द्रझासँ भेट भेल । रातुक भोजन ओही ठाम करैत गेलहुँ । एहिठाम जेना अपना सभक ओहिठाम भिन्न-भिन्न ऋतुमे भिन्न-भिन्न तरकारी होइत छैक आ लोक नव तरकारी खयबाक आनन्द उठबैत अछि, से नहि होइत छैक । बारहो मास सब तरकारी कोबी, भाँटा, मटर, टमाटर, ओल, अरिकोंछ, झिमनी, घेरा, रामझिमनी, पड़ोर, बोड़ा, बोदी, सीम, साग, मेथीक साग धनीक पात, चठैल, करैल, सजमनि, कदीमा सब तरकारी बिकाइत देखैत छिऐक । पहिने ई बात नहि बुझैत छलिऐक जे सामुद्रिक जलवायुमे ऋतु परिवर्त्तनक विशेष प्रभाव नहि पड़ैत छैक । तेँ दिनभरि पंखा चलबैत छीं आ एहि अगस्तोमासमे भिनसरबा रातिमे रेशमीक एकटा तौनी ओढ़य पड़ैत अछि ।

श्रीरत्नेश स्टूडियो चल गेलाह ३८२ नं. बससँ अन्धेरी अबैत गेलहुँ, श्री गोविन्दजीक संग ट्रेनसँ हम खार अयलहुँ आ ओ वान्द्रा चल गेलाह ।

आइ रातिमे शान्ताक्रुज हवाइअड्डा देखबाक सुयोग भेल । सुखरातिओमे अनकर कोन कथा, राज दरांगा पर्यन्तमे एहन शोभायमान दीपावलीक दृश्य नहि रहैत छैक । लाल, नील, हरिअर, उज्जर बिजली बल्बक शोभा देखि किछु काल भूखल दुधपिब्बा बच्चा सेहो कानब बिसरि जायत ।

१२.८.६४

आइ बम्बै हड़ताल छैक, मेघकेँ मुदा हड़तालीक संग कोनो सहानुभूति नहि छैक । ओ भोरेसँ अपना सूरमे झरझर-झरझर झरनी गीत गाबि रहल छल । नगरक कोलाहल केवल ४०% रहलैक । टैक्सीक दर्शन नहि, बस सब बसि गेल डिपोमे जाकऽ । फेरीवाला सबकेँ ई हड़ताल अपने फेरीमे दऽ देलकैक तेँ कतहु, कखनो, कोनो ध्वनि कानमे नहि पड़ल ।

भिनसरमे ५.१५ मे निन्न टूटि गेल छल । नित्य कृत्य सम्पन्न कऽ श्रीरत्नेशकेँ खोंचाड़िकऽ उठौलहुँ । बाजारक भरोसेँ जँ आइ भोजन रहैत तँ बजारले जैतहुँ चारूनाल चितंग । बनारसी कृपापूर्वक चुपचाप एक गिलास दूध पिया देलक । पानक चर्चा नहि। इच्छा छल जे श्रीगोविन्दजी ८.३०मे डेरा छोड़ैत छथि, तेँ ताहिसँ पहिने वान्द्रा पहुँचि जाइ । श्रीजयकृष्णजी काल्हिए आजुक नोंत दऽ चुकल छथि । जावत बनारसीक ओहिठामसँ घुरलहुँ तावत श्रीरत्नेश पार, कतय ससरि गेलाह से नहि जानि । हिनक दीर्घ सूत्रिता आ फिल्मी जिटसँ अकच्छ भेल जा रहल छी । ८.४५ मे दाढ़ी बनबा कऽ घुरलाह । बान्द्रा अयबाक हेतु कहि, नवभारत टाइम्स लऽ स्टेशन चल अयलहुँ। अखबार पढ़ैत जयबाक बान्द्रा तँ चल गेलहुँ अन्धेरी । ओतय गेला पर ध्यान आयल

तँ तुरन्त वान्द्राक ट्रेन पकड़लहुँ । ओ तँ रच्छ अछि जे मासिक पास बनबा लेने छी, नहि तँ कतबो सस्त रहौक यातायात तथापि महग पड़ितय ।

गाड़ीमे आनदिनलोक मिस पड़ैत रहैत छलैक, मुदा आइ हड़तालक कारणेँ एहि समयमे स्कूल कालेजक छात्र, मिल आ अन्यान्य कारखानामे काज कयनिहार लोक, व्यापारी आदि जे भरल रहैत छल से नहि अछि, केवल सरकारी कर्मचारी यात्रा कऽ रहल छल तेँ गाड़ी ढनढन करैत । १० बजे गान्धीनगर पहुँचलहुँ । श्रीजयकृष्णजी विविध व्यंजन बनयबामे अपस्याँत । पहिने चाह बनाकऽ पियौलनि । २ बजे धरि श्रीगोविन्दजी तथा रत्नेशक बाट तकैत रहलियनि । दर्शन दुर्लभ ।

एहि बीचमे श्रीजयकृष्णजीक फ्लैटमे एक गुजराती आ एक मराठी परिवारमे झगड़ा बजरलैक । बम्बैमे झगड़ा होइत आइ पहिले दिन देखलिऐक । भाषा तँ बुझबाक योग्य नहि होअय, मुदा गुजरातनीक कंकालिनी रूप आ बीभत्स मुद्रा देखि मोनमे भेल जे मौगी सब ठामक झगड़ा करबामे एक्के रंगक होइत अछि । पति भरिभरि पाँज पकड़ि कऽ घर लऽ जाइक आ ओ एक्के बेर झाड़ि कऽ हुडुकि अबैक बाहर । मराठी परिवारक मौगी सब घरेसँ बाजि रहल छलैक, किन्तु हस्त संचालन आ ताहिमे अश्लील मुद्राक उत्तर आरो अश्लीलतासँ दैत रहैक । चारू भाग तीन-तीन महलक फ्लैट सब आ सब फ्लैटक लोक क्रमशः बरण्डापर भरि गेल । बालेँ बच्चेँ, मौगीएँ मनुसेँ सब चारू भागसँ झगड़ाक तमाशा देखबाक हेतु बाहर चल आयल । एहि फ्लैटक दू महल नीचाँक लोक ऊपर चढ़ि आयल आ किछु सड़क पर जा ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छल । तमशगीर सभक मुँह पर एक प्रकारक उल्लासक भाव । दूनू यदि लड़ैत-लड़ैत कटि मरैत तथापि बीच-बचाव कयनिहार क्यौ ने होइतैक (गुजरातनीक हस्तमुद्रा जहिना-जहिना अश्लीलताक चरम सीमा दिस बढ़ल जाइक तहिना-तहिना एमहर लोकक मुँहसँ हँसीक फुहार बढ़ल जाइक, अन्तमे तँ नीचा सड़क पर ठाढ़ भेल लोकमे सँ किछु गोटे तेना होहकारा देबऽ लगलैक जे बाल्यावस्थामे देखल हूरा-हूरीक दृश्य मोन पड़ि गेल । लोकसभक क्रमपात एहन सन जे एहन तमाशा तँ पाइओ खर्च कयला उत्तर देखब दुर्लभ, तेँ सब आनन्दे लूटि रहल छल, एकरा शान्त करबाक हेतु बीचमे पड़ब सब अपना अधिकार क्षेत्रसँ बाहर बूझि रहल छल । गुजरातीकेँ बहु जखन एकदम बेसम्हार भऽ गेलैक तखन ओ कुर्त्ता पहिरि डेरासँ बिदा भऽ गेल । गुजरतनीयाकेँ बजैत-बजैत जखन गाउज चलय लगलैक, देह परक वस्त्रक कोनो ठेकान नहि रहलैक, हकमऽ लागलि आ दम फूलय लगलैक तखन अपने शान्त भऽ गेल ।

श्रीजयकृष्णजी ततेक विविध व्यंजन आ तेहन सुस्वादु भोजन बनौने छलाह जे अफड़िकऽ भोजन कयल, पान सुपारी होइत २.४५ बाजि गेल, वान्द्रामे ट्रेन पकड़ल

३.१० मे खार लअयलहुँ । डेरा पर श्रीयुगलकिशोरजीक लिखल पुर्जी भेटल– २ बजे श्रीभुवनक संग आबि घुरि गेल छलाह, पुनः ५–६क समय दऽ गेल छलाह । एक तँ थाकनि दोसर ओभरलोड भोजन तेँ इच्छा भेल जे थोड़ेक काल सूति रही, किन्तु एकतँ बेर ढरि गेल छलैक दोसर माछी अकच्छ कऽ रहल छल तेँ तौनी ओढ़ि घसमोड़ने निद्राक आह्वानमे लागल छलहुँ । कनेक तन्द्रिल भेल होयब कि केबाड़ पर जोर सँ क्यौ धक्का देलक । हड़बड़ा कऽ उठि केवाड़ फोलल तँ वत्रा साहेब मुसकुराइत कहलनि– जरा इध्र आइए तो मैं आपको अपने डिरेक्टरसे पर्चय (परिचय) कराऊँ । कुर्त्ता पहिरि हुनका कोठली नं० १९ मे गेलहुँ । 'ब्रज को रसिया'क डाइरेक्टर बैसल रहथि, नाम तीनबेर कहलनि, मुदा हमरा शाब्दबोध नहि भेल ।

एहि कोठलीमे एकटा सिक्ख सेहो रहैत अछि । प्रातः काल ८.३०–९ बजे धरि ई नित्य उठैत अछि आ बाथरूममे जे पैसैत अछि से जाहिदिन बड़ जल्दी बहराइत अछि तहिया एक घंटाक बाद । ताहि पर एहि ठाम की करैत अछि की नहि, प्रत्येक दिन संडास भरल रहैत छैक । दोहराकऽ पैखाना जायब से मैनेजरकेँ फोन करय पड़ैत अछि। ई प्रायः प्रतिदिनुक स्थिति भऽ गेल अछि । तेँ एहि व्यक्ति सँ हमरा घृणा अछि। ओ उठि कऽ हमरा बैसबाक आग्रह कयलक । 'ब्रजको रसिया' मे साइडमे काज करैत एक आर्टिस्ट श्रीकुन्दन, जे एक टा कुर्सी पर बैसल छल से, उठि कऽ ओकरा ओछाओन पर चल गेल तँ हम कुर्सी पर बैसलहुँ । वत्रा साहेब दूनू गोटेकेँ परिचय करौलनि । ओ कहय लागल– लता, दुलारी, चाँद, सबसे मेरी बातें हुई हैं आपके बारे में, बहोत तारीफ करती हैं आप की वे लोग । मुझे ख्वाहिश थी आपके दर्शन करूँ। सुना कि तिवारी दादा ने जिसे पटक दिया था, आप वही रौल कर रहे हैं ? इस मिट्टी को चूमिए पण्डतजी । आज जितने बड़े-बड़े डाइरेक्टर और प्रोड्यूसर हैं, यहीं पहले आये और बाद में अपने अपने फ्लैट में चले गये ।

डाइरेक्टर पुछलनि– आज तो मौसम काफी ठंढ़ा है, आप ह्विस्की पसन्द करेंगे? हम कहलियनि– पीनेकी तो बात क्या, मैंने आज तक देखा भी नहीं कि कैसी बोतल होती है और कैसा रंग । मैं खुद भी शिक्षक हूँ और मेरे पिता भी शिक्षक थे। डाइरेक्टर बजलाह– हाँजी, अब आप वह सब भूल जाओ, अपने को शिक्षक मत समझो, यह बॉम्बे है बॉम्बे ! फिल्मिस्तानमें आपकी बड़ी चर्चा है और आपने फन्नीदा जैसा डिरेक्टर पाया है । अब आप सिने आर्टिस्टो में हो, अब तो मजहब बदल गया हे । कुन्दन अद्‌भुत मुद्रा बनबैत बत्राकेँ कहलकनि– पापा सुना आपने ? ये पण्डतजी ह्विस्की नहीं लेते । अरे, क्या गजब की बात है ? ओकर एहन सन क्रम-पात जे सिनेमाक पर्दापर उतरनिहार आ दारू नहि पिबैत हो, एहन आश्चर्यजनक दोसर बात भइए ने सकैत छैक । हमरा जीवनमे एहन प्रश्न पुछनिहार अथवा एहन प्रस्ताव रखनिहार आइ धरि भेटले ने छल । कुन्दन कहलक– अच्छा, बॉम्बेका अपना कुछ फीलिंग

बताइए । हम उत्तर देलिऐक– अभी तो यहाँ कदम ही रखा है, इसलिए अनुभव अभी नहीं बता सकता । हाँ हमारे दरभंगे में दो पैसेमें एक बीड़ा पान मिलता है और यहाँ पन्द्रह पैसे में । यों बहुत कुछ अनुभव हो रहा है, मगर अभी उन अनुभवोंको सँजो रहा हूँ । ६.३० मे श्रीरत्नेश डेरा घुरि कऽ अयलाह । श्रीजयकृष्णजीक ओहिठाम हिनकर भानस भेले रहि गेलनि । श्रीसदानन्दमिश्र, हरिपुर आ श्रीदुर्गानन्दझा, दीपसँ भेट भेल। रातिमे हम मात्र बनारसीक ओतय एक गिलास दूध पीबि लेल, श्रीरत्नेश बौआइत कतहुसँ किछु खा अयलाह ।

१३.८.६४

आइ प्रात: श्रीयुगलकिशोरजी अयलाह आ ३ बजे अपना स्कूलमे चल अयबाक हेतु समय स्थिर कऽ गेलाह । श्रीजयकृष्णजी केतुकावासी श्रीतृप्तिनारायण मिश्रक संग आबि भेट कऽ गेलाह । वत्रा साहेब सेहो भीतर आबि कुशलादि पुछलनि। दोसर रूममे रहनिहार जँ अहाँक रूममे प्रवेश कऽ किछु पूछय तँ सैह एहिठामक हेतु बहुत आत्मीयता भेल, अन्यथा अहाँक गतिविधि अथवा स्थितिसँ अनका कोन मतलब।

अन्धेरी जाकऽ भोजन कयल । स्टूडियोमे आइ कोनो काज नहि छल । स्क्रिप्ट पर बैसबाक छल से श्रीनवेन्दुदाकेँ ज्वर भऽ गेल छनि आ श्रीफणिदा कोनो आन काजमे व्यस्त छथि से खबरि भऽ गेल छल, केवल मुंशीजीसँ टाका लेबाक छल तेँ श्रीरत्नेशकेँ स्टूडियो जाय कहलियनि आ अपने डेरा आबि किछु काल विश्राम कयल। श्रीयुगलकिशोरजीकेँ ३ बजेक समय देने छलियनि, तेँ २ बजे चक्रवर्त्तीकेँ चाह दऽ जाय कहलिऐक । कनेक सबेरे बिदा भऽ गेलहुँ । चर्नीरोड स्टेशनक सामने जी.जी. वैरामजी इंस्टिच्यूशन छैक ।

ई एक पारसीक्र हाइ स्कूल थिकैक । प्रथम वर्गसँ लऽ एगारहम वर्ग धरिक पढ़ाइ होइत छैक । एहिठाम एकछाहा पारसी सभक नेना भुटका पढ़ैत छैक । कारी वर्ण अथवा कुरूप एकोटा छात्र नहि । एकर अपन ट्रस्ट बोर्ड छैक जकरा द्वारा स्कूलक सब व्यवस्था होइत छैक । तीन महलक पाथरक ठोस मकान । पहिल महलक बीचमे छात्र सबकेँ ड्रिल कराओल जाइत छैक तथा दूनू कातक मकान सब किरायापर छैक जाहिसँ २२ हजारक आमदनी होइत छैक । दोसर महलपर जे हौल छलैक तकरा खण्ड-खण्डमे बाँटिकऽ स्टाफ रूप ओ क्लास रूम बनाओल छैक । एहिठाम शिक्षकसँ बेसी शिक्षिकाक संख्या । नवम वर्गमे गुजराती पढ़ौनिहारि मिस जोशी छलीह । श्रीयुगल किशोरजी तँ हमर परिचय एक कवि तथा डायलॉग डाइरेक्टरक रूपमे देलथिन, मुदा हम कहलियनि जे हमहू शिक्षक छी एक हाइस्कूलमे, तँ हुनका अपार आनन्द भेलनि। भीतर क्लास रूममे लऽ गेलीह आ छात्र सबकेँ एक मातृभाषाक शिक्षक रूपमे हमर परिचय देलथिन संगहि कहलथिन जे हिनका मातृभाषामे पहिल फिल्म बनि रहल छनि

तेँ अवैतनिक छुट्टी लऽकऽ ई आयल छथि । अपना मातृभाषाक विकासक कतेक उत्कण्ठा हृदयमे छनि से अनुमान करैत जाउ । हमर मातृभाषा कोन थीक आ कोना बाजल जाइत छैक से छात्र सबकेँ जिज्ञासा भेलैक, तँ हमरासँ दू चारिटा मैथिलीक वाक्य बजबौलनि । मैथिलीमे अछि, छैक, छियनि, छथि, छलाह आदि क्रियापदमे छकारक प्रयोग सुनि छात्र समुदायमे बड़ छगुनता । गुजरातीमे सेहो छकारक प्रयोग होइत छैक तेँ बेसी उत्सुकता ।

ओहिठामसँ बहराय मिस टाटासँ परिचय करौलनि । ओ प्रथम वर्गमे छलीह। ५ सँ ७ वर्षक नेना सब कल जोड़ने ठाढ़ हुनका संग प्रार्थना कऽ रहल छल । बाहरमे बस लागल छलैक । जे जहिना पंक्तिमे ठाढ़ छल से ठामहि दहिनभाग घुमि गेल आ पंक्तिबद्ध भेल बस दिस बढ़य लागल । अपना सभक ओहि ठाम छुट्टी होइत देरी जे छात्र समुदाय पीहपाह करैत पड़ाइत अछि से स्मरण भऽ गेल । एकरा सभक अनुशासननिष्ठता आ अपना सभक ओहिठामक भेड़ियाधसानक दृश्य स्मरण कऽ मनहिमन कहल जे ई सब किएक ने मनुक्ख आ अपना सभक ओहिठामक वनहुल्लुक किएक ने होयतैक । ओहि वर्गमे नान्हि-नान्हिटा टेबुल कुर्सी लाल-पीअर रंगक आ चारूकात खेलक माध्यमसँ गणित, विज्ञान ओ भाषाक शिक्षा देबाक साधन सब सुसज्जित । पानि पीबाक हेतु कप, गिलास बहुतो राखल, ओहीठाम छोट-छोट रुमाल आ तौलिया पंक्तिबद्ध तारमे बान्हल लटकल, जाहिसँ ओ नेना सब हाथ मुँह पोछैत अछि । घर जाइत काल सब नेना शिक्षिकाकेँ नमस्ते कहैत दूनू हाथ हुनका दिस बढ़ा दैत छलनि आ ओ चुमि लैत छलथिन । प्रत्येक नेनाक उद्‌भासित मुख-मण्डल ।

सबसँ अन्तमे सप्तमवर्गमे गेलहुँ । एहिवर्गमे शिक्षक नहि छलथिन । किछु इरानी छात्र बुढ़ाँठ सेहो । पता लागल जे हिनका लोकनि जखन इरानसँ अबैत छथि तँ एहिठामक विद्यालायमे पाँचमे वर्गमे नाम लिखाइत छनि । हम सब बाहरे ठाढ़ रहलहुँ। मुनीटर श्रीयुगलकिशोरजीसँ हमर परिचय पुछलकनि । जखन कहलथिन जे ईहो शिक्षके छथि तखन मुनीटर हमरा लोकनिकेँ वर्गमे अयबाक आग्रह कयलक । जेना वर्गमे शिक्षक नहि छलथिन, अपना सभक ओहिठाम सौंसे वर्ग हाटक गाछी जकाँ गनगनाइत रहैत छैक । क्यौ ककरो बिठुआ कटैत रहैत छैक, क्यौ बेंचपर ढोलक बजबैत रहैत छैक, क्यौ उठा-पटक करैत रहैत छैक, किन्तु एहिठाम सम्पूर्ण वर्ग निस्तब्ध । हम बम्बै कोना अयलहुँ से जिज्ञासा कयलक । श्रीयुगलकिशोरजी कहलथिन जे हमरा लोकनिक मातृभाषामे पहिल फिल्म बनि रहल अछि, ताहिहेतु खासकऽ हिनका बजाओल गेल छनि तँ एक स्वरमे सब बाजि उठल- 'वी कांग्रेच्युलेट यू' जखन हम कहलिऐक जे हमहू एही वर्गक वर्ग शिक्षक छी आ छात्र सबसँ भेट भेना तीन सप्ताहसँ बेसी भऽ रहल अछि, सभकेँ देखबाक उत्कण्ठा होइत अछि तेँ तोरा सभक स्कूल चल अयलहुँ

अछि । से सुनि एकटा विद्यार्थीक आँखिक कोर सिमसिम भऽ उठलैक । ओ गुजराती भाषामे प्रायः अपना संगीसबकेँ किछु कहि उठलैक । चलय लगलहुँ तँ आग्रह कयलक जे काल्हि १२ बजे हमरा लोकनि स्वतन्त्रता दिवसक उत्सव मनायब ताहिमे अहाँ अवश्य अयबाक कृपा करी ।

ओतयसँ बहराय प्रिंसिपल आ वाइस प्रिंसिपलसँ भेट करौलनि । ओहो लोकनि काल्हुक उत्सवमे सम्मिलित होयबाक आग्रह करय लगलाह । घुरैत काल सप्तमे वर्ग लग दऽ बाट छलैक, श्रीयुगलकिशोरजी ओहिवर्गक छात्र सबकेँ प्रिंसिपलो साहेबक आग्रह दऽ कहलथिन तँ सब खुशीमे थपड़ी बजबय लागल । वाइस प्रिंसिपल अड़ियातैत बाहर धरि अयलाह आ हुनक शान्ताक्रुज मे अपन स्कूल छनि । ततहु एक दिन अयबाक कष्ट करय कहलनि । मिस टाटा २७ ता. कऽ हुनका समाजक एक उत्सव छनि ताहिमे उपस्थित होयबाक निवेदन कयलनि । छात्रसँ शिक्षक धरिक मनोभाव एहन सन लागल जे एक शिक्षक सिने संसारमे अयलाह अछि से शिक्षक समुदायक हेतु गौरवक बात हो ।

ओहिठामसँ श्रीयुगलकिशोरजीक संग फ्लोराफाउन्टेन गेलहुँ । बससँ उतरैत देरी दादाभाइनौरोजीक प्रस्तरप्रतिमा देखल । हुनका माथपर चिड़ै-चुनमुन्नी तेना चटक कयने छलनि जेना भरि कपार ओ अद्‌भुत ढंगक चानन कयने होथि । श्रीउदयभानुजीक (आर्यावर्त्त इण्डियन नेशनक) कार्यालय एहिठाम वीर-नरीमन रोडमे छनि, हुनकासँ भेट करैत घुरलहुँ तँ बम्बै कार्पोरेशन कार्यालय तथा बोरीबन्दर स्टेशन देखैत कपड़ाक बाजार गेलहुँ । बुझि पड़ल जे कोनो अपरिचित लोककेँ आँखिमे पट्टी बान्हि लऽ जाइक आ ओहि बाजारमे जा कऽ फोलि दैक तँ ओतबे देखि कऽ ओ बम्बै अयबाक परिपूर्ण आनन्द अपनाभरि उठा लेत । श्रीयुगलकिशोरजी हमर मन पसन्दसँ एक जोड़ धोती किनलनि, ५२ इंच अठहत्थी धोआ अत्युत्तम ५१/-रु० एक जोड़ देलकनि । हमरा दरभंगा बाजारसँ कोनो खास विशेष अन्तर नहि बुझना गेल । हम अपनालै तौनी तकैत तकैत थाकि गेलहुँ, कतहु नहि भेटल । बाटमे सनकोर्थ निवासी श्रीदिनेश्वरझासँ भेट भेल । ९.३० रातिमे डेरा घुरि कऽ अयलहुँ । मुंशीजी आइओ पुनः भेट नहि देलनि ।

१४.८.६४

प्रातः उठि नित्यकृत्य समाप्त कऽ हेडमास्टर साहेब काल्हिजे मिनर्वाप्रेसक हेतु टेस्ट परीक्षाक प्रश्न चयन करबाक पत्र पठा देलनि से स्मृतिएक आधारपर चाहलहुँ जे सम्पन्न कऽ ली, तावत श्रीसुरेन्द्रजी कैमरामैन तथा गोरखपुर जिला निवासी श्रीवास्तव आबि गेलाह । हम अपरिचित छलहुँ, किन्तु श्रीरत्नेशक अनुपस्थितिमे अपने स्वागत सत्कारमे लगले छलहुँ कि मुंशीजी आबि गेलाह । श्रीरत्नेश काल्हि स्टूडियो गेलाह

नहिएँ आ हमरा फुसिए कहि देलनि जे मुंशीजी मगही फिल्म 'भैया' केँ रिलीज करबाक फेरमे पटना चल गेल छथि। तावत ११ बाजि गेल। मुंशीजी २ बजेक समय दऽकऽ चल गेलाह, तखन श्रीवास्तवजी मुंशी उपाख्यान सुनबय लगलाह। कहलनि– पूरे फिल्मिस्तानमे यह शख्स बेईमान नामसे मशहूर है। ऐसा झुट्ठा ढूंढने पर भी शायद कोई दूसरा आपको मिले। कोई आर्टिस्ट बिना एडवान्स पेमेंट किये इसकी फिल्ममें काम करना मंजूर नहीं करता है। कितने फिनान्सरको इसने चकमा देकर धता बता दिया है। आपको कितने का कॉन्ट्रेक्ट हुआ है ? हम कहलियनि– मैं तो इस दुनियाँसे बिल्कुल अपरिचित हूँ। क्या कैसे होता है, इसकी न तो जानकारी है और न मैं पर्दे पर उतरने की ख्वाहिश लेकर आया हूँ। यहाँ आने पर एकाएक तिवारी जी द्वारा मजबूर कर दिया गया और मेक-अप में जाना पड़ा.....

श्रीवास्तवजी बीचेमे टोक दैत कहलनि– यह सब मुझे मालूम है। आप यहाँ यूनियन का मेम्बर हो जाइए और अपने को रजिस्टर्ड करा लीजिए..... हमहू बीचमे टोक देलियनि– मुझे इस पेशे में रहना थोड़े है कि मैं यह सब करने जाऊँ। मेरा तो मातृभाषा-सेवा-व्रत है और यह मैथिलीकी पहली फ़िल्म है.... पुनः श्रीवास्तवजी टोक देलनि– बहुत 'रौंग डिसीजन' आप ले रहे हैं। यहाँ तो एक झाँकी देने का चान्स आदमी ढूंढता रहता है और इसके लिए सालों गली-गलीकी खाक छानता है, और आपको एक कैरेक्टर रौल मिल गया है। आप यहाँ जम जायँ तो हिन्दी फिल्मों में भी पाँव जमा सकते हैं। हम कहलियनि– श्रीवास्तवजी ! यह दुनियाँ मेरे संस्कार के बिलकुल विपरीत पड़ती है। मैं पढ़ने-पढ़ाने वाला हूँ, मुझे यह माहौल रास नहीं आता है। श्रीवास्तवजी खिन्न आ क्षुब्ध सन भेल उठि गेलाह।

अन्धेरीमे भोजन कयल आ टाका देबाक हेतु जेबी पर हाथ देल तँ जेबी पार। ओ तँ रच्छ छल जे एही गुजरातीक ओहिठाम अधिक काल भोजन करैत छलहुँ तेँ मानि गेल, अन्यथा की होइत से अनुमानसँ बाहरक बात छल। मनीवैगमे टाका पैसा तँ किछु विशेष नहि छल, किन्तु रेलक पास, लोक सभक पता, प्रो. श्रीसुरेश्वरझा जे बिदागरी उपन्यास पढ़ि अपन मन्तव्य लिखने छलाह से चिट्ठी, किछु कविताक कटिंग आदि मूल्यवान आ उपयोगी वस्तु चल गेल। मोने मोन अहंकारो छल जे बम्बैमे ककर मजाल थिकैक जेबी काटि लेत ? से अहंकार चूरचूर भऽ गेल। ओ तँ अभ्यास अछि जे किछु रेजकी डाँड़मे खोंसि लैत छी से आइ बड़ उपकारक भेल। ट्रेनक पास हेड़ाइए गेल छल, जँ डाँड़मे पाइ नहि रहैत तखन अन्धेरीसँ खार घुरि कऽ आयब परम दुर्घट भऽ जाइत। एक बातक प्रसन्नतो भेल जे जँ मुंशीजी जेना डेरा पर गेल छलाह तेना टाका दऽ देने रहितथि तँ आइ सब पार भऽ गेल रहैत।

डाँड़मेसँ पाइ बाहर कऽ खारक टिकट लेल, डेरा अयलहुँ तँ श्रीमहेशबाबूक

चिट्ठी भेटल । ओना डेरापर सँ ओझा वा श्रीबचकुनक चिट्ठी भेटबाक ड्यू डेट छल से नहि भेटल, ताहिसँ मोन आरो खिन्न भऽ गेल । चर्नीरोड जयबाक छल से हतोत्साह भऽ रहल छलहुँ । ओना ततबा पाइ डाँड़मे छलजे चर्नी रोड धरि जा आबि सकैत छलहुँ। श्रीमेहशबाबूक चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत ओहिमे छात्र सभक उद्वेग कोना बढ़ि रहल छैक, हमरा स्थानपर एक व्यक्तिक नियुक्ति भऽ गेलैक अछि आदि विवरण पढ़ि चित्त करुणार्द्र भऽ उठल, आँखिमे नोर भरि आयल । श्रीरत्नेशकेँ मुंशीजीक प्रतीक्षा करबाक हेतु डेरे पर छोड़ि चर्नी रोड बिदा भऽ गेलहुँ । विलम्ब तँ भैए गेल छल, किन्तु चर्नी रोड उतरि सड़क पारकऽ स्कूलमे जायब से २५ मिनट धरि मोटरक तेहन धरोहि लागल रहलैक जे देखि अचम्भित रहि गेलहुँ । सड़कक दूनू छोर धरि जतेक दूर धरि नजरि जाय, मोटरक कतार जेना मालगाड़ीक डिब्बा जोड़ल आबि रहल हो । पूरे २५ मिनट पर कनेक गऽर भेटल जाहिसँ सड़क पार कऽ सकलहुँ ।

स्कूलमे पहुँचलहुँ । श्रीयुगलकिशोरजी अड़िआइत कऽ भीतर लऽ गेलाह । प्रथम वर्गसँ सप्तम वर्ग धरिक मनोरंजनक कार्यक्रम छलैक । सब वर्गक छात्र अपन अपन वर्गक दिससँ प्रदर्शन कयलक । भावमुद्रा प्रदर्शन पूर्वक देशभक्ति पूर्ण गान सब। अङरेजीमे भाषण । स्वतन्त्रता संग्रामसँ सम्बद्ध महापुरुष सभक जीवनमे घटित कारुणिक ओ साहसिक घटनापर आधारित ५-७ मिनटक अभिनय ओ कथोपकथन आदि । करीब ५०० छात्र अनुशासनबद्ध बैसल । छोट-छोट बच्चा सब लागल जेना भरि खेत दनूफ फुलायल हो अथवा भरि पोखरिमे भेँट । एक कार्यक्रम समाप्त भेला पर थपड़ी जे बजबैत जाय से बूझि पड़य जेना पुलिस परेड कऽ रहल हो आ ओकर पदध्वनि भऽ रहल होइक । उपप्राचार्याक हाथमे एकटा बेंत, ओ बेंत जहाँ ऊपर उठल, थपड़ी बाजल, बेंत खसल, बस सब स्तब्ध, शान्त, निश्चल ।

नेना सभक कार्यक्रम समाप्त भेलापर वाइसप्रिंसिपल हमरासँ एक कविता सुनयबाक आग्रह कयलनि । हम 'जागो वीर जवानो' शीर्षक कविता सुनौलिऐक तखन सप्तमवर्गक मुनीटर उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल आ वाइसप्रिंसिपलसँ निवेदन कयलकनि जे हमरा दोसरो कविता सुनयबाक आग्रह करथि । छठम वर्गक मुनीटर निवेदन कयलकनिजे ई कविता बोर्ड पर लिखि देथि जे हम सब उतारि ली । हम दोसर कविता 'हम नवीन ज्योति पा प्रबुद्ध सावधान हैं' शीर्षक सुनौलिऐक आ पहिल कविता बोर्ड पर लिखि देलिऐक । वाइसप्रिंसिपल गुजरातीमे धन्यवाद देलनि । स्टूडियो जयबाक छल तेँ १.३० मे चलि देलहुँ।

डेरा अयलहुँ तँ धोबि आबि गेल छल । ओकरा कुर्त्ता देबऽ लगलिऐक तँ देखैत छी ओहीमे मनीवैग पड़ल अछि, जाहि लै ओतेक दुःख भेल छल, से पुनः भेटि गेलापर दोबड़ आनन्दो भेल । ३ बजे सँ ८.३० धरि श्रीफणिदाक संग बैसि स्क्रिप्टपर काज

कयल, ९ बजे डेरा घुरलहुँ । सायंकृत्य कऽ बनारसीक ओतय भोजनकऽ वान्द्रा गेलहुँ। ११ बजे गान्धीनगर पहुँचलहुँ, श्रीगोविन्दजी सूति रहल छलाह, जगाकऽ काल्हुक कार्यक्रम स्थिर कयल, १२ बजे खार घुरि अयलहुँ ।

१५.८.६४

आइ स्वतन्त्रता दिवस थिकैक । बाजारक कारबार यद्यपि बन्द छैक, किन्तु सर्वत्र चहल-पहल देखबामे आबि रहल अछि । जोगेश्वरीक मैथिल बन्धु आइ आयोजन कयने छथि । ९.३० मे हम पहुँचि जयबाक वचन देने छलियनि तेँ ९ बजे मे स्नान ध्यान कऽ एक गिलास मोसम्मीक रस पीबि बिदा भेलहुँ । बाटमे ट्रेनमे किछु खराबी भऽ गेलैक । एतेक दिनमे आइ ई पहिल घटना थीक । परिणामतः ९.३०क बदलामे ११.१५मे जोगेश्वरी पहुँचि सकलहुँ । स्वतन्त्रता दिवसक संग-संग तुलसी जयन्तीक सेहो आयोजन कयने छलाह । ओहिठाम सनकोर्थवासी सर्वश्री चन्द्रनन्दनमिश्र, सुरेन्द्रझा, बी.एस्-सी, नवलकिशोरझा, बब्लूचौधरि, वेदानन्दझा, रत्नेश्वरझा (जोंकी महिनाथपुर) आदि २५-३० व्यक्ति उपस्थित छलाह । ११.३० सँ १.३० धरि दू घंटा कार्यक्रम चललैक । विलक्षणता ई जे बम्बै होइतो एक भाग नूआक ओहार टाङल छलैक, ताहि पाछू मे चेम्बूरसँ सेहो बहुत स्त्रीगण जुटलि छलीह । हमरासँ मैथिली आ हिन्दी ७-८ गोट कविता सुनैत गेलाह । तुलसीदासपर लिखल लगनी स्त्रीगणमे बेसी पसिन्न कयल गेल जे निम्नांकित अछि :-

रानी बनलि हिन्दी, तुलसी तकर सिर बिन्दी
देश अभागल ताही दिनसँ जागल रे की ।
कहलनि ओ राम कथा जे, सीता केर मनक व्यथाजे
एक-एक पद अनुपम रसमे पागल रे की ।
पढ़ि-पढ़ि कय गौरव गाथा, उन्नत अछि देशक माथा
लोकक मनसँ संशय सब टा भागल रे की ।
चलला वन दूनू भैया, संगहि श्रीसीता मैया
चित्रकूट पर भरतक मनुआँ लागल रे की ।
रहला जा पंचवटीमे, लछुमन सङ पर्णकुटीमे
हरलक सीता रावण परम अभागल रे की ।
सजलनि ओ वानर दलकेँ, मारल जा निशिचर खलकेँ
मारि तीरसँ दानव-दलकेँ दागल रे की
भगत विभीषण राजा, लंकामे बाजल बाजा
सुर-नर-किन्नर सबहिक हृदय-जुड़ायल रे की
घुरला अवध दिस राम, पुलकित मन गामक गाम

अवधक लोकक हृदय अवधि पर टाङल रे की ।
जखने अवतरला तुलसी, हुलसित मन हुलसथि हुलसी
जर्जर भारतभूमिक अन्तर तागल रेकी ।
तुलसी जयन्ती बेला, लागल मन भावक मेला
चरण-कमलमे अमर अचलमति माङल रे की ।

श्रीमहेश्वरबाबूक कन्या चि. मञ्जू ओहारसँ बाहर आबि आग्रह करय लागलि जे एकदिन चेम्बूरमे हमरो डेरा पर समय दिअऽ । हुनका सभक कहब जे एहन गोष्ठी एहिठाम कम काल भऽ पबैत अछि ।

श्रीभुवन अपना ओहिठाम भोजनक व्यवस्था कयने छल । दालिभात, बड़, बड़ी तिलकोड़ा, अरिकोंछ, तरुआ सब जेना स्त्रीगणक विन्यास हो, दही, सेवै, मधुर आदि। अन्दाजसँ बेसी खयना गेल । चलैत काल एकजोड़ धोती बिदाइ करैत गेलाह । देखलजे श्रीयुगलकिशोरजी ओहिदन जे हमरा पसिन्नसँ अपना हेतु कहिकऽ धोती हमरासँ किनबौने छलाह से वस्तुतः अपना हेतु नहि, हमरे विदाइमे देबाक छलनि ।

श्रीयुगलकिशोरजी एकटा लिफाफमे पाँचटा दसटकही लेने अयलाह आ हमरा हाथमे धरा देलनि । पुछलियनि– की थिकैक ? कहलनि– काल्हि जे कविता पाठ कयने रहिऐ' ताहिलै स्कूल दिससँ पत्रम्पुष्पम् । हम अस्वीकार करैत कहलियनि– हमतँ अपने उद्विग्न छलहुँ, हमरा रहि-रहि स्कूल आ छात्र सभक स्वतंत्रता दिवसक आयोजन मन पड़ैत छल, होइत छल उड़ि सकितहुँ तँ उड़िकऽ दरभंगा चल जइतहुँ । सत्य पूछी तँ अनेकबेर आँखि भरि अबैत छल । तेहना स्थितिमे अहाँक स्कूल जा, बच्चा सभक मनोरंजक कार्यक्रम तथा ओकरा सभक अनुशासन-निष्ठता देखि अपूर्व शान्ति अनुभव कयलहुँ । तकर पारिश्रमिककी ?

श्रीयुगलकिशोरजी चल गेलाह । परन्तु ४.३०मे देखै छी कारसँ अपन प्रिंसिपलक संग होटलमे पहुँचि गेलाह । हम धड़फड़ाकऽ उठलहुँ, फोनपर चक्रवर्तीकेँ तीनटा चाह दऽ जाय कहलिऐक । प्रिंसिपल साहेब कने संकुचित होइत लिफाफ जेबीसँ बाहर करैत कहलनि– हमारा स्कूल विल्डिग तो बहुत बड़ा है मगर फिर भी पूअर है, आपके लायक यह नहीं है सिर्फ इसमें हमारी श्रद्धा है, आप स्वीकार नहीं करेंगे तो हमारे बच्चों को बहुत तकलीफ होगी । परसों आपने जो कविता बोर्ड पर लिख दी थी, बहुत लड़कोने उसे याद कर लिया है और बहुत अदबके साथ उसको गा भी लेता है। हम एक दिन और आपका प्रोग्राम करेंगे, आप जरूर आने की तकलीफ उठावें । उस दिन आप अपनी कविता हमारे बच्चोंके मुँहसे सुन लेंगे । हम कहलियनि– आप सिर्फ एक 'टेस्टिमोनियल' लिखकर दे देंगे वही काफी होगा । 'वो भी हो जाएगा' से कहैत चाह पीबि, लिफाफ ओछाओन पर छोड़ैत चल गेलाह । पछाति फोललापर देखल दसटा दसटकही आ एकटा एकटकही ओहिमे छल ।

एहिठाम खोलीसँ कनेक उँचगर जे खपरैल सब छैक तकरा चाल कहैत छैक। जोगेश्वरी रमाशंकरसिंह चालमे बहुत मैथिलब्राह्मण रहैत छथि जाहिमे किछु गोटे मिल आदिमे नौकरी करैत छथि आ अधिकांश अनुष्ठानी लोकनि छथि । बसौलीक श्रीरामेश्वरजी, जे हमरा सभक संग रमेश्वरलताक छात्र आ नवरत्न गोष्ठीक सदस्य सेहो रहथि, एहीठाम रहैत छथि, किन्तु सम्प्रति ग्राम गेल छथि ।

एहिबीच आइ जमि कऽ डबल अछार वर्षा भेलैक । श्रीगोविन्दजीकेँ ४ बजेक समय देने छलिऐनि से ५ बजे पहुँचि सकलहुँ । श्रीशान्तिनाथबाबूकेँ प्रेसमे भेट देबाक समय देने छलथिन से अति विलम्बक कारणेँ जखन हम सब ग्राण्ट रोड पहुँचलहुँ तँ प्रेस बन्द देखलियनि । ओहिठामसँ टैक्सी लऽ महालक्ष्मी गेलहुँ आ विजयानन्दजीक आराधना कयल । डा. श्रीबदरीनारायणझाक ओतय भगवानक पूजा छलनि तेँ टैक्सीसँ चैम्बूर गेलहुँ तावत ९ बाजि गेल । ओतय बहुत लोक जूटल छल । एकटा पाराशरजी रहथि जे बड़ मनोरंजक लोक । श्रीसूर्यनारायणझाक आग्रह पर ओ अपन एक हिन्दी कविता 'तमाकू' सुनौलनि, जेहने सूक्ष्म दृष्टि तेहने मधुर स्वर ओ चामत्कारिक उपस्थापनक कला, मुदा अस्वस्थताक कारणेँ दोसर कविता सुनयबासँ असमर्थता व्यक्त कयलनि । हमरोसँ हिन्दी ओ मैथिलीमे पाँच गोट रचना सुनैत गेलाह । रातुक भोजन ओतहि भेल, यद्यपि दिनुके भोजनसँ पेट गदगदायल छल तथापि एहूठाम दुराग्रह पर किछु बेसिए खाय पड़ल । चानपुरा निवासी पं. श्रीनरेन्द्रझा तथा करमौलीवासी श्री सदानन्द शास्त्री सँ नवीन परिचय भेल । एहू ठाम ई विशेषता देखबामे आयल जे गामे जकाँ काज प्रयोजनमे स्त्रीगणे पुरुषेँ सब काज करबाक हेतु जुटि जाइत छथि । काल्हुक हेतु केतुकाक श्रीतृप्तिनारायणझाक निमन्त्रण स्वीकार कऽ लेलियनि । १२ बजे खार घुरलहुँ ।

१६.८.६४

आइ स्टूडियो बन्दे छल । श्रीतृप्तिनारायणजी वान्द्रामे भानस कयने छलाह । श्रीवसिष्ठजीक संग भोजनक कऽ डेरा आबि किछु काल विश्राम कयल । श्रीगोविन्दजीक संग किछु दर्शनीय स्थान देखबाक कार्यक्रम स्थिर भेल छल । ओ स्वयं ३ बजे पहुँचि गेलाह, हुनका संग हैंगिंग गार्डेन आ कमला-नेहरू पार्क देखय गेलहुँ ।

ई एक उच्चपहाड़पर आमने सामने छैक । नीचाँसँ देखला उत्तर किछु दूर सघन जंगल आ तकर नीचाँ तरंगित समुद्र । नीचासँ स्वच्छ, धवल, किन्तु ऊपरसँ मैल-धूमिल । एहिठामसँ बम्बैक बहुत अंश दृष्टिगोचर होइत छैक । चौपाटी पर चलैत फिरैत लोक बकरी-भेंड़ी सन लगैत छल । कोनो तेहन विशेष बात नहि, हँऽ हरियरीसँ मातल चतुर्दिक एक कृत्रिम झरना, जकरा तरमे सामुद्रिक सितुआ सब ओछा देल गेल छैक।

ताहि पर दऽ बहैत जलक धारा लगैत छैक जेना चानीकेँ गला कऽ बहौने चल जाइत होइक । एकटा फुहार आ एकटा धीयापूताकेँ दूर-दूर धरि देखबाक हेतु १०-१२ हाथ ऊँच टावर जकाँ बनाओल । घास-फूस, फूल-पत्तीक मनोहर सजावटि। एकटा लतामण्डप, ताहि मध्यमे मत्स्य-क्रीड़ा स्थली, जे आब नष्टप्राय छैक । चिड़ै-चुनमुन्नीक हेतु एकटा जालीदार घरक व्यवस्था, मुदा ओहिमे एकटा हरिअर आ एकटा हमरा गाछीक पाकल बरबरिया आम सन छोटे, कनेक अरुणाभ आ कनेक पीताभ रंगक सूगा टा देखि पड़ल, आन-आन खाना सब शून्य देखबामे आयल । एहीठाम पारसी सभक श्मशान छैक । श्मशान की ? एकटा अन्धकूप सन बनल । श्रीगोविन्दजी पारसी सभक अन्त्येष्टि क्रियाक प्रसंग कहलनि जे मुइला उत्तर शवकेँ एहि कूपमे आनि शास्त्रीय विधिसँ लटका दैत छैक, जकरा चिल्होरि आदि पक्षी नोचि-नाचि कऽ खा जाइत छैक। एक निर्धारित अवधि छैक जखन हड्डी सुखा जाइत छैक, तखन ओकरा कोनो रासायनिक पदार्थक संग मिलाय मशीनमे पीसिलैत छैक आ आँटामे मिलाकऽ सानि लेलक, तखन गोली बना-बना समुद्रमे फेकि दैत छैक जे जल-जन्तु ओकरा खा जाय। ई तँ भेल कमलानेहरूपार्क ।

लत्तीसँ बनल हैंगिंग गार्डेन कमला नेहरू पार्कसँ ऊँच छैक । ओकरो ओहि पार जंगल आ समुद्र । एहिठाम एकटा गदहा, एकटा सवत्सा गाय आ एकटा गेंड़ाक मूर्त्ति बनल देखलिऐक । एकटा कोनो सेठक स्टैच्यू, तकरा पाछाँ एकटा वृत्ताकार चबुतरा ताहिमे रंग बिरंगक घास, से दूरसँ देखला उत्तर जेना यज्ञमण्डप पर सर्वतोभद्र बनल हो, तेहने लागल आ ताहि बीचमे समुद्री डोका सबसँ 'सत्यमेव जयते' लिखल आ ओ रेखा से हो ओही घाससबसँ सजाओल । बीच-बीचमे बैसबाक हेतु बेंच सब बनल । ओना रातिमे बम्बैमे जाही ठाम ठाढ़ होउ, जेना देहातमे बाधमे ठाढ़ भऽ चारूभाग देखला उत्तर वृत्ताकार हरिअर क्षितिज देखबामे अबैत छैक तहिना चारूकात वृत्ताकार दीप-मालिका देखि पड़ैत छैक ।

ओ सब देखि महालक्ष्मी गेलहुँ । ओतय विजयानन्दक आराधना कयल । श्री गोविन्दजी विशेष कार्यवश अपन डेरा चल गेलाह आ हम माहिममे श्रीत्रिदिवकुमारक ओतय गेलहुँ । श्रीत्रिदिवकुमार 'नैहर भेल मोर सासुर' फिल्ममे हीरोक काज कऽ रहल छथि । थिकाह ई बेतिया दिसुक आ त्योथा निवासी श्री हरिश्चन्द्रझा 'हरीश' ('छींक' एकांकीक लेखक)क जमाय थिकथिन । श्रीहरीशजीक कन्या चि. मञ्जू ततेक आग्रह करय लागलि जे बाध्य भऽ रातुक भोजन एतहि करय पड़ल ।

१७.८.६४

आइ डॉ. श्रीबदरीनारायण झाकेँ समय देने छलियनि । प्रातः कृत्य कऽ ८.४५मे बिदा भऽ गेलहुँ, मुदा यातायातक आइ घोर असुविधा भेल, जाहिकारणेँ १२ बजे चेम्बूर

पहुँचि सकलहुँ । २.३० धरि गप्प होइत रहल । हिनका मतेँ गोविन्ददासझा नहि, गोविन्द ठाकुर, घुसौते नगवाड़ थिकाह । हमरा जनैत गोविन्द ठाकुर शक्तिक उपासक आ सिद्ध पुरुष छलाह, जनिका प्रसंग 'धरह गोविन्दक पैर' मिथिलामे लोकोक्ति बनि गेल अछि । जे कामाख्या जाइतकाल एक मन्दिरकेँ एक विषधरसँ मुक्त कयलनि । ओ भगवानक मन्दिर छलनि जे विषधरक आवास बनि गेलाक कारणेँ जनशून्य भऽ गेल छल । ओहि ठामक लोक परतारि कऽ हिनका ओहि मन्दिरपर स्नान पूजा आदि करबाक हेतु स्थान देखा देलकनि । ओहि मन्दिरपर हिनका जाइत देरी विषधर बहरयलैक । तखन ओकरासँ त्राण पयबाक हेतु ई निम्नांकित श्लोकक पाठ कयलनि–

"नाथ प्रार्थनया कया नहि मया भूयो भवानर्थित:
कस्यां वा भवता कृपाङ्कलयिता नालस्यमध्यासितम्
निर्लज्जोऽस्मि तथाप्यनन्यशरण: श्रीमन्तमभ्यर्थये
कालव्याल मुखान्तरालपतितं गोपाल मां पालय"

जनश्रुति अछि जे विषधर तत्क्षण मन्दिरकेँ छोड़ि चल गेलैक । ई गोविन्ददासझा वैष्णव रहथि, किन्तु ओ तर्क पर तर्क दैत रहलाह । हमरा एहि विषयक कोनो विशेष अवगति नहि, तेँ शास्त्रार्थ नहि कयलियनि । अनुसन्धान कयनिहारमे बेसी लोक झोंकाहे भऽ जाइत अछि से प्रतीत भेल । हिनक स्त्रीक दुराग्रह पर रंग-विरंगक तरुआ भरि इच्छा खाय पड़ल । हिनका सभक अतिशय आग्रह जे रातुक भोजन एतहि करी।

स्टूडियो जयबाक छल । सुविधाजनक बस नहि भेटलाक कारणेँ दादर टी.टी. उतरलहुँ आ ट्रेनसँ अन्धेरी पहुँचलहुँ । श्रीनवेन्दुदाक मोन खराब भऽ गेलनि अछि, तेँ श्रीफणिदा चल गेल छलाह, से ५ बजे धरि प्रतीक्षा कयलाक बाद फोनसँ ज्ञात भेल। श्रीफणिदा कहलनि जे आइ आब नहि आयब । मुंशीजीसँ टाका लेल श्रीरत्नेश ओही ठाम छलाह, मुदा कोमहर बाटेँ कतय घसकि गेलाह से नहि जानि, चाभी हुनके लग छल । डेरा अयलहुँ तँ ताला बन्द, ५.३० सँ ६.३० धरि एमहर ओमहर चक्कर मारैत रहलहुँ । पुन: घुरिकऽ अयलहुँ तँ श्रीप्रशान्तजी भेटि गेलाह । ओ एकटा लगेक होटलमे बैसल चाह पिबैत रहलाह आ अपन दृष्टिकोण स्पष्ट करैत रचना सब सुनबैत रहलाह। ६.३० सँ ८.३० धरि ६कप चाह पीलनि आ गोड़ देशक कविता सुनौलनि । प्रत्येक कविताक पृष्ठभूमि आ तकर भाष्य संगहि । हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ । आस्तिकताक लेश नहि, नितान्त यथार्थवादी विचारक लोक । 'विधि का विधान' 'शासक का कानून और ऋषियों का विज्ञान', 'खाई और टीला' बहुत प्रगतिशील विचारक कविता लागल। श्रीयात्रीजीक अन्धभक्त, स्वाभिमानी आ फचाँड़ि लोक । कहलनि जे हम हृदय फोलिकऽ अपनेक समक्ष राखि देल अछि । 'शान्ति कलश' आ 'विश्लेषण' नामक दुइ गोट कविता संग्रह प्रकाशित करबाक प्रसंग सोचि रहल छथि । एहि व्यक्तिमे ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा छैक सेहो लहलह करैत ।

हम जिज्ञासा कयलियनि जे एहिठाम आजीविकाक कोन स्रोत अछि ? ताहिपर कहय लगलाह—

एहिठाम आजीविकाक अनन्त स्रोत छैक, जकरा जेहन लूरि से तेहन अपनौने अछि । हम मुख्यतः गीत लिखैत छी । दू चारि पाँच गीतकेँ कोनो म्यूजिक डाइरेक्टर सँ स्वरबद्ध करबाओल, तखन कोनो गायिकासँ ओकरा तैयार करबौलहुँ । ओकरा संग ओकरासँ सम्बद्ध आर्केस्ट्रा पार्टी रहैत छैक । गीत सब जखन नीक जकाँ तैयार भऽ गेल तखन कोनो हॉल लेलहुँ आ टिकट पर प्रोग्राम देलिऐक । १५ सँ २० हजार धरिक टिकट बिका जाइत अछि । ओहिमेसँ म्यूजिक डाइरेक्टर, गायिका, आर्केस्ट्रा पार्टी, हॉलक किराया आ टिकट बेचनिहारक कमीशन सबमे ७० सँ ७५ प्रतिशत खर्च भऽ जाइत अछि, तैयो ४-५ हजार बाँचि गेल जाहिसँ चारि पाँच मास धरि मौजसँ खयलहुँ पीलहुँ । जहाँ मनीबैग अधिआयल कि फेर तैयारी कयल । हमरा सर्वथा अव्यवस्थित जीवन प्रतीत भेल । एहन व्यक्तिक जीवनमे कहिओ स्थिरतो आबि सकैत छैक से सन्दिग्ध लागल । खासकऽ हम तँ अत्यन्त नियमित जीवन बितयबाक अभ्यासी रहलहुँ अछि, तेँ हमरा आरो अबूह बुझना गेल ।

८.३०मे हुनका बिदा कऽ पुनः डेरा अयलहुँ, किन्तु पूर्ववत् ताला लटकि रहल छल । पित्तेँ जी माहुर भऽ गेल । स्टूडियोसँ छटपटाकऽ एहि आशासँ आयल छलहुँ जे आइ चिट्ठी अवश्य आबि गेल होयत । विशेष कऽ ओझाक स्वास्थ्यक प्रसंग समाचार प्राप्त करबाक आरो बेसी उत्कण्ठा रहैत अछि, तदुत्तर श्रीमुन्नूजी सतत हमरे सँ लेपटायल रहैत छलाह, श्रीललनजी आब डेगाडेगी दैत होयत । ई सब स्मरण भेला उत्तर जी छटपटा उठैत अछि । बम्बै देखबाक जे आकर्षण छल से आब ओतेक नहि रहि गेल । आर्थिक किछु विशेष उपलब्धि होयत तकर ने आशा छल आ ने पर्दापर उतरलाक बादो किछु भऽ सकत तकर आशा अछि, प्रोड्यूसर केहन धूर्त्त अछि से चारू भागसँ लोकक मुहेँ सुनिए रहल छी ।

छटपटा कऽ फेर बाहर अयलहुँ तँ देखल जे श्रीप्रशान्तजी पानक खिल्ली लेने एम्हरे आबि रहल छथि । पान खयलहुँ आ पुनः हुनके संग ढहनयबाक हेतु बिदा भऽ गेलहुँ । १४म रास्ताक वाम भागमे चारिम मकानक आगाँमे श्रीविष्णुजी रहैत छथि । ई एक सुषमा नामक पंजाबिनसँ विवाह कयने छथि, जाहिमे दू टा बच्चा छनि, दूनू परम भव्य । ओ अपराजिता फिल्मक चर्चा, कन्यादान फिल्मक प्रगति आ 'नैहर भेल मोर सासुर' फिल्मक सम्बन्धमे उड़ल गोलंजर सभक प्रसंग चर्चा करैत रहलाह । ई कथाकार छथि आ वकाण्ड प्रत्याशामे छथि जे कोनो कथा फिल्मक हेतु कऽ लेल जायत तँ भाग्य बदलि जायत । १०.३० धरि गप्प होइत रहल, चलैत काल श्रीहीराबाबूसँ भेट करा देबाक अनुरोध कयलनि । श्रीहीराबाबू 'कन्यादान'क फिनान्सर थिकाह ।

बाटमे एक हिन्दीक कवि श्रीपथिकजीसँ भेट करौलनि, ओ पानक दोकान करैत छथि आ हिन्दीमे मुख्यत: गीत लिखैत छथि आशा छनि– अइहेँ कबहु वसन्त ऋतु इन डारनमे 'फूल' जँ फिल्ममे गीत लऽलेल गेलनि तँ फेर जीवनक धारा बदलि जयतनि । प्रेमसँ पान खोऔलनि आ गीत सुनबाक हेतु कहिओ समय बनाकऽ अयबाक आग्रह कयलनि' ११ बाजि गेल तँ श्रीप्रशान्तजीकेँ बनारसीक ओहिठाम किछु खा लेबाक आग्रह कयलियनि । तखन ओ कहलनि ओकरो एकटा भाय कवि छैक जकर पुस्तको, एकटा कवितासंग्रह छपल छैक । हमरा लागल जे जेना हिमालयक कन्दरा सबमे सुनैत छिऐक परमसिद्धि प्राप्तिक हेतु महात्मा लोकनि तपस्यामे लीन रहैत छथि तहिना बम्बैमे परम सिद्धि फिल्मिस्तानमे प्रवेश पयबाक कामनासँ साहित्यकार लोकनि खोह नहि, खोलीमे साधनारत रहैत छथि ।

बनारसीक ओतय हल्लुक सन भोजन कहू अथवा दमगर जलपान से कयल । काउण्टरपर कविजी अपनहि रहथि । चर्चा चलल तँ ओ श्रीयात्रीजीक नाम लेलनि। जखन हम कहलियनि जे ओ हमरासँ जेठ छथि, मुदा सम्बन्धेँ हमरा भागिन होयताह, तेँ निकटसँ सम्पर्क अछि, तँ ओ बड़ उल्लसित भऽ उठलाह । ओ हिन्दीए नहि, मैथिलीमे सेहो लिखैत छथि आ मैथिलीमे हुनकर शीर्षस्थान छनि से जानि आश्चर्यित भऽ उठलाह । हुनका जिज्ञासा जे मैथिली केहन भाषा अछि, तकर शान्त्यर्थ हम श्री यात्रीजीक 'मुनिक शान्तिमय पर्णकुटीमे, 'जननिहे सूतल छलहुँ हम रातिमे' आदि किछु पंक्ति सुनौलियनि तँ जल्दी विश्वासे नहि करैत छलाह । कहैत छलाहजे ऐसी भाषा तो बाबा नागार्जुन की नही मालूम होती है । श्रीप्रशान्तजी कहलथिन– मैथिलीमे वे यात्रीके नामसे लिखते हैं, हकीकत यह है कि कविकर्म पहले उन्होंने मैथिलीमें ही शुरू किया, बादमें हिन्दीमें आये । यह सच है कि मैथिलीमे कोई कलम का मजदूर बनकर पेट नही पाल सकता है, वैसे तो हिन्दीमें भी साहित्यकारोंका शोषण होता है, फिरभी कलम की मजदूरी कर किसी तरह गुजर-बसर कर लेने की स्थिति हिन्दीमे आ गयी है । गप्प सप्प होइत ११.४५ भऽ गेल । श्रीप्रशान्तजी चल गेलाह, हम डेरा घुरलहुँ, किन्तु डेरा बन्दे । क्रोधेँ देह जरय लागल । इच्छा भेल जे एक दोसरो ताला भरि वान्द्रा चल जाइ । एकतँ चिट्ठीक हेतु चित्तक उद्विग्नता दोसर बौआइत-ढहनाइत रहलाह कारणेँ शारीरिक श्रान्ति आरो उद्विग्न कऽ देलक । १२ बजे श्रीरत्नेश घुरलाह, इच्छा भेल जे चारि चटकन दियनि ।

अस्तु, घर फोललापर ओझाक भिन्न-भिन्न तारीखक लिखल दू गोट पत्र, एकटा श्रीबचकुनक पत्र, श्रीआदित्य (छात्र)क पत्र, गयासँ श्रीधरक पत्र, एक संग पाँच गोट पत्र भेटल, कोन पहिने पढ़ू, कोन पछाति से मोन उजबुजा गेल । ओझा अपन शारीरिक कुशलादि, डेराक स्थिति, श्रीमुन्नूजी द्वारा बारंबार हमर पुछारि, श्रीललनजीकेँ

दाँत होयबाक कारणेँ झाड़ तथा दुर्बलता आदिक प्रसंग लिखने छलाह, श्रीबचकुन साहित्यिक जगतक हमरा प्रसंग कयल जाइत अनुमान, भिन्न-भिन्न लोकक भिन्न-भिन्न टिप्पणी, श्रीमहेशशर्मा द्वारा हमर भविष्यमे की गतिविधि रहत तकर जिज्ञासा आदि लिखने छलाह । श्रीआदित्य स्कूलमे हमरा विरुद्ध कोना वातावरण बनाओल जा रहल अछि, श्रीझिंगुर बाबूकेँ कोना कान भरल जा रहल छनि, मैथिली पढ़निहार छात्र सबकेँ फोड़ि कऽ हिन्दी पढ़बाक हेतु कोना फुसियाओल जा रहल छैक आदि-आदि विषयक प्रसंग लिखने छलाह । श्रीधर अपन हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करैत ई आशा व्यक्त कयने छथि जे मामाजी (अर्थात् हम) आब लखपति भऽ जयताह)

१२.३० धरि पत्र सब पढ़ि उत्तर लिखय बैसि गेलहुँ । १.३० धरि में उत्तर सब भऽ गेल, किन्तु श्रीमुन्नूजीक स्मरण चित्तकेँ करुणार्द्र बना देलक । सुतबाक उपक्रम कयल, किन्तु निन्न जेना आँखिकेँ छोड़ि पड़ाय गेल । चाहलहुँ जे डायरी लिखि ली, किन्तु सेहो उत्साह नहि रहिं गेल, ३ बजेक बाद निन्न भेल । हँऽ एकटा बात छुटिए गेल । बौअयबाक क्रममे शाहपुर पटोरीक त्रिवेदीजीसँ परिचय भेल । ओ हमर वेश-भूषासँ अनुमान कयलनि जे हम मिथिलांचलक भऽ सकैत छी । हम मैथिलीभाषी छी से जानि चेहरा उद्भासित भऽ गेलनि । फिल्मिस्तानेमे काज करैत छथि । हम मैथिली फिल्मसँ सम्बद्ध छी से जानि हुनको 'पुश' करियनि से हुनक आग्रह ।

आइ कन्यादानक म्यूजिक डाइरेक्टर श्रीमती विन्ध्यावासिनी देवी श्रीहीरा बाबूक पत्नी एवं अन्य चारि व्यक्तिक संग पटनासँ अबैत गेलीह ।

१८.८.६४

आइ ८ बजे तैयार भऽ गेलहुँ, दूधों नहि पीलहुँ, जे ८.३० धरि वान्द्रा पहुँचि जाइ, मुदा एकटा ट्रेन कैन्सिल भऽ गेलाक कारणेँ से संभव नहि भऽ सकल । तखन अन्धेरी चल गेलहुँ, तार मनीआर्डर करबाक छल से ८.३० सँ १०.३० धरि पंक्तिमे ठाढ़ रहला उत्तर मनीआर्डर संभव भऽ सकल । लिफाफमे गोंद नहि छलैक, ताहि लेल रनेवने बौअयलहुँ तखन एक ठाम २ पाइमे ओ साटल जा सकल आ ओ स्थान पुनः पोस्ट ऑफिसेक चनमाड़मे भेटल । बम्बै सन नगरमे दुइओ पाइक मोल छैक आ ओ व्यक्ति एहीसँ अपन जीविका चलबैत अछि । समयाभावक कारणेँ ककरो जल्दीसँ पोस्टकार्ड, लिफाफ, टिकट आदि उपलब्ध करा देलकैक ताहिमे ५ पाइ १० पाइ कमीशनमे भेटि गेलैक । एहि प्रकारेँ अपन ओ अपना परिवारक भरण पोषण करैत अछि । बम्बै सँ समीपेमे देहातमे घर छैक, परिवार गामेमे रहैत छैक, अपने फुटपाथी जीवन बितबैत अछि । खोधिया-खोधियाकऽ पुछला उत्तर ई सब कहलक । ओकरा आश्चर्य होइक जे एतेक फालतू समय एहि व्यक्तिकेँ कोना भेटि रहल छैक जे एतेक

दाँत होयबाक कारणेँ झाड़ तथा दुर्बलता आदिक प्रसंग लिखने छलाह, श्रीबचकुन साहित्यिक जगतक हमरा प्रसंग कयल जाइत अनुमान, भिन्न-भिन्न लोकक भिन्न-भिन्न टिप्पणी, श्रीमहेशशर्मा द्वारा हमर भविष्यमे की गतिविधि रहत तकर जिज्ञासा आदि लिखने छलाह । श्रीआदित्य स्कूलमे हमरा विरुद्ध कोना वातावरण बनाओल जा रहल अछि, श्रीझिंगुर बाबूकेँ कोना कान भरल जा रहल छनि, मैथिली पढ़निहार छात्र सबकेँ फोड़ि कऽ हिन्दी पढ़बाक हेतु कोना फुसियाओल जा रहल छैक आदि-आदि विषयक प्रसंग लिखने छलाह । श्रीधर अपन हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करैत ई आशा व्यक्त कयने छथि जे मामाजी (अर्थात् हम) आब लखपति भऽ जयताह)

१२.३० धरि पत्र सब पढ़ि उत्तर लिखय बैसि गेलहुँ । १.३० धरि मैं उत्तर सब भऽ गेल, किन्तु श्रीमुन्नूजीक स्मरण चित्तकेँ करुणार्द्र बना देलक । सुतबाक उपक्रम कयल, किन्तु निन्न जेना आँखिकेँ छोड़ि पड़ाय गेल । चाहलहुँ जे डायरी लिखि ली, किन्तु सेहो उत्साह नहि रहि गेल, ३ बजेक बाद निन्न भेल । हँऽ एकटा बात छुटिए गेल । बौअयबाक क्रममे शाहपुर पटोरीक त्रिवेदीजीसँ परिचय भेल । ओ हमर वेश-भूषासँ अनुमान क्यलनि जे हम मिथिलांचलक भऽ सकैत छी । हम मैथिलीभाषी छी से जानि चेहरा उद्भासित भऽ गेलनि । फिल्मिस्तानेमे काज करैत छथि । हम मैथिली फिल्मसँ सम्बद्ध छी से जानि हुनको 'पुश' करियनि से हुनक आग्रह ।

आइ कन्यादानक म्यूजिक डाइरेक्टर श्रीमती विन्ध्यावासिनी देवी श्रीहीरा बाबूक पत्नी एवं अन्य चारि व्यक्तिक संग पटनासँ अबैत गेलीह ।

१८.८.६४

आइ ८ बजे तैयार भऽ गेलहुँ, दूधो नहि पीलहुँ, जे ८.३० धरि वान्द्रा पहुँचि जाइ, मुदा एकटा ट्रेन कैन्सिल भऽ गेलाक कारणेँ से संभव नहि भऽ सकल । तखन अन्धेरी चल गेलहुँ, तार मनीआर्डर करबाक छल से ८.३० सँ १०.३० धरि पंक्तिमे ठाढ़ रहला उत्तर मनीआर्डर संभव भऽ सकल । लिफाफमे गोंद नहि छलैक, ताहि लेल रनेवने बौअयलहुँ तखन एक ठाम २ पाइमे ओ साटल जा सकल आ ओ स्थान पुनः पोस्ट ऑफिसेक चनमाड़मे भेटल । बम्बै सन नगरमे दुइओ पाइक मोल छैक आ ओ व्यक्ति एहीसँ अपन जीविका चलबैत अछि । समयाभावक कारणेँ ककरो जल्दीसँ पोस्टकार्ड, लिफाफ, टिकट आदि उपलब्ध करा देलकैक ताहिमे ५ पाइ १० पाइ कमीशनमे भेटि गेलैक । एहि प्रकारेँ अपन ओ अपना परिवारक भरण पोषण करैत अछि । बम्बै सँ समीपेमे देहातमे घर छैक, परिवार गामेमे रहैत छैक, अपने फुटपाथी जीवन बितबैत अछि । खोधिया-खोधियाकऽ पुछला उत्तर ई सब कहलक । ओकरा आश्चर्य होइक जे एतेक फालतू समय एहि व्यक्तिकेँ कोना भेटि रहल छैक जे एतेक

बात हमरासँ पूछि रहल अछि । कखनहुँ कचकचा उठय, हिन्दीजे बाजय से बहुत ठेकनौला उत्तर बुझबामे आबय । जखन कहलिऐक जे हम कथाकार छी आ फिल्मिस्तानमे डायलॉग डाइरेक्टर आ कैरेक्टर रौल कऽ रहल छी तँ नीचासँ उपरधरि निघारय, जेना हम ठकि रहल होइऐक ।

९.२०क डाकसँ चिट्ठी नहि जा सकल । गुजराती होटलमे भोजन कऽ डेरा घुरि अयलहुँ । रातुक जागरणाक कारणेँ आँखि कुट-कुटाइत छल तेँ १२ बजे सुति रहलहुँ । श्रीफणिदा ४ बजे स्टूडियो आबऽ कहने छलाह । समयपर पहुँचलहुँ आ ५.४५ धरि सिक्वेंसपर काज कयल । जहाँधरि संभव हो, कमसँ कम शब्दमे कथोपकथनक भावकेँ स्पष्ट करबाक संगहि संग सरलसँ सरल शब्दक प्रयोग करबाक हेतु बाध्य करैत रहैत छथि, किन्तु कठिनता तँ ई छैक जे मैथिलीक ध्वनि पकड़बामे एहि अन्यभाषाभाषीक हेतु अत्यन्त कठिन होइत छैक । ६ बजे डेरा घुरि अयलहुँ, श्रीरत्लेश सेहो संगहि अयलाह, किन्तु एतयसँ पूर्णिमा होटल चल गेलाह ।

बम्बैमे प्रत्येक ठाम पंक्तिएमे काज होइत छैक । बसमे चढ़बाक हो, ट्रेनमे टिकट लेबाक हो, कोनो दोकानपर किछु किनबाक हो, पोस्ट ऑफिसमे लिफाफ आदि लेबाक हो, एतेक दूर धरिजे कोनो स्टेशनपर लघुशंका लागि गेल तँ पेशाबखाना लग सेहो पंक्तिएमे ठाढ़ रहय पड़त, से कखनहुँ १५-२० मिनट धरि प्रतीक्षा करय पड़ि सकैत अछि । एहिठाम सबसँ कठिनता लघुशंके करबामे होइत अछि । बैसिकऽ लघुशंका करबाक कतहु व्यवस्था नहिं छैक आ ठाढ़े ठाढ़ करबाक अभ्यास अछि नहि। डेरापर अपन पैखानामे चल जाइत छी तथा स्टूडियोमे तँ जंगल जकाँ छैक तेमहर चल जाइत छी, यद्यपि तकरा अशिष्टता बूझल जाइत अछि । जँ कतहु पंक्तिसँ बाहर रहि काज सुतारि लेबऽ चाहब तँ भरि दिन ठाढ़े रहि जाय पड़त । कलकत्ता जेना कोलाहलमय आ अस्त-व्यस्त सन लागल तेना बम्बैमे कतहु नहि । हमरा दृष्टिएँ कलकत्ता मनुक्खक जंगल थीक आ बम्बै कृत्रिम उद्यान, जाहिठाम सब गाछ-वृक्ष, लता-गुल्मकेँ कटि छाँटि बेउरेब नहि रहय देल जाइत छैक, यद्यपि एहिठाम अनुखन रेल, बस, कार, वायुयान चलिते रहैत छैक, तथापि एक प्रकारक अद्भुत शान्ति सर्वत्र देखबामे अबैत अछि । रेलगाड़ीमे लोक लदल रहैत छैक, मुदा क्यौ ककरो टोकनिहार नहि । संयोगसँ हमरा लोकनि दू चारि मैथिलजँ ट्रेन वा बसमे यात्रा करैत रहैत छी तँ स्वभावत: गप्प-सप्प, अपनामे हास्य-विनोद करिते चलैत छी, से देखि एहि ठामक लोक विस्मित-चकित होइत रहैत अछि । ने जानि ओ सब असभ्य बुझैत अछि अथवा औरो किछु, किन्तु सभक ध्यान हेतु हम सब केन्द्र-बिन्दु बनल रहैत छी ।

मेघ एहिठाम कोमहर दऽ अबैत छैक आ झमकि कऽ चल जाइत छैक तकर कोनो ठेकान नहि; ओहि कालमे सम्पूर्ण नगर जेना प्लास्टिकक तऽरमे नुका रहैत

अछि। फुटपाथ पर रहनिहार अपन ओछाओन-बिछाओन, भूजा बेचनिहार पर्यन्त अपना खोमचाकेँ झाँपि निश्चिन्त भऽ जाइत अछि । कतहु कोनो छायामे दौड़िकऽ जाय अपनाकेँ बचा लेब से अत्यन्त दुर्लभ ।

आइ बड़ बेसी थाकनि केर अनुभव कऽ रहल छलहुँ, तेँ कतहु जयबामे आसकति भेल । डॉ. श्रीबदरीनारायण झाक पुस्तक पढ़य लगलहुँ, कखन निद्रा भऽ गेल से अपना बुझबाक योग्य नहि भेल । श्रीरत्नेश १२.१५ रातिमे पूर्णिमा होटलसँ घुरलाह आ केबाड़ पिटलनि तँ निन्न टूटल । तखन मोन पड़ल जे आइ भोजनो नहि कयलहुँ । अस्तु, सुतबे नीक से सोचि पुनः कल्याण करौट दऽ देल, किन्तु किछु कालक बाद पेट कुलबुलाय लागल, तेँ गाढ़ निद्रा नहि भऽ सकल ।

आइ ओहि तन्द्रिल अवस्थामे एक अद्‌भुत स्वप्न देखलहुँ जे कोनो बहुत पैघ रेलवे जंक्शन पर ट्रेनक बदली अछि से हड़बड़ायल एक ट्रेन सँ उतरि दोसर ट्रेनमे चढ़य जा रहल छी, मोटा भारी अछि, तावत बड़का भाइ (राजपण्डित श्रीबलदेव मिश्र) शोर करैत छथि– औ चन्द्रनाथ ! हम अहाँकेँ आशीर्वाद देबऽ बम्बै जा रहल छलहुँ जे अहाँ मातृभाषाक बड़ पैघ सेवा कयल अछि । हमर मोटा खसि पड़ैत अछि कि निन्न टूटि गेल । घड़ी देखल ४.५० भऽ रहल छलैक ।

१९.८.६४

आइ स्टूडियो नहि जयबाक छल । एक दिन श्रीनवेन्दुदा कहने छलाह जे 'कन्यादान जिस समय लिखा गया था उस समय स्त्रीशिक्षाकी ऐसी स्थिति रही होगी, आज इसका थीम पुराना पड़ गया है । कोई माडर्न टॉपिक पर नोभेल हो तो वह दिखाइये जिसको फिल्माया जा सके ।' तखन हम अपन बिदागरी उपन्यासक चर्चा करैत कहने छलियनि जे दहेज तो आज कल बर्निंग टॉपिक है । उसमें भी लोग लड़के वाले को तो बहुत कोसते हैं, मगर ऐसा भी तो होता है कि लड़की वाला पहले बहुत लम्बी-चौड़ी बात करता है और बादमें अपनी मूर्ख लड़की गले बाँध देता है जिससे कई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं । मेरे उपन्यासका कुछ ऐसा ही थीम है । ओ बहुत उत्सुकता देखौने छलाह ।

बिदागरीक एक मात्र प्रति संगमे अछि जे श्रीगोविन्दजी पढ़बाक हेतु लऽ गेल छथि से अनबाक हेतु सबेरे तैयार भऽ ८.१५मे बान्द्रा पहुँचि गेलहुँ । हुनकासँ पुस्तक लेल आ श्रीनवेन्दुदाक डेरा पर विदा भेलहुँ । दुर्योग एहनजे भुतिया गेलहुँ, कतबो चेष्टा कयल, डेरा नहि भेटल, तखन स्टूडियो गेलहुँ तँ पता लागल जे नवेन्दुदा आइ प्लेन सँ कलकत्ता चल गेलाह । पोथी हुनका नहि दऽ सकलियनि । अन्धेरी गुजराती होटलमे भोजन कऽ डेरा अयलहुँ तँ एकटा चर्नी रोड स्कूलक छात्र भेटि गेल । हम तँ नहि

चिन्हलिऐक, ओ बेस विनम्रतापूर्वक नमस्ते कहलक आ डेरा धरि संग आयल । १४ ता. कऽ जे कविता सुनौने रहिऐक से सौंसे गाबिकऽ सुना देलक आ कहलक मेरी बहन जब मेरे साथ मिलकर गाती है तो पापा और मम्मी बहुत खुश होते हैं । आप एक दिन मेरे घर चलो, मेरे पापा बहुत खुश होंगे । पुछलिऐक– स्कूल नहीं गये ? तँ कहलक आज मेरा वर्थ डे था । १.४५ मे चर्नीरोड पहुँचलहुँ । स्कूलक छात्र सब नमस्ते नमस्ते कहैत चारू कातसँ घेड़ि लेलक । टिफिन केर समय छलैक । पाँचमवर्गक एक टा छात्र १४ ता. क सुनाओल कविताक दूटा पाँती सुनौलक आ कहलक एक दो बार और सुनने पर पूरी कविता सुना दूंगा । कहलिऐक– उस दिन बोर्ड पर तो मैंने लिख दिया था, बहुत लड़कोंने लिखा, तुमने क्यों नहीं लिख लिया ? कहलक– हाँजी मेरीपेन फेल हो गई थी तो कैसे लिख पाता ? श्रीयुगलकिशोरजीक कथा देखिलियनि । हुनकासँ समय निर्धारित कऽ अपने फ्लोराफाउन्टेन चल गेलहुँ, किन्तु भानुजी नहि भेटलाह । घूरल अबैत छलहुँ कि श्रीगोविन्दजी भेंटि गेलाह । टाइम्स ऑफ इण्डियाक कार्यालय देखि लेबाक आग्रह कयलनि । श्रीयुगलकिशोरजीकेँ समय देने छलियनि एतहि अयबाक हेतु, तेँ घुरिकऽ भानुजीक स्टेनोकेँ कहि देलियनि जँ ओ आबथि तँ बैसयबनि अथवा टाइम्स आफिस पठा देबनि । टाइम्स ऑफ इण्डियाक कार्यालयमे लिफ्टसँ ऊपर गेलहुँ । लाइनो–टाइपक कम्पोजिंग सेक्शनमे श्रीरामचन्द्रजी भेटलाह । संगमर्मरसँ बनल भीतरमे ग्राउण्ड, सीढ़ी सब किछु । क्लर्कोसभक कोठलीसब एयर कण्डीशण्ड । प्रिंटिंग सेक्सन, वाइण्डिग सेक्सन सब घूमि कऽ देखौलनि । दरभंगामे तँ प्रायः नरगौना पैलेश एकर समता कऽ सकय तऽ कऽ सकय । श्रीविमलचन्द्रदास कार्यव्यस्तता प्रयुक्त किछु आतिथ्य नहि करा सकबाक हेतु क्षमा याचना करैत श्री महेश्वर बाबूक ओतय चेम्बूर अयबाक वचन देलनि । तावत श्रीयुगलकिशोरजी सेहो पहुँचि गेलाह । महालक्ष्मी होइत चेम्बूर जयबाक हेतु कहलियनि तँ श्रीगोविन्दजी चेम्बूरेमे विजयानन्दसँ भेट करयबाक आश्वासन दऽ ओम्हरे चलबाक निर्णय लेलनि। तीनू गोटे ओतयसँ सोझे चम्बूर अबैत गेलहुँ ।

मैथिलक ठट्ठ हो आ विजयानन्द नहि रहथि से संभव कोना ? श्रीमहेश्वरे बाबूक डेरापर आजुक सायं कृत्य भेलैक । चि.मंजूकेँ आइ असीम प्रसन्नता छैक । साँझमे जमि कऽ एकटा गोष्ठी भऽ गेलैक । समय पर श्रीविमलचन्द्रदास, श्री देवकान्तबाबू आदि जुटि गेलाह । जेना महल्लामे हँकार पड़ल होइक । अरोसपरोसक मराठी, गुजराती, सरदार सेहो सब जुटि गेल । चि. मंजू, सुनीता, इन्दीवरजी, दिनेश्वरजी सब गीत गाबि गाबिकऽ सुनबैत गेलाह । परोसीक एक कन्या मराठीमे एकटा उद्बोधन गीत सुनौलक जे चामर छन्दमे छलैक । हमरोसँ ६–७ टा हिन्दी–मैथिलीक कविता सुनैत गेलाह । श्रीविमलजी ऋतुप्रियाक किछु कविता सुनि कहलनिजे एहि सबकेँ म्यूजिकमे बान्हिकऽ प्रोग्राम देल जाइक तँ कोनो गुजराती वा मराठीक प्रोग्रामसँ

बेटर भऽ सकैत छैक । कार्यक्रम समाप्त होइत करीब एगारह बाजि गेल । रातुक भोजन एहीठाम भेलैक । तिलकोड़, अरिकोंछ, बड़ी आदि मैथिलक भोजनक संग किछु-किछु गुजराती, मराठी रुचिक सेहो । बेस सँचार लागल, भोजन होइत १२ आ डेरा घुरैत १२.३० भऽ गेल । श्रीतृप्तिनारायणझा बन्दरगाह देखबाक हेतु शुक्र दिन आबय कहलनि।

२०.८.६४

आइ १०.३० सँ श्रीफणिदाक संग डायलॉग पर बैसबाक छल । अतः दोसर कोनो कार्यक्रम आइ नहि रहल, किन्तु स्टूडियो गेला उत्तर श्रीफणिदा रवि दिन बैसबाक समय दऽ दोसर काजमे लागि गेलाह । डेरा घूरि अयलहुँ आ भरि दिन डॉ. श्रीबदरीनारायणझाक पुस्तक पढ़ैत रहलहुँ । श्रीबदरीबाबू सतीशचन्द्रराय तथा अनेक विद्वानक मतक उल्लेख करैत ई सिद्ध करबाक प्रयास कयने छथि जे वस्तुतः मैथिली पदावली जे बंगालमे प्रचलित छल तकर कल्पना प्रसूत ब्रजबुली नाम २० म शताब्दीमे प्रचारित कयल गेल अछि, थीक ओ सब विशुद्ध मैथिली । साँझमे पढ़ैत-पढ़ैत अकछि गेला पर दवाइ ताकऽ वान्द्रा दिस गेलहुँ । श्रीउदयभानुजीसँ भेट नहि भेल । राति मात्र दूध आ केरा पर बितौलहुँ । श्रीरत्नेश १२.१५ रातिमे घुरि कऽ अयलाह ।

२१.८.६४

आइ बन्दरगाह देखबाक निर्णय भेल छल, भेटक हेतु रेक्स सिनेमा लग २.३० बजे समय निर्धारित रहय । चर्नी रोड पारसी सभक स्कूलमे 14 अगस्तक बाद आजुक समय देने छलियनि तेँ सबेरे भोजन कऽ घुरबोक छल । श्रीवसिष्ठजी बाटहि भेटि गेलाह । हुनका संग मद्रास भुवनमे चाह पीबऽ गेलहुँ, कप प्लेटक बदला काँसक एक बाटीमे काँसेक डंटी लागल कटोरीमे चाह देलक । एहन व्यवस्था आन होटलमे नहि देखलिऐक । अन्धेरीसँ घुरतीमे श्रीगोविन्दजी, श्रीजयकृष्णजी तथा खारवाला श्रीतृप्तिनारायणजी भेटि गेलाह । श्रीगोविन्दजी चर्नीरोड धरि संग गेलाह, किन्तु स्कूल चलऽ कहलियनि तँ कहलनि– एहिठाम एहन रेबाज नहि छैक । बिनु बजौने कोनो सभा-समितिमे चल जायब अशिष्टता बूझल जाइत छैक । केवल खुला मैदानमे जँ कोनो राजनीतिक नेताक भाषण आयोजित होइक तँ ओहिमे क्यौ जा सकैत अछि, मुदा पलखति ककरा छैक ।

तावत श्रीयुगलकिशोरजी स्कूलसँ बाहर अयलाह । ओहो बिना प्रधानाचार्यक अनुमति लेने संग नहि लऽ जा सकैत छलथिन । अगत्या श्रीगोविन्दजी चल गेलाह । स्कूलमे कार्यक्रम सन्तोषजनक प्रतीत भेल । अनेक छात्र जकरा हिन्दीक प्रति कने बेसी अभिरुचि रहैक से सब हमर आवासीय पता नोट कऽ लेलक ।

श्रीयुगलजीक संग रेक्स सिनेमा लग २.३० बजे पहुँचि गेलहुँ आ श्रीतृप्तिनारायणजी

(चेम्बूर)क प्रतीक्षा ३.१५ धरि कयलियनि, मुदा कोनो कारणवश आइ नहि आबि सकलाह तँ सेन्ट्रल लाइब्रेरी देखबाक विचार भेल । श्रीयुगलजी संग छलाह । सेन्ट्रल लाइब्रेरीक विशालता, सौन्दर्य, आ व्यवस्था मनकेँ मुग्धकऽ देलक । संयोगवश श्रीउदयभानुजी ओतहि भेटि गेलाह । हुनके संग गप्प सप्प करैत महालक्ष्मी अयलहुँ, श्रीयुगलजी हट्ठाक फूजल रहथि तेँ अपन डेरा चल गेलाह ।

महालक्ष्मीमे मुरलियाचक बासी श्रीलूटनमिश्र (ई रमेश्वरलता सं. विद्यालय, दरभंगामे हमरासँ तीनवर्ष आगाँक छात्र रहथि, फेल होइत होइत हमरा संग भऽ गेल रहथि । ओहू वर्ष मध्यमातृीय खण्डमे फेल भऽ गेलापर भाभट समटि गाम चल गेलाह, विगत १०-१२ वर्षसँ एहि ठाम गोपाल सहस्रनाम, विष्णु सहस्रनाम आदि पाठकऽ हजार-बारह सय कमा लैत छथि) कालिकापुरक लक्ष्मीकान्तझा, कलिगामक श्रीकृष्णदेवझा (गवैया) आ बेलाक श्रीभागेश्वर (दूरक सम्बन्धेँ सरबेटा) सेहो भेटि गेलाह । भानुजी नृत्य-गीतक हेतु फेर आग्रह कयलनि ।

महालक्ष्मीमे विजयानन्दसँ भेट भइए जाइत अछि, डेरा पहुँचैत श्रीभानुजीक आग्रहकेँ पूरा करबाक हेतु कागत कलम लऽ बैसि गेलहुँ, मुदा श्रीरत्नेशकेँ तकैत श्रीवास्तव पहुँचि गेलाह । श्रीरत्नेश ९.३०क बदला ११.३०मे अयलाह, हिनका आइ श्रीवास्तवेक ओतऽ भोजनकरबाक छलनि तेँ श्रीवास्तव प्रतीक्षेमे बैसल रहलथिन । परिणामतः हमरा कलमबन्द कऽ लेबऽ पड़ल । अल्ल-बल्ल गप्पमे समय नष्ट भऽ गेल । हिनका मतेँ महात्मा गान्धी जीवन भरि गलतीए करैत रहलाह । ओ तँ धन्य पं. जबाहरलाल नेहरू जे निर्भीक, परमवीर ओ आदर्शपुरुष रहथि, जे गान्धीक नामकेँ ओहीप्रकारेँ अमरबना देलथिन जेना स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंसक नामकेँ। हम व्यर्थ हिनकासँ मुँहचौथौअलि करब नीक नहि बुझलहुँ । हमर गीतक तन्तु टूटि गेल छल तेँ मन खौँझायल रहंय, विवाद कयने उत्तेजना बढ़बे करैत, तामस रत्नेश पर भेल जे ककरो समय दऽ मटरगश्ती करैत रहल ।

२२.८.६४

आइ नारियली पूर्णिमा थिकै, तेँ बम्बइमे सब कल-कारखाना, स्कूल-कालेज बन्द छैक । एहि ठामक निवासी आजुक दिन समुद्रक पूजा करैत अछि । सब समुद्रकेँ नारिकेरि चढ़बैत छनि आ अनिवार्य रूपेँ खाइतो अछि, जकरा दाँत नहि छैक सेहो थूरि कऽ मुँहमे अवश्य लैत अछि । जुहू आ चौपाटी पर एहन विशाल मेला दोसर दिन नहि होइत छैक ।

एकर आधार की छैक से अन्वेषण कयला पर दू तरहक बात सुनबामे आयल। एक गोटे कहलक– एहि ठामक मूल निवासी मछुआ सब थीक । एकरा सभक

जीविका समुद्रे पर निर्भर छलैक । माछ मारब, शंख, घोंघा, डोका, सितुआ आदि छानिकऽ बाहर करैत अछि । कोनो-कोनो भाग्यवानकेँ सितुआ (सीप) मे अकस्मात् मोती भेटि जाइत छैक तँ ओ धनवान भऽ जाइत अछि । ककरो दक्षिणावर्त्त शंख भेटि गेलैक तँ तकर बहुत मूल्य भेटि जाइत छैक । ई सब समुद्रेकेँ अपन अत्याराध्य देवता मानैत अछि । एहि समयमे आबि समुद्रमे बेसी 'तूफान' अबैत रहैत छैक जाहि कारणेँ आजीविकामे व्यवधान आबि जाइत छैक । अपना सभक ओतऽ जेना खेतिहर जन-बोनिहारक हेतु कातिक मास कष्टकारक, तहिना एहिठामक मछुआ सभक हेतु ई समय । पूर्णिमाक बाद क्रमशः समुद्र शान्त होअऽ लगैत छैक । तेँ एही पूर्णिमा दिन ई सब समुद्रक पूजा करैत अछि । मुख्य रूपसँ ई एही वर्गक पावनि थिकै, किन्तु देखा देखी समाजक अन्यान्यो वर्ग एहिमे क्रमशः सम्मिलित होइत गेल तेँ ई सर्वसामान्यक पावनि भऽ गेलैक ।

दोसर व्यक्ति कहलक— पारसपर जखन विदेशी आक्रमण भेलैक तँ जान बचयबा लै १७ टा जहाजपर सवार भऽ बहुत लोक पड़ायल, मुदा दुर्योगवश १४ टा जहाज सामुद्रिक अन्हड़-बिहाड़िमे जलसमाधि लऽ लेलकै, शेष तीन गोट जहाज परक लोक एहि ठाम किनार लागल । प्राण रक्षा भऽगेलै' तकरे कृतज्ञता स्वरूप ओ सब समुद्रक पूजा कयलक । ओहि दिनसँ पारसी लोकनि एहि पर्वकेँ मनायब आरम्भ कयलनि । परन्तु आइ देखलिऐ' जे पारसीसभक स्कूल फुजले छैक तेँ पहिलके कथन तर्क संगत लागल ।

आइ श्रीशान्तिनाथबाबूक आवास पर मिथिला-मण्डल दिससँ स्वागतार्थ एक आयोजन छल जाहिमे शतावधि लोक उपस्थित छलाह । विशेष रूपेँ प. तिलकधारीझा सँ परिचय भेल । एहन कर्मठ मैथिल एहि नगरमे दोसर नहि छथि । कहियो ईहो देशसँ पड़ाइए कऽ आयल रहथि । शैक्षणिक योग्यता साधारणे छनि, तथापि अपन कर्मठताक प्रसादेँ अपन विशाल प्रासादतँ बनौनहि छथि, संगहि सामाजिक उपकार करबामे जीवन अर्पित कयने छथि । लाखपतीमे हिनको गणना होइत छनि । ३० वर्ष पहिने एक प्राथमिक पाठशाला हिन्दीभाषी नेनासभक लेल स्थापित कयने रहथि जे आब नगर निगमलऽ लेने छैक । ४ वर्ष सँ अपना व्ययसँ हिन्दी माध्यमक हाई स्कूल चला रहल छथि । प्राथमिक पाठशालामे ५ हजार छात्रसंख्या छैक तदनुरूपे विशाल भवन सेहो छैक। २६ वर्ष पूर्व गुजराती माध्यमसँ एक हाई स्कूल स्थापित कयने रहथि जकर संचालन एक प्रबन्ध समिति करैत छैक । एहूमे डेढ़ हजार छात्र पढ़ैत छैक । हिन्दीमाध्यम हाई स्कूल आचार्य नरेन्द्रदेवक नाम पर छनि । ताहि समयधरि हिन्दीक एतेक प्रसार नहि छलैक । ई तेसर स्कूल थिकनि ।

एही सब क्रिया कलापक प्रभावेँ गुजराती समाज पर धाख जमल छनि । सौराठ निवासी श्रीभगीरथझा हिनके बलेँ एहिठामक एम्.एल्.ए. भऽ सकलाह ।

आइ पूर्वाह्नमे अपन अनुभवक आधारपर फिल्म सम्बन्धी एक निबन्ध हिन्दीमे लिखलहुँ । अपराह्नमे श्रीप्रभाकरजीक संग श्रीचन्द्रनन्दनजी अयलाह जे अपना संग श्रीशान्तिनाथबाबूक डेरा पर लऽ गेलाह जे तारदेवमे छनि । चन्द्र शब्दक संग नाथ, कान्त, ईश्वर, शेखर, देव, भूषण, मणि, धर, नारायण, आदि शब्दक योगसँ बनल नामतँ बहुत सुनल छल, नन्दन शब्दक संग आइए सुनलहुँ । आजुक आयोजनमे गोटेक दर्जन कविता पढऽ पड़ल, ताहिमे तीनटा हिन्दीक सेहो । सर्वश्री रामेश्वरजी, सदानन्दजी, तारालाहीक देवेन्द्रचौधरी, जगतिक शुभनारायणझासँ भेट भेल । जी. जी. बैरामजी इंस्टिट्यूटक प्रिंसिपल एक प्रशंसापत्र पठा देलनि ।

२३.८.६४

आइ हाथ खाली अछि । श्रीरत्नेशकेँ मुंशीजीक खोजमे बिदाकऽ अपने बान्द्रा चल गेलहुँ । कोरियाही वासी श्रीपानदेवझासँ परिचय भेल । योजना छल जे आइ कपड़ाक मिल देखि ली, तेँ सझुआड़वासी श्रीजयकृष्णजीक डेरा पर गेलहुँ, चाह पीबि श्रीपानेश्वरजीक ओतऽ पहुँचलहुँ । ओ चूड़ा, दही, केरा, अमौट, तरकारी ताहि पर पापड़ जलपान करौलनि, जखन दही, चूड़ाक संग पापड़ परसलनि तँ कहलियनि– कनेक घी कड़का कऽ दऽ दितिऐक, ताहिपर बेस हँसी भेलै । देबरिया जिलाक नारायणतिवारी नारदक संबन्धमे एक ढाकी कहऽ लगलाह । फिल्मिस्तानमे पहिनेसँ हाथ पैर भजनिहार हमर पूर्व छात्र सी. परमानन्दक छोट भायकेँ हम नारद नाम रखने छलिऐक ।

दिनुका भोजन श्रीगोविन्दजीक ओतऽ छल, से होइत-होइत २ बाजि गेल । सर्वश्रीजयकृष्णजी, शुभनारायणजी, वसिष्ठजी, लच्छू बाबू निर्धारित समयक बाद अबैत गेलाह । सेहो दोसर बाटेँ आ हम सब निर्धारित बाटपर घंटाभरि प्रतीक्षा करैत रहलियनि। किछु दिन पहिने श्रीकमलाकान्तजीकेँ 'भैया' सभसँ झंझट भऽ गेल छलनि तेँ सशंकित चित्तेँ खार अयलहुँ आ श्रीनरेन्द्रजीक डेरा पर बैसलहुँ, किन्तु आशंका निराधार छल । रातिये श्यामशर्मा म्यूजिक डाइरेक्टरक संग बैसबाक समय भानुजीकेँ देने छलियनि, तेँ ५.३० मे डेरा घुरि अयलहुँ, सर्वश्रीगोविन्दजी, गुलाबजी, पानेश्वरजी संग छलाह । किछु कालक बाद ओहो चारू गोटे एतहि अयलाह । मिल देखबाक विचार स्थगित भऽ गेल । हाथ खाली रहने चाहो नहि पिया सकलियनि । एक मन भेल श्रीगोविन्दजीसँ किछु पैंच लऽ ली, मुदा सिद्धान्तक विरुद्ध से नहि कहि भेल । ओ सब स्वस्थान जाइत गेलाह, अपने भानुजीक ओतऽ गेलहुँ । श्यामशर्मा नहि

अयलाह, ओतहि भोजनकऽ १०.३०मे डेरा घुरि अयलहुँ । पीठमे दर्द आ घाड़ घुमयबामे कष्ट भऽ रहल अछि । आजुक दिन निरर्थक गेल ।

२४.८.६४

सबेरे रत्नेशक संग स्टूडियो गेलहुँ, ९ बजे सँ ११ धरि बैसल रहि गेलहुँ, मुंशी कतऽ नौ दू एगारह भऽ गेल से पता नहि चलल । असली सिंघी माँछ सन कारी, पिच्छड़ आ बिखाह अछि । रत्नेशकेँ ओतहि बैसाय डेरा घुरलहुँ तँ ओझाक, पंण्डितक आ दुक्खन (श्रीशिवाकान्त)क चिट्ठी भेटल । विस्मित छीजे ९ ता. क पठाओल हमर चिट्ठी किएक ने भेटलनि अछि । ओझाकेँ चिट्ठीक उत्तर लिखि ३.२०क डाकमे खसबैत बान्द्रा गेलहुँ, मुदा ने जयकृष्णे भेटलाह ने गोविन्दजी । एक पुर्जी लिखि, तालामे खोंसि डेरा घुरि अयलहुँ । चित्त उद्विग्न अछि । रत्नेश मुंशीजीक प्रतीक्षामे बैसलाह से पाँच बाजि रहल अछि, बैसले छथि वा कतहु टहलान मारऽ चल गेलाह ? की करी की ने, से किछुने फुरैत अछि ।

स्कूलसँ घुरतीमे युगलजी अयलाह । मिथिला-मण्डलक आयोजनमे हमर देल भाषणक हेतु धन्यवाद देलनि । ई नगर लक्ष्मीक नैहर थिकनि । सामान्यो लूरि रखनिहार अपन योग्यतासँ फाजिले अर्जन कऽ लैत अछि । नाम नहि लेब, अपने समाजक एक अनुष्ठानी चानन फटाका आ सीट-साट, फीट-फाटसँ विद्या-वारिधिए बुझाइत छलाह। अनुष्ठानक प्रसंग पुछला पर कहलनि- गोपाल सहस्रनाम दसटाका, विष्णु सहस्रनाम बारह टाका आ बगुलामुखी पन्द्रह टाका प्रति आवृत्ति पाठक दक्षिणा दैत अछि । बगुलामुखी शब्दसँ हुनकर आन्तरिक योग्यता दर्पणमे प्रतिविंबित कऽ देलक । कहबाक तात्पर्य जे एहनो लोक नीक अर्जन कऽ लैत अछि आ दस हजारसँ अधिके मैथिली भाषी एहिठाम छथि जनिका सभक न्यूनतम आय डेढ़ हजार सँ कम नहि छनि। जँ संघबद्ध भऽ मात्र एक टाका मासमे मैथिलीक नाम पर जमा करथि तँ मासिक की, साप्ताहिक पत्र बाहर कऽ सकैत छथि । हम एही दिस अपन संक्षिप्त वक्तव्यमे कहने रहियनि । किन्तु परस्पर विरोधिनः जे शाप छैक तकर प्रभाव एतहु देखि पड़ल।

५.३०मे मुंशीजी फोनपर काल्हि स्टूडियोमे २ बजे निस्तुकी विचार करबाक आश्वासन देलनि । चेम्बूर चलबाक हेतु जयकृष्णजी पहुँचलाह आ पीठेपर त्रिदिबक संग परमानन्दजी आबि बैसबे कयलाह कि प्रशान्तजी सेहो पहुँचि गेलाह । बेस जमि गेलै। चक्रवर्त्तीमिनर्वा सँ आयल बेस मोटगर लिफाफ दऽ गेल । चेम्बरक कार्यक्रम आइ स्थगिते रहल । श्रीप्रशान्तजी सेहो एक साँझ अपना डेरापर भोजन करबऽ चाहैत छथि। त्रिदिव आ परमानन्दजीक संग टैक्सीसँ वान्द्रा भानुजीक डेरापर पहुँचलहुँ । १०.४५ धरि गप्प होइत रहल । ममता गायब गीत लै चारि दिनुक समय हमरासँ चाहि रहल छथि । यद्यपि एखन धरि एहि नाम पर सहमत नहि भेलाह अछि । नैहर भेल मोर सासुर

हमरा गारिसन लगैत अछि । ११.१५ मे हमरा बनारसीक दोकान पर पहुँचा कऽ ओ सब घुरि गेलाह । ओतऽ काजू आ एक गिलास दूध लऽ डेरा आबि श्रीदुक्खनकेँ पत्रोत्तर लिखि, मिनर्वाक लिफाफ फाड़लहुँ तँ टेस्ट परीक्षाक हेतु प्रश्न चयनकऽ ३१ अगस्त धरि पठा देबऽ कहने छैक । एतऽ ने कोनो पोथी ने पोथी उपर करबाक कोनो उपाय, किन्तु मासिक प्रगति चार्ट संग छैक । ताही आधार पर स्मरणेसँ प्रश्न चयन करैत राति २ बाजि गेल अछि । आब विश्रामे उचित ।

२५.८.६४

काल्हि रत्नेशकेँ मुंशी जखन भेटलथिन तँ आजुक १० बजे स्टूडियो आबऽ कहने रहथिन । हमरा मिनर्वाकेँ रजिस्ट्रीसँ प्रश्नपत्र पठयबाक अछि, तेँ रत्नेशकेँ नहि पठा, अपने स्टूडियो पहुँचलहुँ । ११ बजे धरि बैसल रहलहुँ, कतहु पता नहि, पता लागल २ बजेक बाद । पोस्ट ऑफिस आबि रजिस्ट्रीमे ततेक टा लाइन छलै जे २ घंटा लागि गेल । घुरिकऽ स्टूडियो गेलहुँ तँ फणिदा आबि गेल छलाह, हुनकासँ गप्प करैत निष्कर्ष बहरायल जे शूटिंग लै फेर पूजा छुट्टीमे आबऽ पड़त, किन्तु नवेन्दुदा ताहि समय नहिओ उपलब्ध भऽ सकैत छथि, तेँ डायलॉग पर २८ ता. धरि काज पूरा भऽ जयबाक चाही ।

मिल देखबाक विचारेँ स्टूडियोसँ डेरा होइत जयकृष्णजीक ओतऽ बान्द्रा ५ बजे पहुँचलहुँ । हिनकर विचार भेलनि जे डॉ. श्रीबदरीनारायणझासँ भेट करबाक काज पहिने सम्पन्न कऽ लेबाक चाही । तेँ चेम्बूर चल गेलहुँ । श्रीबदरीबाबू राति ११ बजे धरि ब्रजबुली साहित्यपर पूर्ण अनुसन्धान हो से गप्प करैत रहलाह । युवक दू-तीन गोटे अनुसन्धित्सु एहि पर भिंड़ि जाथि से आवश्यक अछि । हिनका मतेँ ब्रजबुलिक नाम पर चलऽ वाला सब साहित्य विशुद्ध मैथिली थीक, यदि एहि दिशामे जमि कऽ शोध कार्य हो तँ सब प्रमाणित भऽ जायत । सिंह भूपति, सिंह नृपति, नृपसिंह एहूनामेँ जे रचना 'पद कल्पतरु' मे संकलित अछि से सबटा मैथिली रचना थीक । उमापतिक समय निर्धारणक प्रसंग ओझा (डॉ. श्रीरामदेव झा) तथा किरणजीक निबन्धक चर्चा कयलनि ।

चण्डीदासक प्रसंग हिनक धारणा छनि जे विद्यापतिक समकालीन चण्डीदास ओड़ीसाक थिकाह तेँ दक्षिणसँ चण्डीदास तथा उत्तरसँ विद्यापतिकेँ चलला पर गंगातट पर दूनूकेँ भेट भेलनि । कीर्त्तिलतामे वर्णित जौनपुरकेँ बदरीबाबू योगिनीपुर अर्थात् दिल्ली मानैत छथि आ तर्क छनि जे नगरक जे वर्णन अछि आ पहुँचबामे जतेक दिन लगलनि, ई दूनू एही दिस संकेत करैत अछि । बंगालक चण्डीदास पछाति भेलाह अछि, हिनक यैह मान्यता छनि । गप्पसँ सन्तोष होइते ने छनि । १२ बजे चेम्बूरसँ चललहुँ से १.३० बजे डेरा पहुँचलहुँ ।

२६.८.६४

आइ गीतक रिकार्डिंग छलै बम्बइ लायबेरेटरीमे । दुलहिन अर्थात् फिनान्सर श्रीहीराबाबूक पत्नी आ बिन्ध्यवासिनी देवीसँ ओतहि भेट भेल । लायबेरेटरी नाम सुनैत छलिऐ' आइ एकर अन्तरंग देखलहुँ । सबटा व्यवस्था आकाशवाणी केन्द्र सन । प्रत्येक वाद्ययन्त्रक हेतु अपन अपन माइक, सबवादककेँ निर्देश कयनिहार एक व्यक्ति बड़का बोर्ड पर साटल स्वर-लिपि-तालिका लग, दोसर व्यक्ति मंचसँ नीचा हॉलमे ठाढ़ भाव-भंगिमा पूर्वक आङुर आ मुद्रासँ सभक निर्देशन करैत ।

पड़िछनि गीतमे पाठ अशुद्ध छनि-व्याह चलल, समुझाओल, मोरी गौरी आदि। फणिदा हमरा पुछलनि तँ हम एहन अशुद्धि सब दिस संकेत कयलियनि, किन्तु म्यूजिक डाइरेक्टर तँ बिन्ध्यवासिनी देवी छथि, हम तँ संवाद निर्देशक छी, तेँ पहिने हमरासँ कानो संपर्क नहि कयलनि । आब ने बिन्ध्यावासिनी देवी एकरा अशुद्ध मानबा लै तैयार ने 'सेट' पर आबि संशोधन संभव, परन्तु श्रीहरिमोहनबाबू सब छार-भार हमरे कपार थोपताह । तेँ एक गीतक बाद उठि कऽ चलि देलहुँ । कने माथ सेहो दुखाइत छल, भोजन करऽ अन्धेरी जयबाक इच्छा नहि भेल, मध्याह्न विश्रामे नीक लागल ।

श्रीयुगलजी श्रीरामेश्वरजीक एक पुर्जी लेने ५ बजे पहुँचलाह । रामेश्वरजीक पिताक आइ वर्षी थिकनि तकर नोंत देलनि अछि । बसौली वासी रामेश्वरजी सेहो रमेश्वरलता विद्यालयसँ मध्यमा पासकऽ सरस्वतीक आराधना स्थगित कऽ लक्ष्मीक उपासना विगत १२ वर्षसँ एतहि कऽ रहलाह अछि । युगलजीक संगहि जोगेश्वरी आबि गेलहुँ । भोजनमे विलम्ब छलनि । बैसल ठाम एहि ठामक भूमिक स्वामित्वक प्रति जिज्ञासा भेल । कारण जोगेश्वरीमे बहुतो मैथिल अपन-अपन 'चाल'क स्वामी सेहो छथि । ओ कहऽ लगलाह-

ई भूमि सब नगरसँ दूर पहाड़ आ जंगल छलैक । क्रिश्चन, पारसी आ खोजा एहि तीन जातिक लोक बुद्धिजीवी छल । बृटिश शासन कालमे शासक वर्गक संग एहि तीनू वर्गक सम्पर्क घनिष्ठ छलैक । जाहि परिवारमे जेहन सुन्दरी बालिका जकरा जेहन आत्म-समर्पण, ताहि परिवारकेँ ततेक बेसी ५० बीघासँ ४०० बीघा धरि भूमि अत्यल्प मूल्यपर भेटि गेलैक । ताहि समयतँ एहि काँट-कुश भरल पहाड़ी दिस जन-संचारो नहि छलैक । क्रमशः नगरक विस्तार होइत गेलैक । कतेको छोट-छोट बस्ती नगरमे समाइत गेल । जंगल कटैत गेलैक, तबेला वाला सब (गाय-महिसक बथानकेँ तबेला कहैत छैक) लीज पर जमीन लऽकऽ पहिने तबेला, पछाति 'चाल' चदरा वा खपरा सँ छारल दुचारी सबकेँ कॉलोनी जकाँ एक वा दू, सबसँ पैघ तीन कोठलीक क्वाटर सब बना ताहिसँ भाड़ा लगा पर्याप्त धनोपार्जन करऽ लागल । १०० माइलक अभ्यन्तरजे भूमि

छैक जे पहिने दूसय चारिसय रूपैए बीघा कीनि लेने छल से एखन दस हजारसँ पचास हजार रूपैए कट्ठा बेचि-बेचि करोड़पती बनि गेल अछि। मध्य बम्बइमे तँ दू, अढ़ाय, तीन लाख टके कट्ठा जमीन भऽ गेलैक अछि।

उत्तर प्रदेशक अहीर जातिक लोक बहुत पहिनेसँ एहिठाम आबऽ लागल जकर मुख्य व्यवसाय दूधक छलैक। ओ सब 'भैया' कहबैत अछि। नीक लोकक हेतु भैया संबोधन अपमानजनक मानल जाइत छैक। एहिठाम लण्ठराजशिरोमणि दादा आ अड्डैल मोकदमेबाज बाबा नामसँ संबोधित होइत अछि। भैया सब अफरात पड़ल एहि जंगली भूमिकेँ हथिअबैत गेल, चाल ठाढ़ करैत गेल आ लाखक लाख सलाना कमाय लागल। आँखि-पाँखिवाला पक्का पट्टा पर नगरमे सेहो भूमि लेबऽ लागल। लठिधर सब कार्पोरेशनक कर्मचारी सभक मुँह भरैत गेल, अपन सीमा ससारैत गेल। नगरक विस्तार होइत गेलैक तँ बीचमे पड़ऽवाला तबेलाकेँ हटबैत गेलैक आ दूर-दूरमे पक्का तबेला बनबा सत्रह रुपैए खुट्टा किराया पर लगबैत गेल, एहि प्रकारेँ कार्पोरेशनक आयमे वृद्धि होइत गेलैक। क्रमशः सम्पूर्ण बम्बइक दूधक व्यापार पर सरकार अधिकार कऽ लेलकै। एहिठामक दुग्धकेन्द्र सब सरकारी थिकैक। भैया सब गाय महीस पोसैत टा अछि, दुहबाक अधिकार एकरा सबकेँ नहि छैक। दुग्धकेन्द्रक दिससँ मशीनद्वारा दुहबाक आ पाइप द्वारा बोतलबन्द करबाक कारखाना धरि पहुँचा देबाक व्यवस्था छैक। एहि ठाम व्यक्तिगत दूध बेचबाक अधिकार ककरो नहि छैक।

भैया आ मराठा सबमे खूब नहि पटैत छैक। अधिककाल झगड़ा-झंझट, मारि-दंगा होइते रहैत छैक। एहू बेर जोगेश्वरीमे बड़का भारी फसाद भऽ गेल छलै जाहिमे दू-अढ़ाय सय लाश खसि पड़ल रहैक। परन्तु मैथिल अर्थात् मिथिलावासी ब्राह्मण, खत्री, राजपूत आदि एहि महल्लामे जे छथि तनिका सब पर कोनो आक्षेप नहि होइत छनि। एहि ठाम हिजड़ाक सेहो नीक संख्या छैक। रामेश्वरजीक बालक श्रीवीरेन्द्र हँसैत कहलनि— काका, एतऽ मौगी सबकेँ सेहो दाढ़ी होइत छै' बकरी जकाँ। डेरा घुरैत राति १२ बाजि गेल। डेरा आबि हेड मास्टर साहेब, ओझा आ श्रीमहेशशर्माकेँ चिट्ठी लिखि विश्राम कयलहुँ।

२७.८.६४

फणीदा आइ स्टूडियोमे बजौने छलाह। श्रीयुगलजी आइ अपना ओतऽ दिनुका भोजनक व्यवस्था कयने रहथि, भोजनोत्तरे स्टूडियो जाइ से कहि गेल छलाह। १० बजे पहुँचलहुँ, देखै छी बेस सँचार पसारने छथि, कहलियनि— ई की कयने छी? ताहिपर बजलाह— पत्नीतँ दुक्खित पड़ि गेल छथि, अपने बनौलहुँ अछि तेँ जे इच्छा छल से नहि भऽ सकल। अपने हाथेँ करैलक भरुआ, चठैलक भुजिया, आलूक तरुआ, आलू मटरक रसदार, टमाटरक चटनी, खीराक रायता, ताहिपर दही आ

रसगुल्ला। कहलियनि– पुरुष भऽकऽ जखन एहन सुस्वादु भोजन बना लैत छी तँ अहाँ यदि ककरो पुतोहु होइतिऐक तँ सासु अहाँकेँ पौतीमे झाँपिकऽ रखितथि। घरमे खाट पर पड़लि दुखिताहि पत्नी भभाकऽ हँसि पड़लथिन। १२ बजे स्टूडियो पहुँचलहुँ, ने फणीदा ने मुंशीजी ५ घंटा व्यर्थ बैसल समय गमौलहुँ तँ श्रीगोविन्दजीक फोन भेटल, सोझे बान्द्रा चल गेलहुँ। श्रीबलवीरजी कन्यादान पर किछु लिखिकऽ धर्मयुगकेँ देने छथिन। ओ ओतहि बैसल छलाह, आर्यावर्त्तमे जे फोटोक संग समाचार छपलैक अछि तकर कटिंग चाहैत छलाह, मुदा हम तँ भानुजीसँ आर्यावर्त्त लऽ पढ़ैत छी, तेँ हुनकर अनुमति आवश्यक बुझायल। अपने जे एक लेख लिखने छलहुँ से ओ राखि लेलनि आ आर्यावर्त्त आपस कऽ देबाक शर्त्तपर लऽ गेलाह। रातिमे एहिठामक मैथिली संस्थाक संगठन पर गप्प होइत रहल, रातुक ११ बाजि गेल, एतहि हल्लुक सन भोजनकऽ १२ बजे डेरा घुरलहुँ तँ श्रीहरिमोहनबाबूक प्रगतिक प्रसंग जिज्ञासा भरल पत्र भेटल।

२८.८.६४

मुंशीजीक कथनानुसार फोनक प्रतीक्षामे बैसल रहलहुँ, प्रतीक्षेमे दिन गेल। पहिल डाकमे दरभंगासँ रीडाइरेक्ट भेल मुंगेरसँ श्री कामेश करुणाक पत्र जमुईमे आयोजित कवि सम्मेलनमे जयबाक आमन्त्रण भेटल, मार्गव्ययक अतिरिक्त ५१/– पत्रं पुष्पम, परन्तु एहि ठामक विवशता।

दोसरो डाक भेटल चि. बाउक चिट्ठी, डेराक दुरवस्था, चि. मुन्नूजीक जिज्ञासा। पत्र पढ़ैत-पढ़ैत मन उद्विग्न भऽ गेल, १२ बजे सूति रहलहुँ, ३ बजे स्टूडियो गेलहुँ। ई चेङामाछ (मुंशी) कतऽ कुदैत रहल, पता नहि चलल। डेरा घुरलापर श्रीप्रशान्तजीक फोन भेटल–आबि रहल छी। तेसरो बेर डाक भेटल श्रीजयभद्र ओ श्रीरमानन्दमिश्रक पत्र। चित्त अशान्त मुदा आबि रहल छथि प्रशान्त, तेँ प्रतीक्षाक समय पत्र सभक उत्तर लिखबामे कटलहुँ।

२९.८.६४

आजुक पूर्वाह्न श्रीप्रभाकरजी लै सुरक्षित, काल्हिए आजुक दिनुका भोजनक नोंत दऽ गेल छलाह। श्रीजयकृष्णजी १ बजे फिनिक्स मिल देखबाक समय निर्धारित कयने छथि तेँ १०.३०मे श्रीप्रभाकरजीक ओतऽ जोगेश्वरी पहुँचलहुँ। एतहु ओहने पसार ओहिना सँचार। बम्बइक विभिन्न महल्लामे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ आयल प्रवासी बन्धु लोकनि निमन्त्रण दऽ भोजन करबैत रहलाह, सब ठामक मानसिकता एकरङाहे लगैत अछि। गामघरमे जेना पाहुनक हेतु विशेष आयोजन होइत छैक तहिना एतहु, ताहूमे सतर्कता ई जे तेजपातसँ छौंकल आमिलदेल राहड़िक दालिमे छहछह करैत घी, बड़ी,

तिलकोड़ापात, अरिकोंछ, ओल, अदौड़ी भाँटा, भँटवर रंगविरंगक तरुआ, अँचार, अमौट दही। एक गोटे पंखा लऽ सोझाँमे बैसि डोलबैत, बारंबार आरो लेबाक, आरो खयबाक दुराग्रह करैत। एहन सन क्रमजे हमसब परदेशमे रहितो तिरहुताम बिसरलहुँ अछि नहि। हमरा एहि प्रकारक तिरहुताम परदेशमे कठाइन लगैत अछि, स्वाभाविकता थोड़ आ औपचारिकता बेसी आत्मीयताक बदला दूरीए बढ़बैत छैक। एकटा आर्याछन्द मन पड़ैत अछि–

''उपचारः कर्त्तव्यः यावदनुत्पन्नसौहृदाः पुरुषाः
उत्पन्न सौहृदानां उपचारः कैतवं भवति।''

एहिमे श्रीगोविन्दजी आ श्रीजयकृष्णजी हमरा बेसी नीक लगैत छथि। ई दूनू गोटे कहिओ ई परिलक्षित नहि होअऽ देलनि जे हम पाहुन छियनि।

ओना धन्यवाद एहि ठामक बन्धुओलोकनिकेँ जे पहुनाइ करबैत रहलाह, ने तँ ई मुंशीया तँ भूखेँ मारि दैत। ओतऽ बन्धु-बान्धव सब बुझैत होयताह जे सिनेमामे गेलाह अछि, रुपैया हिलोरि लेताह, एतऽ गुड़क मारि धोकड़े जनैत अछि। ओना अर्थक लोभेँ तँ अयलो नहि छी। मैथिली रजतपट पर आबि जायत, एक ऐतिहासिक प्रगतिक डेग तँ अवश्य इतिहासमे अंकित होयत। दोसर अपन पाइ बुकिकऽ एहि महानगरकेँ धङलो तँ नहि होइत। अस्तु।

श्रीयुगलजीक संग गान्धीनगर जा, श्रीजयकृष्णजीकेँ संग करैत, लोअर परेल फिनिक्स मिल पहुँचलहुँ। अद्भुत संसार, अद्भुत चमत्कार! तूर (रुई)क धुननाइसँ लऽ बीरब, तूमब, पीर बनायब, क्रमहि पीरकेँ पातर करैत-करैत विभिन्न नंबरक सूत बनायब ई एक विभाग भेल स्पीनिंग। मिलक भीतर दोसर विभाग भेलै वीमिंग जाहिमे मशीने द्वारा सूत पहुँचल, गोला बनल, काण्डी बनल, तानी बनल, माँड़ी लगलैक, भरनी पड़लैक, रंग-बिरंगक कपड़ा बनैत गेल। तेसर विभाग थिकै ड्राविंग, एहिमे तैयार कपड़ा सबकेँ रङब, फूल काढ़ब, धोअब, सुखायब, मोड़ब, चेकिंग, नापी, गाँठ बान्हब आदिक काज होइत छैक।

एक मोटर आ ताहिसँ चालित एक सय मशीन, तूरकेँ धुनिकऽ मेघ जकाँ कहू, हवामिठाइ जकाँ कहू, तेना बनबैत देखलिऐ' जे चकित रहि गेलहुँ। स्टोर देखौलनि– अग्गहसँ विग्गह गोदाम, जाहिमे कपड़ा अंबार लागल। बेलामक पं. रमानन्दझाक अनुज श्रीपरमानन्दझा लेवर आफिसर छथिन आ सझुआड़क श्रीसूर्यनारायणझा सुपरवाइजिंग स्टाफमे छथि। बेनीपट्टीक पं. श्रीविश्वेश्वरझा मिल द्वारा स्थापित महावीर मन्दिरक पुजेगरी छथि। प्रत्येक सेक्शनमे मैथिल लोकनिकेँ काज करैत देखल। संख्या बेजाय नहि। बेसी गोटे विभिन्न मिलेमे जीविकापन्न छथि। आफिसमे काज कयनिहारकेँ

ओ श्रम कहाँ जे टेकनीशियन सबकेँ करऽ पड़ैत छैक। मिलक भीतर गर्मी आ यन्त्र सभक गर्जन सुनि, ओहिमे काज कयनिहार सबकेँ बिनु धन्यवाद देने नहि रहल गेल। एकर सेक्रेटरी तथा एडमिनिस्ट्रेटिव मैनेजर एक मद्रासी श्रीरामचन्द्रम् छथि, जे नीक संस्कृतज्ञ छथि। बिनु हुनकर अनुमतिएँ बाहरी कोनो व्यक्ति मिलक भीतर प्रवेश नहि कऽ सकैत अछि। श्रीसूर्यनारायणझा हमरा लै परमीशन लेबऽ गेलथिन तँ कहलथिन– मिथिलासँ हमरा सभक आप्त एक कवि पण्डित आयल छथि, जनिका मिलकेर आन्तरिक स्वरूप देखबाक आकांक्षा छनि। अनुमति पत्र दैत हुनका कहलथिन– कने हमरो भेट करायब। मिलमे सब किछु देखैत ५ बजे आपस होयब तँ श्रीसूर्यनारायणबाबू कहलनि– 'हमरा सभक हाकिम कने अहाँसँ भेट चाहैत छथि' से कहैत हुनका आफिस लऽ गेलाह। कुर्सीसँ उठैत, नमस्कार करैत बजलाह– मिथिलायां प्रदीप्तायाम् हम चट दऽ कहलियनि– न मे दहति किञ्चन। हँसैत कहलनि– ताहि मिथिलाक लोक अबैत छथि तँ हम कृतार्थ भऽ जाइत छी। एहि मिलमे हम बेसीसँ बेसी लोककेँ जीविका दैत छियनि। तकर बाद ओ वर्णाश्रम व्यवस्था, उपनयन, गायत्रीमन्त्र, आध्यात्मिक शक्ति, ब्राह्मणत्व आ तकर पतनक कारण, हरिजन उत्थान आदिपर चर्चा करैत अंग्रेज विद्वान सभक संस्कृतक गहन अध्ययन आ भारतीय लोकनिकेँ एहिसँ अरुचि आदिपर गप्प करैत अघाइते ने छलाह। बीचमे एकटा पुर्जी लिखि एक गोटेकेँ देने छलथिन। रहि-रहिकऽ बाहर दिस ताकथि। ६.१५ मे एकटा चपरासी एक टा पैकेट टेबुल पर राखि गेलनि, ओकरा पानि आनक आदेश दऽ पैकेट हमरा दिस बढ़बैत कहलनि– ब्राह्मणो मधुरप्रियः इदम् अत्रत्यं विशिष्टं मधुरं श्रीखण्डम् कृपयो स्वीकरोतु भवान्। हमरा हुनक शील, सद्भाव, व्यवहार मुदित कऽ देलक। ६.३० बजे बहरयलहुँ तँ बाहरमे प्रतीक्षामे बन्धु लोकनि कहऽ लगलाह– कोन मोहिनी मन्त्र अहाँ चलौलिऐ ?

कलिगाँवक श्रीहरिकान्तजी शनिकेँ मौन रहैत छथि ओ खार धरि संग अयलाह ६.३०मे डेरा पहुँचलहुँ, बाटेमे बसिष्ठजी, शुभनारायणजी संग भऽ गेल छलाह। रातुक भोजन पानदेवजीक ओतऽ छल तेँ स्नान कऽ संगहि पानदेवजीक डेरा पहुँचलहुँ ९.३०मे विजयानन्द, १० बजे जलपान १२ बजे भोजन १२.३०मे आवास घुरलहुँ। आइ एक टा काज भेल तेँ मन सन्तुष्ट छल। श्रीसदानन्दजी आ श्रीप्रशान्तजी परोक्षमे आबि पुर्जी छोड़ि गेल छलाह।

३०.८.६४

श्रीप्रशान्तजी १२ बजे अयबाक समय पुर्जीमे लिखि गेल छलाह, ओ तँ नहि अयलाह, १२.३० मे अयलाह सर्वश्री गोविन्दजी, हरेकान्तजी, जयकृष्णजी। तीनू गोटे अन्धेरी गुजराती होटलमे जा भोजन कयल। श्रीप्रशान्तजी ७ बजे अयलाह। घोर बन्दर रोड पर पारस कंपाउण्ड, गोरे गाँवमे डेरा छनि ९.१५ मे हुनका डेरा पर पहुँचलहुँ। डेरा की, अपना सभक ओहि ठामक गोठुल्ला कहि सकैत छी। हमरा चौकी पर बैसा स्टोभ

पजारऽ लगलाह, पहिने चाह बनयबाक जोगाड़मे १० बाजि गेलनि। कूकरमे पहिने दालि चढ़ा देलथिन, एमहर एक कहानी सुनाबऽ लगलाह। एहि आधार पर पटकथा एक सहयोगी तैयार कऽ रहल छथिन, फिनान्सर ताकि रहल छथि से भेटि गेलापर डाइरेक्टरो भेटिए जयथिन। ओमहर कूकर सीटी दैत-दैत थाकि गेल, दालि अधजरू भऽ गेलनि, जराइन गन्ध लगला पर स्टोभ मिझा देलथिन, ११ बजे धरि पटकथाक विशिष्टता पर प्रकाश दैत रहलाह। दालिमे फेर कने पानि दऽ स्टोभ लेसऽ लगलाह तँ पोकरक प्रयोजन बुझयलनि, सौंसे खोली उनटा गेलाह, नहि भेटलनि तँ मराठा पड़ोसीक डेरासँ माङि कऽ अनलनि। दालिकेँ फेर चढ़ा एहिमे गीत जे देलथिन अछि से सुनाबऽ लगलाह ता १२ बाजल। दालिकेँ डेकचीमे पलटि आलू आ करैल उसिनऽलै चढ़ा देलथिन। फेर हिन्दीक पत्रिका सबमे कविता सब छपल छनि से सब उधेसि कऽ सुनबैत रहलाह। निष्कर्षतः अधजरू दालि, आलूक दम, करैलक भुजिया आ अन्तमे भात रन्हैत ३ बजलनि ३.४५ भोरमे भोजन कयल, करैल मे नोन देब छुटि गेल छलनि। ५.१५क बससँ अन्धेरी, ओतऽ सँ ट्रेन पकड़ि ५.४५ मे डेरा घुरलहुँ ९ बजे धरि सुतलहुँ।

३१.८.६४

९ बजे उठलहुँ तँ मिलसँ किछु कपड़ा गामपरलै लेबाक छल, तेँ समय निर्धारित करबाक हेतु श्रीजयकृष्णजी, श्रीतृप्तिनारायणजी पहुँचि गेलाह। मिलक कर्मचारीकेँ किछु विशेष कमीशन भेटैत छनि। चटपट स्नान कऽ तैयार होइत छी कि पं. श्रीतिलकधारीझाजी कार लेने अपने आबि गेलाह। मैथिल सभक हेतु ई पंथक पाकड़ि छथिन। कतहुसँ बौआइत भुतलाइत आयल व्यक्तिकेँ तीन मासधरि आश्रय दऽ जीविका तकबाक समय दैत छथिन। बोरीवलीमे पण्डितजीक बहुत पैघ एरिया छनि, जाहिमे हिन्दी माध्यम एक हाइ स्कूल, पाँचटा प्रिंटिंग कारखाना आ एकसयसँ बेसी खोली, जाहिमे किरायादार रहैत छनि। श्रमिक वर्गकेँ पारिश्रमिक चुका देलाक बाद दस हजारसँ बेसी मासिक आय होइत छनि। बम्बइक नेशनल पार्क देखाबऽ लऽ जयताह, दिनुका भोजन सेहो हिनके ओहिठाम अछि। तेँ दूनू गोटेकेँ दोसर दिन समय देबाक आग्रह कऽ पंडित जीक संग बोरीवली १०.३०मे बिदा भेलहुँ से १२.३० मे पहुँचि सकलहुँ, कारण भेल जे आइ एहि नगरमे 'गोविन्द आला' नामक पर्व थिकै। बाट पर ठाम-ठाम एकटा कलशीमे १०/- टाकासँ १०००/- धरि टाका राखि फूल, माला, कपड़ा आदि बान्हि, यथासंभव ऊँचाइपर लटका दैत छैक, जाहिमे जतेक टाका से ततेक ऊँच पर टाङल। मनुक्खपर मनुक्ख ठाढ़ भऽ ओकरा उतारि लैत अछि आ अपनामे बाँटि लैत अछि। अपना सभक ओहि ठाम जेना फगुआमे रंग-अवीर आ जूड़शीतलमे माँटि-पानि खेलाइत छी तहिना ई सब रंग-अवीर माँटिपानि खेलाइत अछि। रामनवमीक जुलूस जकाँ दल बान्हि ढोल-झालि बजबैत जुलूस बाहर करैत

अछि। पीने मत्त, बाट यत्र-तत्र-जाम। दोसर व्यापक पर्व होइत छैक 'गणेश पूजा' मुदा दूनूमे अन्तर ई जे गणेश पूजाक शालीनता एहिमे नहि। एहिमे संभ्रान्त वर्गक सहभागिता थोड़।

पण्डितजी बाटमे कहलनि– ई ध्याने ने रहल जे आइ गोविन्दआला थिकै, तखन ट्रेनसँ अबितहुँ। हम कहलियनि– समय बेसी लागि गेल, किन्तु हमरा तँ देखबाक सुअवसर लागि गेल। हमरा हेतु तँ नवे अनुभव भेल। भोजन आदिसँ निवृत्त होइत ३ बाजि गेल, किछु काल लोटपोट कऽ ४.३० मे नेशनल पार्क देखाबऽ लै गाड़ीसँ लऽकऽ चललाह।

ई बम्बइक सबसँ पैघ पार्क थिकैक। एहमे एकटा सतीमाइक स्थान, बीचमे एक पहाड़ी नदी, नदीक दूनू तट अनन्त हरीतिमासँ छारल, अनेक छोट-छोट बङला, एकटा बड़का टा हॉल, एकटा सुन्दर कैन्टीन, कोनो बङला छओ रुपैए प्रतिदिन, कोनो दस रूपऐ। बीच-बीचमे झूला आदि अनेक प्रकारक खेलयबाक साधन, सैकड़ो जोड़ी झाँखुड़ सभक दोगमे सुटकल वनमुर्गी जकाँ घुटकैत, सैकड़ोलोक झूलापर झुलैत, नेना-भुटका सब कचबचिया जकाँ चारू भाग चहकैत, पहाड़ीक चोटीपर गान्धीस्मृति-मंदिर। समयाभावक कारणेँ सब नहि देखि सकलहुँ। घुरतीमे ट्रेनमे बैसा देलनि। हमरा अन्धेरीसँ चर्चगेट धरिक पास अछि, तेँ बोरीवलीसँ अन्धेरी धरिक टिकट कटा देलनि।

श्रीप्रशान्तजीक ओहिठामक एक तँ काँच-कोचिल दोसर कुबेरमे कयल भोजन पेट खराब कऽ देलक, डेरा घुरिते श्रीगोविन्दजी, श्रीयुगलजी आबि गेलाह, बनारसी ठंढइक नोंत देने छल, तीनू गोटे गेलहुँ। काल्हि सबेरे होटल छोड़ि देबाक अछि। श्रीभानुजीकेँ फोन कयलियनि। ओ फ्लोराफाउन्टेन आबि जाय कहलनि। श्रीबचकुन आ श्रीलोकपतिसिंहक पत्र भेटल।

१.९.६४

प्रातः ९ बजे श्रीपरमानन्दजी आबि गेलाह। पेट कसरियाह अछिए, तेँ किछु खयलहुँ नहि। १०.२० मे टैक्सीसँ वीर नरीमन रोड चलि पड़लहुँ। एतहि इण्डियन नेशन कार्यालय छैक। संगमे तँ लोटबे की पेटबे, अटैची एही ठाम रहत, बाथरूम छैके, बेंच सन सोफा, पैर पसारि सुतबामे बाधा नहिएँ, भोजन लै होटले भनसाघर, तेँ जत्तहि धड़ तत्तहि घर।

१ बजे मोती होटलमे दही-भात खा, एच.एम.व्ही. कार्यालय जा, श्रीश्याम शर्माक संग गीतक प्रसंग विचार विमर्श करऽ बैसलहुँ। सिचुएशन एहन छैक ताहिमे 'झम झम झम झमकै ई कारी बदरिया' शर्माजीकेँ बहुत पसिन्न पड़लनि। ममता गाबय गीतमे म्यूजिक डाइरेक्टर यैह छथि। पाँच-छओटा गीत आरो लिखि देबाक आग्रह

कयलनि । किछु काल श्रीपरमानन्दजीक संग डायलॉगपर घमर्थन होइत रहल । पजियाड़ अर्थात् पूर्वछात्र साँझमे अयलाह तँ संगहि महालक्ष्मी गेलहुँ, श्रीलूटन भाइ लोकनिसँ भेट भेल । पुरसौलिया निवासी श्रीबलदेवमिश्र ज्योतिषीसँ नव परिचय भेल। पजियाड़ेक संग फ्लोरा फाउन्टेन आबि मथुरा डेरी फार्ममे भोजन कऽ स्वस्थान अयलहुँ, पजियाड़ डेरा गेलाह, अपने कोनहुना एकटा गीत लिखि विश्राम कयल ।

२.९.६४

ठमछुट्टू रहलाक कारणेँ सूति कऽ उठला पर विशेष असुविधा अनुभव भेल। एभरग्रीन होटल, खारमे फोन कऽ चाह मङा लैत छलहुँ, चक्रवर्ती मुस्कुराइत, किछु गुनगुनाइत डाँसिंग पोजमे जेना ताल सभ पर कप राखि जाइत छल से आइ नहि भेल, नीचाँ उतरि रेस्टोरेन्टमे चाह पीबि अयलहुँ । श्रीपरमानन्दजी ९ बजेक समय देने छलाह तेँ कौआस्नान कऽ तैयार भऽ तावत किछु नवीन छन्दपर चिन्तन करैत रहलहुँ, ओ विलम्बसँ अयलाह तावत एकटा गीत लिखा गेल । मुंशीजीकेँ फोन कयलियनि तँ ज्ञात भेल जे ६ सितंबरकेँ बम्बई-हावड़ा-मेलमे रिजर्वेशन भऽ गेल अछि । साँझमे श्रीप्रशान्तजी आबि गेलाह । ततेक फचाँड़ि छथि जे कोनो काज आगाँ नहि ससरल ।

३.९.६४

काल्हि श्रीश्याम शर्मा फोनसँ एक पूर्वी भासमे गीत लिखि देबाक अनुरोध कयने छलाह सैह लिखैत १ बाजि गेल छल तेँ ५.३० मे निन्न टुटलापर होइत छल जे फेर सूति रही, मुदा ज्ञान कऽ उठि गेलहुँ । नित्य कृत्यकऽ 'ममता गाबय' गीतकेर चारिम कापीकेँ देखैत रहलहुँ । बीचमे मात्र दू दिन रहि गेल अछि । श्रीपरमानन्दजी मध्याह्नमे अयलाह, गीतक प्रसंग सिचुएशन पर विवाद बेसी, काज थोड़ भेल । श्रीश्यामशर्मा साँझमे अयलाह । अयलाह तँ श्रीगोविन्दजी श्रीजयकृष्णजी सेहो मुदा बाहर नहि भऽ सकलहुँ ।

४.९.६४

प्रातः कृत्य समाप्ते कयल कि श्रीपरमानन्दजी पहुँचि गेलाह । स्क्रिप्ट पर काल्हि विवादे बेसी भेल छल ताही पर विचार करैत अन्ततः हमरासँ सहमत भेलाह 'नैहर भेल मोर सासुर'क नाम 'ममता गाबय गीत' मानि लेल गेल । श्रीउदयभानुजीक संग श्रीश्यामशर्मा सेहो पहुँचि गेलाह । केवल तीनगोट गीतक प्रयोजन छनि, मुदा हमर लिखल सातो गीत राखि लेलनि, पारिश्रमिकक प्रसंग कोनो स्पष्ट गप्प नहि कयलनि, खाली मनीबैग झाड़ि देखा देलनि, जाहिमे एक दसटकही राखि, चारिटा दसटकही ई कहैत जे एकरा सगून रूपमे स्वीकार कऽ लेल जाय । फिल्म सुतरि गेल, गीत हिट कऽ गेलतँ झहरियो सकैत अछि, जे हमरा सभक भाग्यक संग अपनहुँक भाग्यसँ जुटल अछि, अन्यथा न्यूनतम जे मार्केट रेट छैक से भेटबे करत ।

एभरग्रीन होटलसँ, चिट्ठी अछि से, फोन आयल, मुंशीजी बजौने छथि । खारसँ चिट्ठी लैत, अन्धेरीमे भोजन करैत २ बजे स्टूडियो पहुँचलहुँ । मुंशी कथीलै भेट देत। श्रीरत्नेशकेँ एक पुर्जी लिखि दऽ ओतहि बैसऽ कहलियनि, अपने डेरा घुरि अयलहुँ। साँझमे डॉ. श्रीसतीशचन्द्रझा, प्रो. श्रीगुलाबठाकुर, श्रीउमानाथझा आ सिंगियाक सिंहजी कार्यालयमे अबैत गेलाह, किछु काल गोष्ठी जमलैक, चाहो पान आगन्तुकेक माथ । रातुक भोजन श्रीसदानन्दजी, लक्ष्मीनारायाण मन्दिर, भुजवारा 2, भुलेश्वर बम्बइ-2 मे भेल । घुरला पर ओझाकेँ चिट्ठी लिखि देलियनि, यद्यपि आब चिट्ठीसँ पहिने अपने पहुँचबाक संभावना ।

५.९.६४

आइ सनेस लै किछु कपड़ा किनबाक छल, मुदा ई मुंशीया भारी छट्ठू अछि, ने भेट दैत अछि ने पाइ पठबैत अछि । अपना लग चर्नीरोड पारसी स्कूलक प्रिंसिपल जे १०१/- देलनि आ श्रीभानुजीक देल ४०/- रु० मात्र अछि, एहिसँ की होयत ? टिकट कटौलक ६ ता. क आ होटल खाली करबा देलक पहिलीए कऽ । फोनसँ सम्पर्क कयल तँ उत्तर भेटलजे २ बजेक बाद स्टूडियोमे भेटताह । श्रीरत्नेशकेँ स्टूडियो पठा देलियनि, अपना संग जतबे छल सैह लऽ फिनिक्स मिल गेलहुँ । श्रीगोविन्दजी श्रीजयकृष्णजी लोअर परेल स्टेशने पर प्रतीक्षामे छलाह । श्रीसूर्यनारायणझासँ सेहो भेट भेल । केवल तीन खण्ड साड़ी, दू टा गंजी लेलहुँ । वान्द्रा गेलहुँ । श्रीयुगलजी आबि गेलाह। ई हिन्दी माइण्डेड लोक, श्रीगोविन्दजी मैथिलीक कथाकार, कथाकार युगलजी सेहो, किन्तु ईष्यालु, दूनू गोटेमे घोर मतभेद । दूनूमे मेल मिलाप करबैत, दूनूक मनमे जमल मैल छोड़बैत 9.30 बाजि गेल । श्रीजयकृष्णजी दुराग्रह कऽचटपट भानस कऽ भोजन करा देलनि । ११.४५मे फ्लोरा फाउन्टेन घुरलहुँ ।

६.९.६४

आइ देशक यात्रा करब तेँ मुंशीजीसँ भेट अनिवार्य अछि । स्टूडियो गेलहुँ, सामान मात्र एकटा सूटकेश, एतबे लेबऽ लै फेर एतऽ आबऽ पड़त से सोचि संगे लगा लेलहुँ । मुंशीजीक दर्शन नहि भेल, कहलक स्टेशन पर आबि जयताह ।

आजुक भोजन श्रीगोविन्दजीक ओतऽ छल । श्रीउदयभानुजी ओतहि भेट कऽ सात गोट गीतमेसँ तीनटाक उपयोग अवश्य करताह, पत्राचार द्वारा सम्पर्क रखने रही से अनुरोध करैत चल गेलाह । दादर स्टेशनपर विदा होयबाक काल एहिठामक अनेक बन्धु उपस्थित छलाह । ट्रेन फुजबासँ १२ मिनट पहिने मुंशीजी आयल टिकट आ एकटा लिफाफ दैत कहलक– पूजा छुट्टीमे पूरा यूनिट दरभंगा पहुँचत । एखन तँ आरम्भे भेल अछि, अहाँ घबड़ायब नहि । समयपर हम सूचना दऽ देब । हमरा तत्काल

लिफाफ फोलबोक अवसर नहि भेल । वातावरण बहुत करुणार्द्र भऽ गेल । एहि महानगरमे जीविकोपार्जनमे लागल बन्धु लोकनिक स्नेह, आदर, सद्भाव हृदयमे संजोगने एकदिस वियोगजन्य विह्वलता दोसर दिस स्वदेश पहुँचबाक सन्तोष, दूनू परस्पर विरोधी मनोभाव विचित्र स्थिति उत्पन्न कऽ देने छल । संयोगवश ओही कम्पार्टमेन्टमे पण्डित प्रवर श्रीअनन्तलाल ठाकुर ओ हुनक संग प. श्रीकृष्णमाधवझाजीक बालक सहयात्री भेटि गेलाह ।

आश्वस्त भेलाक बाद लिफाफ फोललहुँ तँ २५१/- टाकाक संग अंग्रेजीमे टाइप कयल एक अनुबन्ध पत्र देबाक आश्वासन मात्र छल जे अन्तिम यात्रामे तेसरबेर बम्बइ गेला पर भेटल जकर अविकल रूप निम्नांकित अछि ।



MOTION PICTURE PRODUCERS

Branch Office:
VEENA CINEMA.
PATNA 1.

PRAKASH STUDIOS,
60, KURLA ROAD,
BOMBAY - 58.

Ref. ________

DATE 2nd Sept. 1970

Shri Chandra Nath Misra ('Amar')
Misra Tola,
Darbhanga.

Dear Sir,

We regret, we are not in a position to pay you your full remuneration at the moment as we have already exceeded our budget.

In appreciation of the valuable services rendered by you both as an artist and as a Dialogue Director, we hereby agree to pay you Rs.1,001/- (One thousand and one) only when the picture is released and proves a success over and above what we have already paid you during the production by way of remuneration.

Yours faithfully,

For ABHA CHITRAM
Proprietor

फिल्मिस्तानमे मैथिली पाठशाला

विगत १८ वर्षसँ मैथिली शिक्षकक काज करैत आबि रहल छी । मातृभाषाक उन्नति-उत्थान, उचित अधिकारक प्राप्ति, शिक्षाक माध्यम, मैथिलीमे दैनिक पत्र, मैथिलीक स्वतंत्र रंगमंच आदिक सम्बन्धमे कतेक कल्पना, कतेक तर्क-वितर्क ओ कतेक विचार-विमर्श करैत रहबाक संयोग होइत रहल अछि, किन्तु सिनेमा संसारमे जा, अभिनेत्री सभकेँ अथवा अभिनेता सभकेँ मैथिली पढ़बऽ पड़त तकर कल्पनो नहि कयने छलहुँ । विद्यालयमे अध्यापन करैत रहलहुँ ताहिमे गद्यक व्याख्या, पद्यक अर्थ, व्याकरणक विषय आदि पढ़यबाक तँ पूर्ण अनुभव होइत रहल, किन्तु मैथिली उच्चारण करबामे कोन-कोन ध्वनिविशेष नितान्त प्रयोजनीय थिक, एहि दिस दृष्टि नहि गेल छल । ह्रस्व हो वा दीर्घ, दन्त्य, हो वा मूर्द्धन्य वा तालव्य, 'थिन' हो वा 'खिन' एहि प्रकारक अशुद्धिक संशोधनो करैत-करैत आध वयस बीति गेल, मुदा मैथिलीक उच्चारण करबामे घामे-पसेनेँ नहाइत छात्रो नहि भेटल छलाह । किन्तु सम्प्रति एक एहन संसारमे मैथिलीक उच्चारण सिखयबाक अवसर आबि गेल अछि जहिठाम ई अनुभव भऽ रहल अछि जे एहि भाषाक विशुद्ध उच्चारण कतेक आयास-साध्य थिक।

व्यंग्य सम्राट प्रो. श्रीहरिमोहनझा लिखित कन्यादान-द्विरागमन उपन्यासक फिल्मीकरण सम्प्रति भऽ रहल अछि । एहिसँ पहिनहुँ मैथिलीमे एक फिल्मक मुहूर्त्त आ दोसर फिल्मक किछु शूटिंग भऽ चुकल अछि । जाहि फिल्मक किछु शूटिंग भेल अछि ताहूमे संयोगसँ डायलॉग डारेक्टरक रूपमे गोटेक मास काज करैत किछु अनुभव भेल छल, किन्तु कन्यादान-द्विरागमन फिल्ममे जखन एही कार्यक सम्पादनक हेतु बम्बइ अयलहुँ आ काज आरम्भ भेलैक तखन जे अनुभव प्राप्त भऽ रहल अछि, ताहिसँ एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ अछि जे विहारमे जतेक प्रकारक मातृभाषा बाजल जाइत अछि ताहिमे सभसँ कठिन उच्चारण मैथिलीक होइत छैक, अपितु बंगलोसँ कठिन । कारण एहिमे जतेक कलाकार भाग लऽ रहल छथि ताहिमे बेसी सिद्धहस्ते छथि । ककरो मातृभाषा बंगला थिकनि तँ ककरो उर्दू, ककरो मराठी तँ ककरो गुजराती आ हिनकालोकनि हिन्दी, बंगला, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, तमिल ओ तेलगूओमे कतेक गोटे काज कऽ चुकल छथि, सभ सुशिक्षित, सभ पटु, सभकेँ सिनेमासंसारक पूर्ण अनुभव प्राप्त, किन्तु राति-रातिभरि मैथिलीमे कथोपकथन अभ्यास कयलाक बादो जखन कैमराक सोझामे उपस्थित होइत छथि तँ भीतरसँ एक प्रकारक आतंक अवश्य भऽ जाइत छनि ।

कतेक शब्दकेँ बदलबाक प्रयोजन एहि हेतु भऽ जाइत अछि जे ओहिसँ आगाँ आबऽवला शब्दक स्वरमे समानता नहि रहलाक कारणेँ यदि पूर्वक शब्दक ध्वनि शुद्ध भऽ पबैत छनि आ अगिला ठीक करऽ लगैत छथि तँ पछिला गड़बड़ा जाइत छनि ।

मुख्य रूपेँ ध्वनि सिखबाक हेतु ओष्ठ संचालनपर ध्यान केन्द्रित कयने रहैत छथि आ तदनुसार ओहो अपना ओष्ठकेँ व्यापारमे आनि उच्चारण करबाक आयास करैत छथि। जेना 'तोँ' शब्दक उच्चारण करैत ओकार नहि भऽ ओकार तथा औकारक मध्यक स्वर उच्चरित होइत छनि कोना, एना, ओना आदि शब्दमे ह्रस्व एकार ओकार मैथिलीमे उच्चरित होइछ, किन्तु से ह्रस्व उच्चारण हिनका सभक हेतु दुरूह भऽ जाइत छनि । हँसि, गरदनि, आदिमे आदि ह्रस्व ओ दीर्घक मध्य राखि बजैत छथि अथवा इकारकेँ दुनू व्यंजनक मध्यमे लऽ अनैत छथि । सकैत, कहैत, छिऐक आदि शब्दमे जे ऐकार अछि तकरा ऐकार ओ एकारक मध्य लऽ अनैत छथि, विवृत आ इषद् विवृतक अन्तरकेँ स्पष्ट करब परम कठिन होइत छनि तेँ पूर्णतः प्राभ्यास कयलो उत्तर जहाँ कैमराक सोझाँ उपस्थित होइत छथि कि संस्कार मन्द भऽ जाइत छनि ।

सिने-संसारक एक विशिष्ट ओ ख्यातनामा कलाकार एहि कठिन श्रमक कारणेँ जखन अपनाकेँ एहि कार्यसँ मुक्त कऽ लेलनि तखन एकर मनोवैज्ञानिक प्रभाव अन्य कलाकार सभपर प्रचण्ड रूपेँ पड़लनि, किन्तु एतेक कठिनता होइतो अस्सी प्रतिशतसँ पंचानवे प्रतिशत पर्यन्त मैथिलीक ध्वनि शुद्ध उच्चरित भऽ रहल अछि । ई एहिठामक कलाकार सभक धारणा-शक्तिक वैशिष्ट्य थिकनि । ई अनुभव भेल अछि जे यदि संवाद लिखि अभ्यास करबाक हेतु पहिने दऽ देल जाइत छनि तँ ओ विकृत ध्वनिक अभ्यास कऽ लैत छथि, तखन ओकर परिमार्जन अत्यन्त कठिन भऽ जाइत अछि । तेँ आब एहिना कयल जाइछ जे स्टूडियो अयलापर हुनका संवाद देल जाइत छनि आ सोझाँमे मैथिली ध्वनिक अनुसार उच्चारण सिखाओल जाइत छनि । एहि प्रक्रियासँ काज अपेक्षाकृत सुलभ भऽ रहल अछि ।

आब प्रश्न उठैत अछि जे यदि मैथिलीमे अधिकसँ अधिक फिल्म बनय, ई इच्छा अछियो तँ एकर विकास मैथिली भाषी क्षेत्राक कलाकारकेँ लऽ कऽ कयल जाय, मुदा की से सम्प्रति संभव अछि ? हमरा जनैत एहि हेतु समय अपेक्षित अछि आ धैर्यक आवश्यकता सेहो । कारण नाटकक मंचपर सफल कलाकार सोझे कैमरा सोझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेलासँ सफल अभिनय नहि कऽ सकैत छथि । जेना धुरझाड़ साइकिल हकनिहार रिक्साक हैण्डिलक सन्तुलन नहि राखि सकैत छथि, हुनका एहि हेतु सन्तुलनक अभ्यास करऽ पड़तनि, तहिना नाटकक मंच परक कलाकारकेँ कैमराक सोझाँमे सन्तुलन बनयबाक अभ्यास करऽ पड़तनि । एहि क्षेत्रमे पूजी लगौनिहारकेँ जहिना बनबाक संभावना रहैत छनि तहिना बुड़बाक, तेँ ओ सतत शंकालु रहैत छथि। दस पाँच वा हजार दू हजारक पूजी तँ रहैत नहि छैक जे घाटा लगलोपर मोन मसोसिकऽ रहि जायत । एहिमे तँ लाख की राख यैह दूटा प्रश्न । अतः चेष्टा ई होयबाक चाही जे एकाएकी एहि संसारमे किछु गोटेकेँ छोटो मोट अवसर देल जाइत

रहनि । एवं क्रमेँ जखन दस पाँच कलाकार क्षेत्रमे औताह तखन जाकऽ एहि दिशामे प्रगति भऽ सकत । पटकथा लिखनाइसँ लऽकऽ कैमराक ऐंगिल पर्यन्तक ज्ञान जखन मैथिलीभाषी क्षेत्रक कलाकारमे आबि जयतनि तखने एहि दिशामे पूर्ण सफलताक आशा कयल जा सकैछ ।

दोसर बात ई अछि जे चारूकातसँ ई ध्वनि बहराइछ जे मैथिली फिल्ममे मिथिलाक संस्कृतिक रक्षा हो । 'नैहर भेल मोर सासुर' फिल्मक शूटिंग जखन शुरू भेल तँ पटनाक एकटा हिन्दीक दैनिक एही हेतु आक्रोश व्यक्त कयने छल । एहि हेतु संस्कृतिक स्वरूपक विस्तृत भाष्य अपेक्षित अछि । संस्कृतिक रक्षामे जे संलग्न छथि से सिनेमा देखऽ नहि अबैत छथि । ई दोसर बात जे मातृभाषाक प्रति असीम अनुराग रहलाक कारणेँ एक अथवा दूटा फिल्म ओहोलोकनि आबिकऽ देखि लेथि, किन्तु एहिसँ मैथिली फिल्मक विकास संभव नहि छैक । संस्कृति ओ सभ्यताक हितचिन्तकक रुचिसँ जनसाधारणक रुचि मिलैत नहि छैक आ फिल्ममे पहिल दृष्टिकोण व्यवसायात्मक रहैत छैक । यदि एकरा व्यवसाय नहि मानि, किछु आन मानल जाय तँ तखन फिल्म बनयबासँ नीक थिक जे मैथिलीक कल्याणार्थ किछु अनुष्ठानी लोकनिकेँ कामाख्या, विन्ध्याचल, वैद्यनाथ आदि सिद्ध पीठसभमे अनुष्ठानपर बैसाय देल जाइनि । ई क्षेत्र व्यवसायकेँ उद्देश्य मानि विकसित कयल जा सकैत अछि आ जखने व्यवसायसँ एकर ई अच्छेद्य सम्बन्ध बुझबाक योग्य होयत कि तखने जनरुचि दिस ताकऽ पड़त । पंचानवे प्रतिशत लोक मनोरंजनार्थ सिनेमा देखैत अछि । पाँचकेँ हम अपवादमे राखि लेलहुँ अछि । मनोरंजनक हेतु यथार्थमे थोड़ेक तेल मसाला मिलयबाक प्रयोजन होइत छैक, तकर उपेक्षाकऽ सिनेमाक माध्यमसँ उपदेश किवा आदर्शक पाठ मात्र उद्देश्य राखल गेलासँ एहि दिशामे विकासक आशा छोड़ि देबाक चाही ।

एहि कथनसँ हमर आशय ई कथमपि नहि अछि जे संस्कृतिक रक्षा अथवा आदर्शक स्थापना सिनेमाक माध्यमसँ नहि हो । हो अवश्य, किन्तु यथार्थताक परिसरसँ बाहर जाकऽ नहि, अपितु यथार्थकेँ तेना मनोरंजक बनाओल जाय जाहिमे आदर्शक पुट आबि जाइक । उदाहरणार्थ हम कन्यादाने फिल्मकेँ लैत छी । लाल-ककाक हेतु खुटिया मिर्जइ, चमरउ जुत्ता,पाग आ दोपटा वेषमे राखल गेल अछि । की आब चमरउ जुत्ता पहिरनिहार पाँचो प्रतिशत लोक अछि ? यदि मिथिलाक हेतु सवारीमे एक्केटा राखल जाय तँ की से यथार्थ कहल जायत ? लालकाकी, ढुनमुनकाकी उघाड़े आङे रहथि ? स्त्रीगण खाली लहठीए पहिरैत अछि ? सूति, बाजूबन, झुम्मक, बड़हरी आदि आभूषण आबो लोक ओहिना पहिरैत अछि, जेना पहिने पहिरैत छल ? एहिसँ तँ कृत्रिमताक बोध होइछ, यथार्थताक नहि । एहीसँ संस्कृतिक रक्षा नहि भऽ सकैत अछि । किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे बेसी अङरेजी पढ़ल लिखल लोक सिकरेट पिबैत

छथि, शहरक कोन कथा, देहातोमे रहनिहार बहुतो गोटे अंडा खाय लगलाह अछि, तँ हम तकरा पर्दा पर लऽ आनी । एहिसँ संस्कृतिपर अवश्य आघात लागत । एहन कचारकेँ प्रश्रय देलासँ अवश्य समाज पतनोन्मुख होयत, किन्तु कुर्त्ता धोतीकेँ नुकौलासँ संस्कृति बाँचत, हम ताहि पक्षमे नहि छी ।

एहि सभ दृष्टिएँ नीक जकाँ सोचऽ विचारऽ पड़त, अपना क्षेत्रमे अभिनेत्री नहि छथि, ताहू दिस समाजकेँ साहस करऽ पड़तै । ई नहि बूझक चाही जे अभिनेत्री जे होइत अछि से सभ नट्टिने होइत अछि । ओना जे नट्टिन अछि से ड्यौढ़ी टाटक भितरो अछिए । जखन एहि प्रकारेँ एहि क्षेत्रक हेतु अपन समाजमे लोक प्रस्तुत होयत तखन फिल्मक विकास अवश्य होयत आ फिल्मक माध्यमसँ अपन मातृभाषाक प्रति जे जनजागरण आबि सकैछ से आजुक युगमे दोसर रूपेँ नहि । अतः आवश्यक ई अछि जे मिथिलामे फिल्मी पाठशाला हो, नहि कि फिल्मिस्तानमे मैथिली पाठशाला स्थापित कयने ई काज भऽ सकत ।

एभरग्रीन होटल
रूम नं० १८, खार, बम्बई पश्चिम

आ अंत मे
झाड़खण्डी नाथक भूमिकामे ब्रजकिशोर





भजन-वजन करते हो क्या ?

जन्म – २ मई १९२५ ई०

जन्मस्थान – खोजपुर (मधुबनी)

प्रकाशन–

कविता संग्रह – गुदगुदी, युगचक्र, ऋतुप्रिया, आशादिशा, उनटापाल, विविधगीत, ठाँहिपठाँहि, अमरसंगीत

उपन्यास – वीरकन्या, विदागरी

विनिबंध – म.म. मुरलीधरझा, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', दीनानाथपाठक 'बन्धु'

समीक्षा-इतिहास– मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास, मैथिल महासभाक इतिहास

कथा – जल-समाधि, परशुरामक बीछल वेरायल कथा (अनु.)

एकांकी – समाधान, त्रिफला

संकलन – मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति, विजय-शंख, स्वातंत्र्य-स्वर, कथा-किसलय, लोचन, विद्यापति नीति-तरंगिणी

अनुवाद – हरिनारायण आप्टे, वंकिमचन्द्र, विद्यापति सूक्ति-सतरंगिणी

सम्पादन – सुमन साहित्य सौरभ, ललित नारायण मिश्र स्मृतिग्रन्थ

पत्र-पत्रिका – वैदेही, निर्माण, दैनिक स्वदेश आदि

